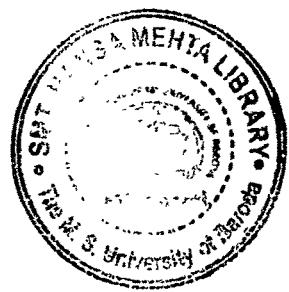


Part-3



# तृतीयो विभागः



वृद्धवसिष्ठसंहिता  
तृतीयो विभागः

| ३.१.० प्रथमं परिशिष्टम् - श्लोकसूचि: |         |          |                            |         |          |
|--------------------------------------|---------|----------|----------------------------|---------|----------|
| श्लोकानुक्रमणिका                     | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं |
| अ                                    |         |          | अग्निनक्षत्रगे सूर्ये      | ३९      | २८       |
| अकस्माच्छेषिते वृक्षे                | ४५      | ६०       | अग्निपरिग्रहसाहस           | १४      | ४        |
| अकारादिषु वर्गेषु                    | ३९      | ४३       | अग्निर्मूर्द्धेतिमन्त्रेण  | १८      | ५०       |
| अकालगर्जितं दोषं                     | ४३      | १३६      | अग्निसंस्थापनं कृत्वा      | ४५      | ६४       |
| अकालगर्जितो दोषः                     | ४३      | ६४       | अग्निः सुवर्णः सप्तार्चिः  | १८      | ८५       |
| अकालवृष्टिः कुमुहूर्तदोषो            | ३२      | २३       | अग्ने विवस्वदुषस           | १८      | ५४       |
| अकालवृष्टिः प्रभवः                   | ३२      | ८८       | अग्रगाः पृष्ठगा वापि       | ७       | १५       |
| अकालवृष्टिं दोषं                     | ४३      | १३७      | अर्चयेद्वन्धपुष्पस्त्रग्   | ४५      | ६२       |
| अकालवृष्टिजो दोषः                    | ४३      | ६३       | अर्चाः प्रनृत्यन्ति पतन्ति | ४५      | ३०       |
| अकालवृष्टिनीहार                      | ४२      | ९९       | अर्चास्त्वभिमुखं यान्ति    | ३७      | ४७       |
| अकालवृष्टिप्रभवः                     | ३२      | ८९       | अचिकित्सगदायोगः            | ४३      | १२       |
| अकृत्वा नास्तिको लोभाद्              | ४५      | ९८       | अचिकित्सा गदा योगा         | ४२      | १२       |
| अर्कः पलाशखदिरा                      | १८      | ९९       | अजकन्यावृष्टकर्किणि        | १९      | २०       |
| अर्कगतागतसंस्थं                      | १४      | १००      | अजचरणादितिपूषा             | १४      | ८६       |
| अर्कबिम्बचरान्तित्यं                 | १९      | ३०       | अजचरणार्क्षे कुर्यात्      | १४      | २६       |
| अर्कवारेऽग्निपञ्चम्योः               | ४२      | ३०       | अजतुलसंक्रान्तिद्वयं       | १९      | १५       |
| अकार्दिवारसम्भूताः                   | ४३      | ३६       | अजपात्पितृवह्निश           | ४२      | ६        |
| अकार्दिवारसम्भूतान्                  | ४३      | १०८      | अजपाद्वितीये याम्य         | ३९      | २९       |
| अकार्निलार्यादितिदस्त्र              | ३८      | ११       | अज्ञातजन्मनां नृणां        | ३२      | १९६      |
| अकारसितसौम्यार्थ                     | ४२      | ९८       | अज्ञातजातकानामपि           | ३७      | २        |
| अकार्नमुक्तः शशी                     | २४      | २        | अत उद्धर्वं प्रतिमासं      | २४      | ३        |
| अक्षमालाधरं चाब्ज                    | ३५      | २१       | अत ऊर्ध्वं चोरभयं          | ४५      | १६०      |
| अक्षसूत्राजपकर                       | ४६      | ५८       | अत ऊर्ध्वं व्याधिभयं       | ४५      | १५४      |
| अग्निजिह्वाहयो योगः                  | ४३      | १४       | अत ऊर्ध्वं व्रजेद्धयो      | ३७      | १४२      |
| अग्निजिह्वद्वयं योगं                 | ४३      | ८७       | अत ऊर्ध्वं सर्पभयम्        | ४५      | १५७      |

| श्लोकानुक्रमणिका         | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं |
|--------------------------|---------|----------|-------------------------------|---------|----------|
| अतिवसुधनभावस्यान्        | २४      | २७       | अधिशत्रुगृहस्थे वा            | २९      | १७       |
| अतीतकार्याण्यखिलानि      | २६      | ३        | अधीत्य वेदांश्च तदर्थं        | ३०      | १        |
| अतुलबलसमृद्धं            | ६       | ५५       | अधोमुखा धूमनिभाः              | २       | १७       |
| अतुलितविभूतिसहिताः       | ६       | ९४       | अर्द्धयामभान्तरालं            | ४३      | १६       |
| अतुलितसस्यसमृद्धा        | ६       | ९२       | अर्द्धादूनं ग्रहणं ग्रसनं     | ९       | १९       |
| अतो देवेति मन्त्रस्य     | ४६      | ८३       | अर्द्धोदयं चास्तमिनस्य        | ३२      | १३७      |
| अतोऽन्त्यपादमादिगो       | ३२      | ७३       | अध्यर्द्धधिष्येऽभ्युदितः      | ३       | १९       |
| अथ नानाविधा नादा         | ४५      | १०१      | अध्येतव्यं ब्राह्मणैरेव       | १       | ७        |
| अथ प्रतिष्ठां कथयामि     | ४०      | १        | अनग्निज्वलनास्फोट             | ४५      | १२७      |
| अथ प्रवेशो नवसद्गनश्च    | ३८      | १        | अनलोपहतेर्मूषककाष्ठादि        | ४४      | ७        |
| अथवा बहुभिर्मासैः        | ४६      | ९२       | अनियतदिग्प्रभवोऽसौ            | १०      | १३       |
| अथवा राजनाशः             | ४५      | १०५      | अनिलहतं सस्यचयं               | ११      | २८       |
| अथवाष्टेत्तरशतं          | ४२      | १५८      | अनिलानलकमलजयम्                | ५       | ९        |
| अथातः संप्रवक्ष्यामि     | ४५      | १        | अनुकूले ग्रहे वाऽपि           | ३९      | ६२       |
| अथातः संप्रवक्ष्यामि     | ४३      | १        | अनुकृतभानां यदि               | ३       | १४       |
| अथार्कचाराज्जगतः         | २       | १        | अनुकृतवारतिथिषु               | १३      | १०       |
| अदितिर्द्यौश्च मन्त्रस्य | ४६      | ३७       | अनुपमविक्रमधरणी               | ६       | ४२       |
| अदितिश्रुतिभात् त्रितयं  | १४      | ३५       | अनृतौ चेद्रोगभयमनृते          | ४५      | ७३       |
| अदितिस्थिरमरुद्          | १४      | १०९      | अनेकदोषदं कुण्डं              | १८      | ३१       |
| अधर्मत्वादसत्याच्च       | ४५      | २        | अनेकरूपवर्णश्च                | १८      | १४५      |
| अधर्मेण जितो धर्मः       | ४३      | २        | अनेन विधिना कुर्याद्          | ३४      | १७       |
| अधिके वृद्धिमाप्नोति     | ३९      | ७        | अनेन विधिना यत्नाद्           | ३६      | २३       |
| अधिमित्रगृहस्थो वा       | ४१      | ३४       | अनेन सुकृतेनैव                | ४२      | १६५      |
| अधिमित्रगृहे स्वाधि      | ३७      | १६१      | अन्तपुरं संप्रविशेन्          | ३३      | ५९       |
| अधिमित्रगृहस्थे ज्ञः     | ३७      | १५९      | अन्त्यातिगण्डपरिघं            | १५      | ६        |
| अधिमित्रस्वराशि          | ४१      | ३७       | अन्त्यांशकश्चेद्विषुभांशकानां | ३२      | ५२       |
| अधिमित्रांशगे सौम्ये     | ३७      | १६०      | अन्तरारिते सौम्ये पापे        | ३७      | १९३      |

| श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------------|---------|----------|-------------------------------|---------|----------|
| अन्धकमथ मन्दाख्यं               | १४      | १०       | अब्देषु युग्मेष्वपि कन्यकानां | ३२      | २        |
| अन्धयोगकृतं दोषं                | ४३      | ७८       | अब्दैर्युगं पञ्चभिरब्दघष्या   | ६       | २७       |
| अन्नपानादिनिखिलभोग              | ३९      | १५४      | अब्लिङ्गैर्वर्णैर्मन्त्रैः    | ४२      | १४२      |
| अन्नभाण्डे चान्नहानिः           | ४५      | १६६      | अब्लिङ्गैर्वेदमन्त्रैश्च      | ३३      | १७       |
| अन्यदिक्षु द्विशालासु           | ३९      | १३४      | अभिगमनं चैशान्यां             | ९       | ५३       |
| अन्यदिक्षु प्रयातृणां           | ३७      | ७८       | अभिजित्संज्ञकं योगं           | ४३      | ५५       |
| अन्ये च पुण्यदिवसे              | ३५      | ९        | अभिजिङ्गोगमेतद्               | १४      | १०१      |
| अन्योन्यरत्यातिशयाद्            | ६       | ३१       | अभिजिनक्षत्रभवः               | १०      | ५०       |
| अन्योन्यराश्यंशगतौ              | ३१      | ७        | अभिषेकविधिं चोक्त्वा          | ३३      | २८       |
| अन्योऽन्यशात्रवे त्याज्य        | ३२      | १८८      | अभिषेको नृपतीनां              | २३      | १        |
| अन्योऽन्यं शात्रवं यत्र         | ३२      | १९३      | अभिषेकं ततः कुर्युः           | १८      | १३५      |
| अपमृत्युमपक्षुधाम्              | ४५      | १४४      | अभुक्तमूलव्यतिरिक्त           | ४२      | १२७      |
| अपरा देवता सर्पा                | १८      | ७३       | अभ्यङ्ग्यात्रापितृकर्म        | १२      | १०       |
| अपरेन्द्रदिशो दृश्या            | १०      | ८        | अभ्यङ्गे रविवासरे तनुभृतां    | १३      | ९        |
| अपवादैः शमं यान्ति              | ४३      | १४५      | अभ्यधिकं चन्द्रबलं            | २०      | १२       |
| अपराह्ने सुसम्पूर्णा            | १२      | ७२       | अभ्युदितः पितृधिष्ठये         | ४       | ९        |
| अपामार्गवटप्लक्ष                | ३३      | ४३       | अभ्युदितः श्रवणक्षे           | ४       | ८        |
| अपामार्गज्यचरुभिः               | ४५      | १६२      | अमानुषानि बीजानि              | ४५      | ८७       |
| अपामार्गोरुपालाश                | १८      | ११३      | अमावस्या श्रावणे च            | १२      | ३३       |
| अपि दिव्यं शमं यान्ति           | ४५      | १०       | अमृतकिरणचारं                  | ३       | १        |
| अपूर्वसंज्ञः प्रथमप्रवेशो       | ३८      | ३        | अमृतकिरणस्त्वमृत              | २०      | ९        |
| अब्दाधिपे दिनपतौ                | ११      | ११       | अमृतमयत्वान्त्वा              | ९       | २        |
| अब्दास्तु त्रिविधा जीव          | ४२      | ९१       | अम्बरकोणेष्वमरा               | ४४      | ८        |
| अब्दे प्रवृत्ते प्रभवेऽग्निकोपः | ६       | २९       | अयनादौ ऋतुसमये                | २०      | २        |
| अब्दे प्लवङ्गे प्रमदाजनास्तु    | ६       | ६९       | अयमपि पातो दोषेश्             | २१      | ६        |
| अब्दे विधातुः सकला              | ६       | ३८       | अयमर्थमनुकृतत्वाच्            | ३७      | ९८       |

| श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| अयुग्मराश्यंशगते          | ३१      | ८        | अश्वारूढः कुन्तपाणिं      | ३७      | १३२      |
| अयं गुणो दोषममुं          | ३२      | १०८      | अश्वालये गजगृहे           | ४५      | १७५      |
| अर्यमक्षें भवेद्वाधिर     | ४६      | ५१       | अश्विनीभरणीमूल            | ४२      | ४३       |
| अर्यमादितिपौष्णार्क       | ४२      | ६१       | अश्विनीभरणीवहि            | ४२      | ५८       |
| अर्यमायानिमन्त्रस्य       | ४६      | ५२       | अश्विनी रोहिणी चैत्रे     | ४२      | ७४       |
| अर्यमारोहिणीत्वाष्ट्र     | ४२      | ४४       | अश्विनौ दक्षिणे तस्य      | १८      | ८२       |
| अर्यमा सविता चैव          | ३९      | २१४      | अश्विन्याद्यास्ताराः      | ३२      | २२२      |
| अर्यमण्स्त्वर्कवारे       | १७      | ९        | अश्विन्यामुत्थितो व्याधिः | ४६      | १७       |
| अर्यम्णो भानुवारे         | ३२      | ९२       | अश्वियमवहिधातृसुधाकर      | १७      | ३        |
| अलङ्कृत्य पुनः सम्यग्     | ३५      | ४२       | अश्वियुजेऽब्दे वृष्टिर्   | ६       | १३       |
| अल्पाधिकं चतुरस्त्रं      | ३९      | १४       | अश्विसार्पभयोराद्यं       | ४२      | ५१       |
| अवनतिविक्षेपवशाद्         | ९       | ४        | असावेव प्रभुस्तेषां       | ३५      | ६        |
| अवमाख्या तिथिर्हन्ति      | ४३      | ५७       | अष्टमगौ शशिभौमो           | ३२      | १६०      |
| अवमाख्यातिथेदर्देषं       | ४३      | १३०      | अष्टमस्त्वभिजित्राम       | ३७      | ७७       |
| अवर्गोच्चारिते प्रश्ने    | ३९      | ८३       | अष्टमी नवमी चैत्रे        | ४२      | ७८       |
| अवशिष्टद्विजेभ्यश्च       | १८      | १७१      | अष्टलग्नाधिपे यत्र        | ३७      | ६४       |
| अवाप्य वन्ध्याः           | ३२      | १०६      | अष्टवर्गबलं यत्र          | १८      | १७८      |
| अवृष्टिचौराहवरोगवहि       | ६       | ७०       | अष्टादशे सप्तदशे          | ४       | ६        |
| अशनिर्नामियोगो यः         | ४३      | २३       | अष्टाब्जनक्षः पितृपञ्चक   | १४      | ६५       |
| अशुभयुतेदावशुभग्रहवर्गिते | २३      | ३९       | अष्टोत्तरसहस्रं वा        | ४५      | ४१       |
| अशुभेक्षितः कष्टफलः       | १८      | १०       | अष्टोत्तरसहस्रं वा        | ४२      | १५४      |
| अशोकबन्धूकमणिप्रवाल       | ४       | १५       | अष्टौ पितृगणाधीशा         | ३९      | २०२      |
| अशोषिते प्रवाहादौ         | ४५      | ८२       | असितचतुर्दश्यन्ते         | ३       | २        |
| अश्वभमेषभुजगद्वय          | ३२      | १८१      | असौम्यसौम्या हिमदीधितिश्च | ४०      | १४       |
| अश्वमुखतारकाणां           | १४      | ९९       | अस्मिन्योगद्वये यत्तत्    | ४२      | १०       |
| अश्वमुखसमान्हृ१९११यं      | १४      | ९५       | अस्य मन्त्रस्य बृहती      | ४२      | १७३      |
| अश्वारूढः कुन्तपाणिः      | १८      | ९५       | अस्याधिदेवता चित्र        | १८      | ७६       |

| श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------|---------|----------|----------------------------|---------|----------|
| अस्याधिदेवता ब्रह्म       | १८      | ५९       | आदित्यभूमिपुत्रादैः        | ३२      | ४०       |
| अस्याधिदेवता ब्रह्मा      | १८      | ७७       | आदित्यभौमार्किदिनेषु       | १३      | ११       |
| अस्याधिदेवता शक्रस्       | १८      | ६३       | आदित्याद्यग्रहाणां च       | १८      | ३६       |
| अस्याधिदेवतास्त्वाप       | १८      | ४८       | आदो मध्यविकासः             | ९       | ६०       |
| अस्यामणि द्वित्रिचतुः     | ३९      | १६२      | आदौ तु समिधाज्यानैः        | १८      | १२६      |
| अहिर्बुधन्येक्षभवः        | १०      | ४९       | आद्यन्तदर्शयोर्मध्ये       | २       | ६        |
| अहिवासवपोष्णानाम्         | ३२      | ६५       | आद्यपादे पितृगण्डे         | ४२      | १६१      |
| आ                         |         |          |                            |         |          |
| आकृष्णेतिमन्त्रेण         | १८      | ४०       | आधानतो जन्मतो वा           | २८      | २        |
| आक्रन्दं विपुलं चैव       | ३९      | ९९       | आधानपुंसवनमष्टममङ्गलं      | १       | ११       |
| आखण्डलचापनिभो             | २       | १९       | आधानलग्ने विषमांशराशौ      | २४      | ४३       |
| आगतगतसमयेऽपि              | १९      | १८       | आधाने निधने प्रत्यग्       | ४६      | ११३      |
| आग्नेयभागे सरथो           | १८      | ४५       | आनन्दः कालदण्डो            | २१      | ८        |
| आग्नेय्यामर्चयेदग्नि      | १८      | ८६       | आनन्ददः स्थावरजङ्गमानाम्   | ६       | ७६       |
| आचार्याय ततो दद्याद्      | ३४      | २०       | आनन्ददा सुन्दरनन्दनाव्दे   | ६       | ५४       |
| आचार्याय वृषं दद्यात्     | ४२      | १६६      | आनन्ददाः पञ्चमगाश्च सौम्या | ४०      | १५       |
| आचार्यायैव तां दद्यात्    | ४५      | १५०      | आपवत्सोऽथ सविता            | ३९      | २०५      |
| आचार्येभ्यो नवःयश्च       | १८      | १५२      | आपवत्सोऽष्टमः              | ३९      | २१५      |
| आचार्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो | ४२      | १६७      | आपः सावित्रिविजय           | ३९      | २०४      |
| आचार्यो जुहुयाद्वीहिं     | ३४      | १६       | आप्यायस्येतिमन्त्रेण       | १८      | ४६       |
| आज्यदीपं च सर्वेषां       | ४६      | २२       | आब्लिङ्गैर्वारिमन्त्रैश्च  | ४५      | १४६      |
| आज्यभाण्डेऽन्न            | ४५      | १७०      | आभ्यः परस्ताद्विषनाडिका    | ३२      | ८०       |
| आज्यान्नार्कसमिद्धिश्च    | ४५      | १६५      | आमन्य नवभिर्मनैः           | ३६      | ९        |
| आदाय चतुरः कुम्भान्       | ४२      | १६३      | आमन्त्रणे लोखकोक्तास्      | ३६      | २२       |

| श्लोकानुक्रमणिका                 | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| आमयभयदा: सततं                    | १०      | १६       | आश्लेषामुत्थितो व्याधिः      | ४६      | ४२       |
| आयन्तुनस्त्वितीवास्य             | ४६      | ४६       | आश्लेषाभ्याः स्वाहा          | ४२      | १७१      |
| आया ध्वजाद्याः क्रमशो            | ३२      | २१५      | आश्लेषाद्रा त्रिपूर्वायमवरुण | ४६      | ११४      |
| आयुधानि च पट्टं च                | ३३      | १९       | आषाढ्डुयवहीज्यद्वैपितृ       | ४२      | ४१       |
| आयुरारोग्यविपुला                 | ३९      | १५२      | आषाढ्मासद्वितये              | ५       | १६       |
| आलस्योपहतः पादः                  | ४३      | ७२       | आषाढ्मासादिचतुष्टये च        | ४०      | ३        |
| आद्रादिकस्वातीविरामकाले          | ३२      | ११       | आषाढ्मासे ग्रहणं             | ९       | ४७       |
| आद्रादितिज्याहिमघासु             | ५       | ३        | आषाढेऽब्दे प्रचुरं           | ६       | १०       |
| आद्राप्रवेशऽहि जगद्विप           | २       | १०       | आर्षोद्वाहस्तथाऽदाय          | ३२      | १७३      |
| आद्रायामुत्थितो व्याधिः          | ४६      | ३३       | आसुतनिधनाङ्गन्त्य            | १८      | ७        |
| आद्राश्च सत्त्वनिबिडः            | १८      | १००      |                              |         |          |
| आद्रोदयादूर्ध्वमिनस्य            | ३२      | १०       | इ                            |         |          |
| आर्याधिपतिं सार्पे               | १०      | ४४       | इक्षुविकारं त्वखिलं          | ११      | ३३       |
| आरक्तवर्णं कुम्भं च              | ४६      | ७        | इक्ष्वाकुवंशनाशं             | १०      | ४६       |
| आरभ्य निर्गमाद्याया              | ३७      | १४१      | इज्योत्तरात्रयाहीन्दु        | ३९      | ३२       |
| आरभ्याऽनिलकुभश्                  | ९       | ५७       | इतरेषां ग्रहाणां च           | ३७      | १११      |
| आरभ्यैकादशीं तत्र                | १२      | ६४       | इति प्रार्थ्यं प्रयत्नेन     | ३७      | १०८      |
| आराकीकर्पिहेतुभिः                | १४      | १०२      | इत्येकशालाभेदानि             | ३९      | १२८      |
| आरोग्यसौभाग्यवतीं च              | २४      | ३४       | इदं बलद्वयं चिन्त्यं         | १८      | १७६      |
| आरोहके विद्यमाने न               | ४५      | ९९       | इन्द्रदण्डो महायोगो          | ४३      | १२६      |
| आलिन्दभदैरेताः स्युः             | ३९      | ९४       | इन्द्रदण्डं महायोगं          | ४३      | ५३       |
| आवन्तिककावेरीनार्मदतीर           | ९       | ३४       | इन्द्रदण्डं महायोगं          | ४३      | ५४       |
| आवन्तिकमग्रजानां                 | ३९      | १७७      | इन्द्रद्वारागलस्त्वन्द्र     | ४५      | ११७      |
| आवृत्तिभिर्भौस्त्रिभिरश्चिभाद्यं | ३२      | २०२      | इन्द्रप्रियो दण्डधरो         | १८      | ८७       |
| आवृत्यारोहणवच्चक्राकारेण         | ९       | २२       | इन्द्रयोगो निहन्त्याशु       | ४३      | १११      |
| आशिषो वाचनं कुर्यात्             | ३५      | १६       | इन्द्रव इति मन्त्रस्य        | ४६      | ७१       |
| आश्चिनभाद्वादशधिष्या             | ७       | ४        | इन्द्रवेशम् यथा सर्वं        | ३९      | १५९      |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| इन्द्रशरासनरूपः स्थूलनिभो  | १०      | ७        | उच्चगे लग्नसंस्थेषु       | ३७      | १६३      |
| इन्द्रश्वैरावतोरुदो        | १८      | ८३       | उच्चलिताऽध्वनिरनिशं       | ११      | २३       |
| इन्द्रयेन्द्रो मरुत्वष्टस् | १८      | ६०       | उच्चस्थे लाभगे शुक्रे     | ३७      | १७८      |
| इन्द्रा १४ स्तु काष्ठा १०  | ३२      | ७९       | उच्चस्थो लाभगः सूर्यः     | ४१      | ३३       |
| इन्द्रो विधाता मित्राख्य   | १६      | ३        | उच्चस्थितः स्वोच्चनवांशगो | ३२      | ११८      |
| इन्द्रौ स्वक्षेत्रगे लाभे  | ३७      | २२७      | उच्चादेवागते तस्मिन्      | ३९      | ७७       |
| इमं मे वरुण इत्यस्य        | ४६      | ८९       | उच्चैः सूर्योदयास्तौ च    | ४५      | १३४      |
| इष्टाः पञ्च ग्रहा यस्य     | २९      | ४६       | उच्छ्रयपतनानि नृणां       | १८      | २०       |
| इष्टोदयांशे निजपत्यदृष्टे  | ३२      | ९६       | उर्जेऽपि मासे ग्रहणं      | ९       | ३९       |
|                            |         |          | उर्जे शुक्लचतुर्थ्यां यो  | १२      | ६३       |
| ई                          |         |          | उत्तमे राशिकूटेऽपि        | ३२      | १९०      |
| ईतिभयं चोरभयं              | ६       | ७९       | उत्तरभागे शिखिनो          | १०      | १२       |
| ईशानादिषु कोणेषु           | ४२      | १३९      | उत्तरमार्गे विचरति राहौ   | ९       | ५५       |
| ईशान्यमथवा प्राच्याम्      | ४२      | १३१      | उत्तरात्रयचित्राख्य       | ४२      | ५६       |
| ईशान्यामथवा प्राच्याम्     | ४६      | ४        | उत्तरात्रयपौष्णेऽन्य      | ४१      | ११       |
| ईशान्यां वेदिका कार्या     | ४५      | १८       | उत्तरात्रयमैत्रेज्य       | ४१      | १३       |
| ईषे च शुक्ला नवमी          | १२      | ३२       | उत्तराफाल्गुनीपौष्णभे     | ४२      | ४६       |
|                            |         |          | उत्पद्यते क्षितौ यच्च     | ४५      | ६        |
| उ                          |         |          | उत्पातदिनं संत्याज्यं     | ४२      | ८८       |
| उक्तप्रावरणं वेशम्         | ४५      | १४५      | उत्पातभं ग्रहणभं          | ३२      | ९९       |
| उक्तसमिदभावे तु            | १८      | १२२      | उत्पातभोपल्वभोग्रखेट      | ३२      | ९८       |
| उक्तं निरूपणं सम्यग्       | ४१      | ५२       | उत्पातभोल्कामहदाख्यदोषाः  | ३२      | २४       |
| उक्ताखिलं दोषनिरूपणं       | ३२      | १११      | उत्पातयोगजं दोषं          | ४३      | ७६       |
| उक्ता द्विशालाभेदानि       | ३९      | १४०      | उत्पातरूपो जगतां          | १८      | १४०      |
| उक्तेऽपि वर्षे न गुरुर्बली | २९      | ७        | उत्पातश्वैर्व शान्तिश्च   | ४५      | २९       |
| उक्त्वा साधारणां यात्रां   | ३७      | १४९      | उत्पातानामथोक्तानां       | ४५      | ५०       |
| उग्रं च पुण्यं परतश्च      | ११      | ४०       | उत्साहपुण्यपापानि         | ११      | ४३       |

| श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|--------------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| उत्सृजेद्वृषभं तत्र            | १२      | ६७       | उपचयभे लग्नगते            | २३      | ४०       |
| उदगयने पूर्णन्तौ               | २३      | २८       | उपचयवस्तुग्रहणं           | १४      | १७       |
| उदगयने शशितनये                 | २३      | ३४       | उपचाराणि कार्याणि         | ३७      | १०३      |
| उदगयनेऽर्कग्रहणं               | ९       | १४       | उपचाराणि सर्वेषाम्        | १८      | १२०      |
| उदग्दारविहीनं तच्              | ३९      | १२५      | उपनयनं करपीडनम्           | १४      | १३       |
| उदग्वीथिषु दैत्येज्य           | ७       | ९        | उपनयनं चौलबिधिं           | १४      | २४       |
| उदङ्गुमुखा त्रिशाला सा         | ३९      | १४१      | उपनीतो यतः श्रीमान्       | २९      | ३३       |
| उदङ्गुमुखो मागधजो              | १८      | ५३       | उपप्लवभवो दोषो            | ४३      | १९       |
| उदयास्तमयसमये                  | १०      | ३५       | उपप्लवर्क्षजो दोषश्       | ४३      | ९२       |
| उदयास्तमये त्वेवं              | १०      | ६        | उपप्लवे वैधृतिपातयोश्च    | २४      | ४१       |
| उदयांशः स्वनाथेन               | ३२      | ९७       | उपैत्यस्तमवाप्यार्कं      | १२      | ४०       |
| उदुम्बरप्लक्षनिम्ब             | ३९      | १८४      | उभौ पराजितौ ज्ञेयौ        | ३७      | ५९       |
| उदुम्बरवटाश्वथ                 | १८      | १०५      | उमा तु देवता तत्र         | ४६      | १०४      |
| उदुम्बरसमिद्धिश्च              | ३३      | २६       | उलूखले कुशले च द्वारदेशे  | ४५      | १६८      |
| उदेति धिष्येन सुरेन्द्रमन्त्री | ६       | २        | उल्कायोगं निहन्त्याशु     | ४३      | ११८      |
| उद्धतरिपुमदभञ्जनसाहस           | १४      | १०       | उल्कायोगो निहन्त्याशु     | ४३      | ४५       |
| उद्भूताखिलधरणीछाया             | ९       | ६        | उष्ट्रमहिष्यो वेत्यादि    | ४५      | ९०       |
| उद्भासयेत्ततो वह्निं           | १८      | १७४      | उष्ट्राणां मन्दिरं कार्यं | ३९      | १८१      |
| उद्भाहयज्ञोपनयप्रतिष्ठा        | ११      | ७        |                           |         |          |
| उद्भाहश्चैकजन्यानां            | ३२      | २३५      | ऊ                         |         |          |
| उद्भाहादिषु सर्वेषु            | ४२      | ७        | ऊर्ध्वङ्गच्छेन्तथा वापि   | ४५      | १८५      |
| उद्भाहे व्रतबन्धे च            | ३७      | ११७      |                           |         |          |
| उपकुलभेषु च याता               | १४      | ८७       | ऋ                         |         |          |
| उपग्रहमहादोषा                  | ४२      | ९५       | ऋक्षान्ते पुत्रनाशः       | ४२      | १७       |
| उपग्रहक्ष कुरुबाहिकेषु         | ३२      | २९       | ऋक्षेषु साधारणदारूण       | २५      | ६        |
| उपग्रहाह्वयं दोषं              | ४३      | ११०      | ऋग्यजुःसामवेदांश्च        | ४२      | १५२      |
| उपग्रहोलत्तभयातितर्क्षे        | ३२      | २५       | ऋग्यजुःसामशाखेशा          | २९      | ४        |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|----------------------------|---------|----------|
| ऋग्वेदादिचतुर्वेदान्       | ३४      | ११       | एकाशीतिपदं कार्यं          | ३९      | १९७      |
| ऋचौ द्वे त्रिष्टुभौ ज्ञेयो | ४२      | १४८      | एकाशीतिपदं कुर्यात्        | ३९      | २२       |
| ऋजुवक्रगतिं कुरुते         | १०      | ३१       | एको ग्रहेन्द्रः परभागवर्ती | ३८      | २१       |
| ऋतो वसन्ते खलु कुंकुमाभः   | २       | २३       | एकोत्तरशतभेदा              | १०      | २        |
| ऋत्विजो वरयेत्पश्चात्      | १८      | ३४       | एकोदरप्रसूतानाम्           | ३२      | २३४      |
| ऋषिब्रह्मजं पितृजं         | ४५      | ३३       | एकोऽपि केन्द्रगः सौम्यः    | २९      | ७३       |
| ऋषिर्हिरण्यस्तूपाख्यस्तत्र | ४६      | ६७       | एकोऽपि चक्रगः खेटो         | ३७      | ३६       |
|                            |         |          | एकोऽपि जीवो बलवान्         | ४०      | २०       |
| ए                          |         |          | एकोऽपि लग्नोपगतश्च         | ३१      | २        |
| एकनन्ये तु कन्ये द्वे      | ३२      | २३८      | एकोऽपि सौम्यखचरः           | २९      | ७७       |
| एकद्वित्रिचतुःपञ्च         | ३९      | ९३       | एतत्सर्वं सार्पभेऽपि       | ४२      | १७०      |
| एकरात्रं त्रिरात्रं वा     | ४५      | ५४       | एतानि जाधन्यसमाधि          | ३       | २१       |
| एकरात्रं त्रिरात्रं वा     | ३५      | ३९       | एते गृहाङ्गणे वृक्षाः      | ३९      | १९३      |
| एकर्ष्णैऽपृथक्विष्णये      | ३२      | १९४      | एते दोषाश्च चत्वारे        | ४३      | ९३       |
| एकशाला यदा नूनं            | ३९      | १२२      | एवमादिविकारा ये            | ४५      | ९५       |
| एकस्मिन् कूटगे दोषे        | २९      | ७१       | एवमादीनि कूपेषु            | ४५      | ८३       |
| एकस्मिन्नैव मित्रक्षें     | ३७      | २२९      | एवमाद्या विकारास्ते        | ४५      | ३२       |
| एकं पादं त्रयः पादा        | ४३      | ७३       | एवमाद्यैर्गुणैर्दोषैर्     | ४१      | ५        |
| एकं मृगं मृगी सुते         | ४३      | ७१       | एवमुक्तप्रकारेण            | ३७      | १४८      |
| एकादशे द्वादशभे            | ४       | ३        | एवं क्रमेणाभ्युदितः        | ३       | ७        |
| एकाधिपत्ये त्वथ            | ३२      | १८६      | एवं तत्समयं वीक्ष्य        | २९      | ४२       |
| एकाधिपे मित्रभावे          | ३२      | १८७      | एवं पञ्चार्कदोषाः          | ४२      | ६५       |
| एकान्तरगते लग्नाच्         | ३७      | १९१      | एवं परीक्षितं क्षेत्रं     | ३९      | ९        |
| एकान्तरा हि तिथयो          | १२      | २५       | एवं प्राच्यां नव ज्ञात्वा  | ३९      | २०१      |
| एकार्गलहतं धिष्ण्यं        | ३७      | ८१       | एवं यः कुरुते भक्त्या      | ४५      | ५३       |
| एकार्गलं महादोषं           | ४३      | १२७      | एवं यः कुरुते शान्तिं      | ४५      | ६७       |
| एकार्गलोपग्रह              | ३२      | १२९      | एवं यः कुरुते सम्यक्       | ४५      | ४३       |

| श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------|---------|----------|-------------------------------|---------|----------|
| एवं यः कुरुते सम्यक्        | ४५      | १५२      | ओ                             |         |          |
| एवं यः कुरुते सम्यक्        | ३७      | ११०      | ओजक्षांशो लग्नगे वीर्ययुक्ते  | २४      | ४५       |
| एवं यः कुरुते सम्यक्        | ३५      | ४६       | ओजांशकक्षांद्विषमक्षसंस्थः    | २४      | ४६       |
| एवं यः कुरुते सम्यक्        | १८      | १७५      |                               |         |          |
| एवं यः कुरुते सम्यक्        | ३४      | २२       | औ                             |         |          |
| एवं यः कुरुते सम्यक्        | ३९      | २२१      | औशीनरमुख्यपतीन्सौम्ये         | १०      | ४३       |
| एवं राश्यादिषु दुर्गा       | ४६      | ११२      |                               |         |          |
| एवं लक्षणसम्पूर्णः          | ३३      | ३६       | क                             |         |          |
| एवं शुक्रोऽपि सौम्योऽपि     | ४१      | २७       | कटिस्थाने वस्त्रलाभो          | ४५      | १८१      |
| एवं समाचरेत्रित्यं          | ३३      | ६०       | कर्णिकायां सुसंस्थाप्य        | ४६      | ६        |
| एवं सहस्रभेदाः पापाश्       | १०      | २४       | कर्तरीदूषिते लग्ने            | ३७      | ८५       |
| एषामभावे तु दश              | १८      | ११८      | कर्तुर्विलग्नाच्च हि जन्मराशे | ३८      | १४       |
| एषामास्तीकऋषिस्             | ४२      | १७२      | कर्तुः शिरसि तान्बध्वा        | ३६      | १०       |
| एषां मूलानि सर्वाणि         | १८      | ११७      | कथयामि गोचरबलं                | १८      | १        |
| एषु योगेषु कर्तव्यं         | ४२      | ३२       | कथिततिथिवासरक्षे              | ३७      | ४        |
| एषु योगेषु तत्सर्वं         | ४२      | ४७       | कथितान्यपि लघुवृन्दे          | १४      | ३६       |
|                             |         |          | कदम्बाशनलाभः सतत              | ४४      | ६        |
| ऐ                           |         |          | कदलीस्तम्भसंयुक्त             | ४२      | १३२      |
| ऐन्द्रागन्योर्मथनं मध्ये    | ३९      | १६७      | कदाचिन्नैव सीदन्ति            | ४२      | १०८      |
| ऐन्द्राजपादाब्जजभार्यमाणि   | १४      | ७२       | कदुद्रायेतिमन्त्रेण           | १८      | ९८       |
| ऐन्द्रं दिशि स्नानगेह       | ३९      | १६४      | कनिष्ठं राशिकूटं यद्          | ३२      | १८५      |
| ऐरावतस्थं देवेन्द्रं        | ३७      | १२६      | कन्यागोवाद्यशङ्कुं            | ३७      | ५०       |
| ऐशान्यतो गोमयमण्डले         | २४      | ३८       | कन्यादानं गजारोहं             | १५      | ३८       |
| ऐशान्यामर्चयेदद्वुद्रमण्डलं | ३५      | २९       | कन्यानृयुगोघटचापसंस्थः        | ८       | ५        |
| ऐश्वर्यं पुत्रहनिश्च        | ३९      | १८९      | कन्योक्ताखिलकार्यं            | २३      | ७        |
| ऐश्वर्यं वीरलक्ष्मीं        | ३४      | २३       | कपिलाख्यं महायोगं             | ४३      | २२       |
|                             |         |          | कपिले सर्वदेवानां             | १८      | १५८      |

| श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-------------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| कर्पूरधूपे नैवेद्यं           | ४६      | ७२       | कामभुजङ्गमदिवसौ           | ३२      | २२०      |
| कर्पूरागरुकस्तूर्यः           | १८      | १२१      | कामोपभोगसदनं              | ३९      | १६९      |
| कपोतकङ्गोष्टशृगालकाक          | ४४      | १३       | काम्बोजकान्मागधशूरसेनान्  | ९       | ४८       |
| कम्पं कम्पयति स्थानमुल्का     | ४२      | ९६       | काम्बोजचीनान् यवनान्      | ९       | ५०       |
| कम्पोद्वृत्तनवैकृत्यं         | ४५      | १२९      | कायोद्धाहः पावयेत्षट्     | ३२      | १७१      |
| कयानश्चित्रआभुव               | १८      | ७१       | कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे  | १२      | ६६       |
| करमदनमुपनयनं                  | १४      | १८       | कार्तिके पितृवस्वृक्षे    | ४२      | ७६       |
| करंजैरण्डनिर्गुंडीगृहशालाश्च  | ३९      | १८६      | कार्पासमुद्धाः सतिला      | ९       | ४५       |
| करादिपञ्चस्वदितिद्वयाश्चि     | ३०      | ३        | कार्यस्य नाशो वदने        | १६      | १८       |
| करोति निःस्वं कुमुहूर्तदोषः   | ३२      | ९०       | काल एवेश्वरः साक्षाद्     | ४१      | १        |
| कर्मान्ते तेन मन्त्रेण        | ३७      | १०४      | कालयुगाब्दे सततं          | ६       | ८०       |
| कलत्रहन्ता निधनप्रदश्च        | ३८      | १५       | कालोऽधिदेवता ब्रह्म       | १८      | ७२       |
| कलहरत क्षितिपतयो              | ६       | ९१       | काश्यपेषु वशिष्ठेषु       | ३७      | ९७       |
| कलहो निखिलजनाना               | ६       | ७३       | कीटाजपजाननकर्कटेषु        | ८       | ४        |
| कलिश्च रक्षो भुजगः            | १६      | ४        | कीर्तिप्रदं क्षेमकरं      | ४०      | ८        |
| कलि १४ वसु ८ गणपति ४          | १२      | २२       | कीलकेशास्थिशुद्ध          | ३९      | ८        |
| कल्पनं पोषणं तेषां            | ३५      | २        | कुङ्गमं चन्दनं गन्धं      | ४६      | ९४       |
| कवर्गाच्चरिते प्रश्ने         | ३९      | ८४       | कुङ्गमं पुण्डरीकाख्यं     | ४६      | ६८       |
| कश्चिद्वाश्रमसमो              | ३२      | १        | कुटुम्बकलहः पश्चात्       | ४५      | १६३      |
| कस्तूरिकागन्धफलाक्षतौध        | ३७      | १३८      | कुड्याङ्गे मस्तकाद्यङ्गे  | ४५      | १७७      |
| काकयोर्मैथुनं सर्वं           | ४५      | १३७      | कुञ्जं तु चन्दनेन ज्ञं    | १८      | ३७       |
| काकश्येनादिनिहते              | ४५      | १८८      | कुजाक्योः सप्तमी षष्ठी    | ४२      | ११       |
| काणयोगकृतं दोषं               | ४३      | ७९       | कुञ्जांशकगते चन्द्रे      | २९      | २७       |
| कापोतारुणसदृशः                | ९       | २९       | कुञ्जे लग्नादिकेन्द्रस्थे | २९      | ५०       |
| कामदुर्गान्तकविधिनष्टेन्दुर्क | १२      | २८       | कुण्डस्येशानभागे तु       | १८      | ३२       |
| कामधेनुमहायोगो                | ४३      | १२३      | कुण्डं च तद्वाहिः कार्यं  | ४२      | १३४      |
| कामधेनुं महायोगं              | ४३      | ५०       | कुण्डं तन्मध्यभागे तु     | १८      | २४       |

| श्लोकानुक्रमणिका                 | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------------|---------|----------|---------------------------------|---------|----------|
| कुण्डं पूर्वोक्तविधिना           | ४५      | १३९      | कृष्णाञ्जनसमाकाशं               | ४५      | १३५      |
| कुन्देन्दुशंखस्फटिक              | ६       | १०१      | कृष्णा पञ्चदशी माघे             | १२      | ३६       |
| कुर्यात्पुंसवनं प्रसिद्धविषये    | २५      | १        | कृष्णाष्टमी नभस्ये च आषाढी      | १२      | ३४       |
| कुर्याद्विंशक्षयं तस्य           | १६      | १५       | कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्याममायां | ७       | १३       |
| कुरुते सुभिक्षमतुलं              | १०      | २५       | केतुरूपग्रहदोषस्त्वष्टादशमं     | २१      | २        |
| कुलद्वयानन्दकरी                  | २४      | १६       | केतुसंज्ञो महायोगो              | ४३      | ४१       |
| कुलभेषु च यातास्ते               | १४      | ८८       | केतु कृष्णव्रेनैव               | १८      | ७५       |
| कुलीरकांशं परिहत्य               | २९      | ४३       | केतूनां फलमुक्त्वा वक्ष्ये      | १०      | ४१       |
| कुलीरसंक्रान्तिजवारनाथो          | ११      | ९        | केतोरुदयास्तमयं ज्ञातुं         | १०      | १        |
| कुल्माषांश्च तिलान्साज्यां       | ३७      | १२०      | केतौ लग्नादिकेन्द्रस्थे         | २९      | ५३       |
| कुर्वन्ति नाशं विषनाडिका         | ३२      | ८१       | केन्द्रत्रिकोणगे जीवे           | ३७      | १८१      |
| कुर्वत्युद्धाहितां कन्यां        | ३२      | ८२       | केन्द्रत्रिकोणगैः सौम्यैस्      | ३७      | ८९       |
| कुष्ठी लग्नगते सूर्ये            | २७      | ७        | केन्द्रत्रिकोणत्रिधनाय          | २५      | ८        |
| कूपे कृते मध्यमे तु              | ३९      | १९०      | केन्द्रत्रिकोणधनायसंस्थैः       | ३३      | ८        |
| कूश्वावित्ततो गोधा               | ३७      | १२२      | केन्द्रत्रिकोणधनायसंस्थैः       | ३८      | १६       |
| कृच्छ्रात्स्फुटं प्राणिनि        | १४      | ५१       | केन्द्रद्वित्रिषु सर्वेषु       | ३७      | २०४      |
| कृतमखिलं जन्मनि भे               | २२      | ११       | केन्द्रद्वयेषु सौम्येषु         | ३७      | २०७      |
| कृतसवनसतीनाम्                    | २५      | ४        | केन्द्रद्वितीयैः सौम्येषु       | ३७      | २०३      |
| कृतं यन्मङ्गलं तत्र              | १२      | ३९       | केवलसंध्यासमये                  | १९      | १०       |
| कृत्वाथ कुण्डं तन्मध्ये          | ४५      | ६३       | कैकयनाथं हन्याच्छ्रवणक्षें      | १०      | ४८       |
| कृत्वाधुनैषां विषयव्यवस्थां      | ३२      | ३४       | कोणेष्वयचरं कुर्यात्            | ३९      | १६१      |
| कृत्वा नक्षत्रपूजां च            | ४६      | १६       | क्रतुक्रियार्थं श्रुतयः         | १       | ४        |
| कृत्वा शुक्रं पृष्ठतो वामतोऽर्कं | ३८      | २४       | क्रमशस्तिथिवारक्षं              | ३२      | ३५       |
| कृत्तिकासूत्रितो व्याधिः         | ४६      | २४       | क्रमशो बिभर्ति दिनपो            | १९      | २५       |
| कृषिभवनविपिनकार्यं वापी          | १४      | २०       | क्रमशस्त्वनिष्टमिष्टं           | १९      | ७        |
| कृष्णपक्षे चतुर्थी च             | २९      | ३४       | क्रमादजाग्रितितयं च शिष्टं      | ३२      | २१०      |
| कृष्णः सूरस्त्वन्दो              | ६       | २८       | क्रमादेतासु तिथिषु              | ४२      | ३६       |

| श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-------------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| क्रूरकर्म रिपूच्चाटं          | १५      | १७       | ख                         |         |          |
| क्रूरग्रहमध्यगते लग्ने        | ३२      | ४५       | खङ्गचर्मधरो नीलो          | १८      | ८९       |
| क्रूरग्रहे चास्य शरीरसंस्थे   | ६       | १८       | खङ्गवर्मधरः कृष्णः        | ४६      | ७४       |
| क्रूरग्रहैर्विद्धदोषो हन्ति   | ४३      | ५६       | खरेषु यदा विषमे           | १८      | १९       |
| क्रोधिनि शारदि निरन्तर        | ६       | ६६       | खण्डेन्दुसंज्ञकं त्वाद्यं | ३९      | १३६      |
| क्रोधो दण्डश्च भेदः           | ११      | ४७       | खरकरतुहिनांशोर्दृष्टं     | १५      | ८        |
|                               |         |          | खरं गेहं यदा यत्र         | ३९      | ११०      |
| क्ष                           |         |          | खर्जूरचक्रस्य समां        | ३२      | ६८       |
| क्षये पूर्वतिथौ शोध्यं        | १२      | ७३       | खला पुनर्भूर्बहुदोषसक्ता  | २४      | १३       |
| क्षितिपतिपूजानियतं            | ४४      | ३        | खाक्षा ६० जिना २४         | ३२      | ७८       |
| क्षितीशसंग्रामजभीति           | ७       | ८        | खातं हस्तचतुर्भिश्च       | ४५      | १४       |
| क्षिप्रमृदुध्रुवचरभे          | १४      | ११२      | खार्जूरं यमघंटकश्च        | ३२      | ७६       |
| क्षिप्राचलचलमृदुभे            | १४      | ११०      |                           |         |          |
| क्षिप्रैर्नापरवासरसमये        | १४      | ७५       | ग                         |         |          |
| क्षिप्रोद्घाही यज्ञकृत्स्यात् | २९      | २९       | गजरामांकवस्वं             | ३९      | ४९       |
| क्षीरलङ्घकभोक्तारौ            | ४६      | १९       | गजाये वा ध्वजाये वा       | ३९      | १८०      |
| क्षीरवृक्षसमिद्धिश्च          | ४५      | ५२       | गजाश्वगोकुलस्थानाद्       | १८      | १०६      |
| क्षुते मार्जारसमरे            | ३७      | ११४      | गजाश्वपशुलोहादि           | ३९      | १५५      |
| क्षेत्रमादौ परीक्षेत          | ३९      | २        | गजाश्वशालादिषु            | ३८      | २२       |
| क्षुद्धयदाः सशिरस्का          | १०      | ११       | गजाश्वसंघन्दिजदेवभक्तान्  | ९       | ४२       |
| क्षुधा तृष्णा च निन्द्रा च    | ११      | ४२       | गजोष्ट्राश्वायुधोद्यान    | १६      | ७        |
| क्षेमकरो नृपतीनां             | १०      | ३८       | गणितस्कन्धाज्ञात्वा       | ९       | ७        |
| क्षेमसुभिक्षं श्वेते राहौ     | ९       | २६       | गणेशयमयोर्मध्ये           | ३५      | २६       |
| क्षेमाख्या क्षेमकरी           | २०      | ६        | गणेशशक्रयोर्मध्ये         | ३५      | २५       |
| क्षौद्रद्रावो भवेद्यत्र       | ४५      | ५९       | गणेशसोमयोर्मध्ये          | ३५      | २८       |
| क्षौद्रवर्षे राष्ट्रनाशस्     | ४५      | ७६       | गणेशाम्बुपयोर्मध्ये       | ३५      | २७       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|--------------------------------|---------|----------|
| गणेशोत्थं च भूपस्य           | ४५      | ३५       | गुणशेखरयोगाख्यं                | ४३      | ३०       |
| गण्डान्तखार्जूरिकवारदोष      | ३२      | २२       | गुणसागरयोगाख्यं                | ४३      | ४४       |
| गण्डान्तदोषमखिलम्            | ४३      | १२८      | गुणसागरयोगोऽयं                 | ४३      | ११७      |
| गदायोगं निहन्त्याशु          | ४३      | ८५       | गुणसुतसुखसंपद्भूषिताङ्गी       | २४      | ३०       |
| गन्तव्यधिष्ठयं खलु मुक्तभं   | ३२      | १०९      | गुणाधिकं दोषविहीनकालं          | ३२      | १३१      |
| गन्थः कृष्णागुरुः पुष्टं     | ४६      | ७५       | गुणानेकाङ्गुभखेटजातान्         | २९      | ७०       |
| गरबविष्ट्यां वणिजे           | १९      | ६        | गुणांश्च दोषांश्च गुणापवादान्  | ४३      | १४६      |
| गर्भिण्यां मातरि शिशोश्      | २८      | ७        | गुणार्णवं महायोगं              | ४३      | ४२       |
| गर्भे मातुः कुमारस्य         | २८      | ४        | गुणार्णवमहायोगो                | ४३      | ११५      |
| गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति         | १८      | १५७      | गुरवे पीतवस्त्रं च             | ३७      | ११३      |
| गवां स्थानेषु गोहानिः        | ४५      | १६९      | गुरुर्बली स्वलग्नस्थो          | ४१      | २५       |
| गात्रप्रदक्षिणं वापि         | ४५      | १८३      | गुरुवारेऽद्विर्षिं उज्ज्यार्कं | ४१      | १५       |
| गात्रप्रदक्षिणां वापि        | ४५      | १८४      | गुरुवारे भवेद्वयाधिः           | ४६      | १०९      |
| गान्धर्वः समयग्राह्य         | ३२      | १७४      | गुरोरथो लघुः स्थाप्यः          | ३९      | ९६       |
| गावः प्रभूतपयसः              | ६       | ३३       | गुरोर्ज्ञशुक्रौ रिपुसंज्ञकौ तु | ३२      | १९९      |
| गिरिसुतशिवदिवसौ वा           | ३२      | २१९      | गुरौ कण्टकगे लग्ने             | ३७      | १७२      |
| गीर्वाणपूर्वगीर्वाणमन्त्रिणो | ३९      | ४२       | गुरौ मित्रत्रयोदशयोः           | ४२      | ३१       |
| गुडलवणवसास्थिकलीव            | ३७      | ५१       | गुरौ मृगस्थेऽम्बुधराः          | ६       | ९८       |
| गुणकल्पतरुर्योगः             | ४३      | ११३      | गुरौ वीर्ये केन्द्रगते         | ३७      | १५४      |
| गुणकल्पतरु हन्ति             | ४३      | ४०       | गुरौ सिते वा सौम्ये वा         | ३९      | ३५       |
| गुणगुणऋतुपवनगुणेन्दुकृत      | १४      | ९३       | गोकुञ्जराविति यथाक्रमम्        | ३२      | १८२      |
| गुणदोषयोर्निरूपणम्           | १       | १२       | गोगजाश्वोष्ट्रमहिषनर           | ४५      | ९३       |
| गुणपार्श्वमहायोगं            | ४३      | ३३       | गोचरबलचिन्तायां                | १८      | ९        |
| गुणभास्करयोगं तु             | ४३      | ३२       | गोधूमशालीक्षुमती धरित्री       | ११      | १२       |
| गुणमर्दनयोगाख्यं             | ४३      | १०७      | गोधूमशाल्यादिवरेक्षुवाट        | ६       | ८७       |
| गुणमर्दनयोगोऽयं              | ४३      | ३५       | गोधूलिकं योगलग्न               | ३२      | २३०      |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|-----------------------------|---------|----------|
| गोधूलिको महायोगो             | ४३      | १२९      | ग्रीष्मे सदा हेमनिभो        | २       | २४       |
| गोभूस्वर्णान्नदानेन          | ४५      | ११६      | गृहक्षतः पितृपतिगच्छवर्वो   | ३९      | २१०      |
| गोवीथिगे दैत्यपुरोहिते       | ७       | ७        | गृहनिर्माणमुदधिस्नानं       | २८      | ५        |
| गौरीपति चन्द्रमौलिं          | ३७      | १३३      | गृहपादा गृहस्तम्भा          | ३९      | १८७      |
| गौरीर्मिमायमन्नेण गौरीं      | १८      | ४७       | गृहराडिति विख्यातं          | ३९      | १५७      |
| ग्रस्तोदयगेऽस्तमिते          | ९       | १५       | गृहस्तम्भद्वारदारु          | ४५      | ११८      |
| ग्रस्तोदये चोर्द्धमनिष्टमादौ | ३२      | १८       | गृहस्यागतभं यत्र            | ३९      | ४८       |
| ग्रहकूटभतो यस्माच्           | २२      | १        | गृहात्मको वास्तुपुरुषस्     | ३९      | ५८       |
| ग्रहक्षजा केतवश्च            | ४५      | ४        | गृहीत्वा सुकृतं तेभ्यो      | ३५      | ४४       |
| ग्रहजन्मकृतं दोषं            | ४३      | ८४       | गृहोपरि गृहादीनाम्          | ३९      | १७२      |
| ग्रहजन्मभयोगोऽयं             | ४३      | ११       |                             |         |          |
| ग्रहजन्माह्यो दोषो           | ४३      | ५८       | घ                           |         |          |
| ग्रहजन्माह्यं योगं           | ४३      | १३१      | घटतुलवृश्चिकमकरे            | १९      | २२       |
| ग्रहणसमयेऽतिवृष्टिः          | ९       | ३३       | घटमत्स्यवृषा युग्म          | ४२      | ८५       |
| ग्रहणं द्युनिशोर्ध्ये        | ४२      | ९७       | घटिकाद्यमृक्षान्ते          | ४२      | १६       |
| ग्रहाणामादिरादित्यो          | १८      | १३७      | घातनं परराष्ट्राणां         | १५      | ३९       |
| ग्रहणोपगते जीवे              | ९       | ३६       | घोरोग्रक्षे ध्वांक्षी लघुभे | १९      | ३        |
| ग्रहनक्षत्रताराणां           | ४५      | १३१      | घन्निति क्रूरास्त्रिषष्ठाय  | ३७      | १४६      |
| ग्रहनक्षत्रोपगमे             | १०      | ३२       |                             |         |          |
| ग्रहयज्ञं ततः कृत्वा         | ३७      | १२४      | च                           |         |          |
| ग्रहयज्ञरभिषेकैर्            | २२      | १४       | चक्रे तस्मिन्नेकरेखास्थितेन | ३२      | ९        |
| ग्रहशान्त्यामुक्तकुण्डे      | ४५      | ४०       | चणकामृगिणीमांसं             | ३७      | १२१      |
| ग्रहेषु विषमस्थेषु           | १८      | १७९      | चण्डायुधं सच्चण्डीशं        | ४३      | १२०      |
| ग्रहैः कृतं मृत्युयोगं       | ४३      | ८६       | चतुर्जातो बर्हिंशिखा        | १८      | ११५      |
| ग्रहैः कृतो मृत्युयोगो       | ४३      | १३       | चतुर्थदिवसे गत्वा दीपैः     | ४५      | ३८       |
| ग्रामस्य निकटे नूनं          | ४५      | ११०      | चतुर्थपञ्चमं सदा            | ३९      | १३७      |
| ग्रामेषु यदि वा वन्या        | ४५      | १०८      | चतुर्दशी चतुर्थी च          | ४२      | ३५       |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                  | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|-----------------------------------|---------|----------|
| चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा      | १२      | १९       | चमकं नमकं सूक्त                   | ४५      | २२       |
| चतुर्दिक्षु चतुर्वेद       | ३५      | ३७       | चरराशिषु संस्थेषु                 | ३७      | १९६      |
| चतुर्द्वारसमायुक्तं        | ४२      | १३३      | चरराशौ लग्नगते                    | ३७      | २००      |
| चतुर्द्वारसमायुक्तं        | ४५      | १३       | चरराशौ लग्नगते                    | ३७      | ६६       |
| चतुर्द्वारं वितानस्त्रक्   | ३४      | ५        | चरवास्तु चरत्येवं                 | ३९      | ५९       |
| चतुर्द्वित्र्यादिशालानाम्  | ३९      | ६१       | चरस्थरद्विजहितः                   | १६      | ५        |
| चतुष्यगते सौम्ये           | ३७      | १८६      | चरोदये लग्नगते न कार्यं           | ४०      | ११       |
| चतुष्यादाश्च युथेभ्यस्     | ४५      | ९२       | चवर्गोच्चारिते प्रश्ने            | ३९      | ८५       |
| चतुः शृङ्गः सप्तहस्तस्     | ३६      | १३       | चाण्डाली पतिता समा                | २४      | ३७       |
| चतुःषष्ठिदलं कृत्वा        | ३५      | ११       | चाण्डाले जटिले वापि               | ३९      | ७८       |
| चत्वारः पञ्च वा खेटा       | ७       | १६       | चातुर्जातमुशीरं च                 | १८      | ११९      |
| चत्वारः प्राढ्मुखा विप्राः | ३६      | ७        | चापनृयुग्घटवृषभा                  | २३      | १८       |
| चन्दनकुङ्कुमगुगुल          | ११      | ३२       | चापासने गृध्रथः                   | १८      | ६५       |
| चन्दनं कमलं पुष्टं         | ४६      | ८१       | चापांशकादे धनिनी                  | ३२      | ५०       |
| चन्दनं मालतीपुष्टं         | ४६      | ८४       | चाषबच्चभरद्वाजाश्                 | ३७      | ४६       |
| चन्दनं सौरभं पुष्टं        | ४६      | ३५       | चित्रकर्म गृहस्थापं               | १५      | १५       |
| चन्द्रजार्यसितवासरेषु      | ३८      | ६        | चित्रवृष्टिर्यदि भवेत्            | ४५      | ७८       |
| चन्द्रभे चोत्थितो व्याधिः  | ४६      | ३०       | चित्राद्यद्वे पुष्टमध्ये द्विपादे | ४२      | १२३      |
| चन्द्रशुक्रगुरुज्ञानां     | २८      | १२       | चित्रान्तं च सदध्यन्न             | ३७      | १२३      |
| चन्द्रशेखरयोगोऽयं          | ४३      | १०६      | चित्रायामुत्थितो व्याधिः          | ४६      | ५७       |
| चन्द्रस्तु देवता तत्र      | ४६      | १०६      | चित्रोत्तराधातृशशाङ्कमित्र        | ३८      | १०       |
| चन्द्रः शुभांशको यत्र      | ४१      | ५०       | चैत्ये देवालये सेतौ               | ४५      | १७४      |
| चन्द्रार्कपुत्रक्षितिजैः   | २४      | ४७       | चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां             | १२      | ४९       |
| चन्द्रार्को लाभगौ यत्र     | ४१      | ३९       | चैत्रस्य शुक्लाद्यतिथेश्च         | ११      | ८        |
| चन्द्रे लग्नेऽतिसंपत्स्या  | २५      | ३        | चैत्रादिमासनामानि                 | २५      | १५       |
| चन्द्रे लाभस्थिते सौम्ये   | ३७      | १७३      | चैत्रादिमासेन यथाक्रमेण           | २       | ३        |
| चन्द्रेऽप्येकादशे संस्थे   | ३७      | १९४      | चैत्राद्या मासशून्याभ्या          | ४२      | ८६       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                 | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|----------------------------------|---------|----------|
| चैत्रै स्त्रीजनहानिः         | ६       | ७        | जन्मोदयर्क्षन्निधने विलग्ने      | ३२      | ८५       |
| चौराग्निसापलगणप्रभूता        | ११      | १३       | जपादीश्व ततः कर्ता               | ४२      | १६०      |
| चौलं च बीजरोपं च             | १५      | ९        | जयन्त्येन्द्रार्कसत्याख्या       | ३९      | २००      |
| चौलान्नभुक्तौ व्रतबन्धने     | २७      | ५        | जयाख्यनामसदनं द्वितीयाद्यं       | ३९      | १०८      |
| चौलैनैवायुषो वृद्धिश्        | २८      | ९        | जयासु वसुसोमार्कदस्त्रान्त्ये    | ४१      | ८        |
| छ                            |         |          |                                  |         |          |
| छत्रचामरसंयुक्तं राज्यचिह्नं | ३३      | २५       | जलकेतुर्जलसदृशः सुभिक्षे         | ४५      | ६१       |
| छत्रध्वजस्वस्तिकवद्धमान      | ४४      | १२       | जात्यर्क्षे जातिभयमभिषेकर्क्षे   | २२      | १३       |
| छत्रध्वजे भाङ्गोवृषाश्व      | २       | १५       | जीर्णं जलाद्रं दहनप्रदग्धं       | १३      | १८       |
| छन्दः पादौ शब्दशास्त्रं      | १       | ५        | जीभूतगर्भं निखिलं                | ११      | ६        |
| छन्दोऽसौ तत्र गायत्री        | ३५      | २३       | जीवराशिद्वितीयायां चतुर्थ्यां    | ४२      | ६८       |
| ज                            |         |          |                                  |         |          |
| जगत्यश्व विराट् चैव          | ४२      | १४६      | जीवस्थानातु शीतांशुर्निधनं       | ४२      | २२       |
| जधन्यधिष्यानि जलेश           | ३       | १८       | जुहुयात्खदिराज्यान्त्रं          | ४५      | १५६      |
| जंघयोः पादयोश्वैव सदा        | ४५      | १८२      | जुहुयात्सौम्यमन्त्रेण            | ४५      | ७१       |
| जनकं जननी हन्ति              | ३२      | २४२      | जृम्भन्ति सर्वे विविधान्पानैः    | ६       | ५७       |
| जन्म त्रिकलत्रिपुद्वितीय     | २०      | ४        | ज्येष्ठक्षे कन्यका जाता          | ४२      | ११३      |
| जन्मभमनुजन्मक्षं त्रिजन्मभं  | २०      | ५        | ज्येष्ठं ज्यष्ठाद्यपादे तु हन्ति | ४२      | ११४      |
| जन्मभं जन्मधिष्येन           | ३२      | १९५      | ज्येष्ठं ज्येष्ठाद्यजो हन्ति     | ४२      | ११२      |
| जन्मभे जन्मलग्ने वा          | ३७      | २१७      | ज्येष्ठाजपादश्रवणधनिष्ठा         | ४२      | ४२       |
| जन्मराशिविलग्नाभ्यां लग्ने   | ३७      | ७१       | ज्येष्ठायामुत्थितो व्याधि        | ४६      | ७०       |
| जन्मराशौ लग्नगते तदीशे       | ३७      | ६५       | ज्येष्ठे त्रयोदशी निन्द्या       | ४२      | ७९       |
| जन्मलग्ने लग्नगते तद्वर्गे   | ३७      | ६८       | ज्येष्ठेऽद्वे निखिलजनाः          | ६       | ९        |
| जन्मान्धमुक्तकेशास्थि        | ३७      | ५३       | ज्येष्ठे मासे ज्येष्ठयोर्वा      | ३२      | १७       |
| जन्मेशाष्टमलग्नेशौ मिथो      | ३२      | ८७       | ज्येष्ठेसु मासेषु परेषु नूनं     | ३८      | ९        |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|----------------------------|---------|----------|
| ज्योतिःशास्त्रं समग्रं       | १       | २        | तत्रस्थसर्ववस्तूनि         | ३९      | १५६      |
| ज्ञ                          |         |          | तत्राग्निशम्भुकोणस्        | ३९      | १९९      |
| झषचापसिंहमिथुनसंक्रान्तौ     | १९      | २१       | तत्राधिकफलवृन्दे           | ३२      | १६६      |
| झषलग्ने झषांशे च पन्था       | ३७      | १४३      | तदधीशस्य राष्ट्रस्य        | ४५      | ४६       |
| ज्ञ                          |         |          | तदर्द्धमितरेभ्यश्च         | ३५      | ४५       |
| ज्ञात्वैवमेवं मणिजीवधातु     | ३       | २०       | तद्वं वा तद्वं वा          | ४५      | २७       |
| ट                            |         |          | तद्वं वा तद्वं वा          | ४५      | २५       |
| टवर्गोच्चरिते प्रश्ने        | ३९      | ८६       | तदा सचिन्त्य सप्ताङ्गं     | ३३      | २७       |
| त                            |         |          | तदेवान्त्रं हविस्तत्र      | ४६      | ७६       |
| तक्षकविषानिदधः               | १४      | १०५      | तदेवाश्विनकुण्डं च         | ३५      | ३४       |
| तच्छयाग्रं यत्र वृत्ते       | ३९      | ११       | तदैव प्रवरैर्युक्तं        | ३९      | १२३      |
| ततस्तत्राज्यभागान्           | ३४      | १४       | तदंशैन्यूनकालो हि          | १९      | ३१       |
| ततः शुद्धोपविष्टस्य          | ४६      | ११       | तदिगीशं सुसम्पूज्य         | ३७      | १३४      |
| ततो जपादीञ्जुहुयात्          | १८      | १३३      | तद्वेषशमनार्थाय शान्तिं    | ३७      | ९९       |
| ततो दशर्चानुष्टुभो           | ४२      | १४५      | तद्वशास्त्रिविधोत्पाता     | ४५      | ३        |
| ततो मङ्गलघोषैश्च             | ३४      | १८       | तद्वयक्षरं वा चतुरक्षरं वा | २५      | १७       |
| ततो राज्ञोऽभिषिक्तस्य        | १८      | १४६      | तनयगता सेन्दुशुभा          | ३२      | १५७      |
| ततो व्याहतिभिः कुर्यात्      | १८      | १३०      | तनुजातानुणनिचयान्          | ३२      | ६१       |
| ततद्वर्णोच्चपुष्पैः          | ३५      | ३२       | तनुरर्थाह्यो धन्वी         | ३७      | १४४      |
| तत्पुरुषाय विद्वहे           | ३५      | २२       | तन्त्रणीकशमीवेणु           | ३३      | ४६       |
| तत्पुरं कुरुते शून्यं        | ४५      | ८१       | तन्नामानः शिखिनो           | १०      | २३       |
| तत्प्राच्यां स्थणिङ्गले वहिं | ४६      | ९        | तन्वनयगेषु सौम्येषु        | ३७      | २०९      |
| तत्र भद्रासनं सम्यग्         | ३३      | १३       | तपस्यमासि द्विजसज्जनानां   | ९       | ४३       |
|                              |         |          | तपस्ये शक्भरणी             | ४२      | ७७       |
|                              |         |          | तयोरहिर्बुद्ध्यभयाम्ययोश्च | ८       | ३        |
|                              |         |          | तयोर्मध्ये हि मत्स्येन     | ३९      | १२       |
|                              |         |          | तरन्ति दुःखान्यपि          | ६       | ४६       |

| श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                   | अ. क्रम | श्लो. सं |
|--------------------------------|---------|----------|------------------------------------|---------|----------|
| तल्लिङ्गमन्त्रैर्गन्धाद्यैर्   | ४५      | ३९       | तिस्त्रोत्तरामित्रगुरुश्रविष्ठा    | १४      | ६१       |
| तवर्गोच्चारिते प्रश्ने         | ३९      | ८७       | तिस्त्रोत्तरामूलमधान्त्यमैत्र      | ३२      | ७        |
| तववायुवृत इति यजेद्वायुं       | १८      | ९४       | तिस्त्रोत्तरा वारुणैत्रद्वैतेन्द्र | ३७      | २६       |
| तस्माल्कालं न जानन्ति          | ४१      | २        | तिस्त्रोऽपि रिक्तास्तिथयः          | ३७      | १८       |
| तस्माल्कृत्वाष्टधा यामं        | ३९      | १६       | तिस्त्रोऽष्टकाश्चोक्तनिसर्गदोषाः   | ३२      | २०       |
| तस्मात्त्याज्या परीता वा       | १६      | १४       | तिलहोमं व्याहतिभिः                 | ४५      | २१       |
| तस्माद्विवैव संत्याज्या        | ४२      | ५३       | तिलहोमं व्याहतिभिः                 | ३६      | ८        |
| तस्माद्विवाहे यात्रायाम्       | ३७      | २३३      | तिलहोमं व्याहतिभिः                 | ३५      | ४०       |
| तस्मिन्नवसरे यत्र              | ३९      | ८०       | तिलाज्यहोमव्याहतिभिः               | ४६      | १०       |
| तस्मिन्मुहूर्ते स्वयमप्रमाणे   | ३७      | १३६      | तुङ्गमित्रस्वर्क्षगयोस्तयोर्वा     | ४३      | २५       |
| तस्मिन् सम्पूजिते प्रीता       | ३५      | ३        | तुङ्गस्थे वा तदंशस्थे गुरौ         | २९      | २३       |
| तस्य दक्षिणतो दुर्गा           | १८      | ७९       | तुलयोद्धत वस्तुचयं                 | ६       | ९५       |
| तस्य वै जन्मचिह्नानि           | १२      | ५८       | तुल्यां समन्तादगृहवामभागे          | ४५      | १७३      |
| तस्याश्वेशानभागे तु            | १८      | १०३      | तुल्यां समन्तादगृहवामभागे          | ३२      | १४१      |
| तस्याश्वोपरि विप्रः            | १८      | २७       | तुहिनकरे सचिववरे                   | ११      | १९       |
| तस्योपरि पुनः कार्यो           | १८      | २८       | तुहिनकरो जगतां                     | २०      | १०       |
| तं चन्द्रशेखरं योगं            | ४३      | ३४       | तुहिनकिरणमन्दवारे                  | ३७      | २८       |
| ताम्बूलपुष्पाक्षतगन्धवस्त्र    | ३२      | १४३      | तृणतुषफणिचर्मांगरकार्पासि          | ३७      | १०       |
| ताम्बूलं च ततो दद्याद्         | ३९      | २१८      | तृतीयवप्रः कर्तव्यो                | ४५      | १६       |
| ताश्चापि रूपादिग्राम           | ३९      | ९५       | तृतीयस्थाः शुभाः पापा              | २९      | ५७       |
| तासां जपफलं सम्यग्             | १८      | १५४      | तृतीयः कोटिहोमः स्यात्             | १८      | १३१      |
| तिथयो मासशून्याख्याः           | ४२      | ८४       | तृतीये पञ्चमेऽब्दे वा              | २८      | १        |
| तिथिनक्षत्रलग्नानाम्           | ३७      | ८२       | तेषां तन्निखिलफलं                  | १०      | १८       |
| तिथिवारसनक्षत्र                | ३७      | १५२      | तेषां मध्ये श्रेष्ठतममाचार्यं      | १८      | ३५       |
| तिथेः पञ्चदशो भागः             | १२      | ७४       | तेषु कार्यान्यष्टदल                | ३३      | ५७       |
| तिथ्यर्धमाद्यं शकुनिर्द्वितीयं | १६      | २        | ते हूणवङ्गाखशेषु वर्ज्याः          | ३२      | ३३       |
| तिस्त्रस्तु नाडयः प्रथमे च     | १५      | ५        | तैजसेषु च पात्रेषु                 | ३३      | ५६       |

| श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------------|---------|----------|---------------------------------|---------|----------|
| तैलं तदान्तो भीतिर्             | ४५      | ७०       | त्रिद्युस्पृगाख्यदोषं च         | ४३      | १४४      |
| तोयाशये वापि कृतौ               | ४५      | ८४       | त्रिद्युस्पृगायामदोषं यः        | ४३      | १३२      |
| त्यक्त्वा चतुर्थीमपि            | २९      | ३६       | त्रिधनाय त्रिकोणस्थे            | ३७      | १८२      |
| त्यक्त्व्या परदेशेषु            | ४५      | ९१       | त्रिपूर्वावहिरौद्राहि           | ४२      | २०       |
| त्यक्त्वा विवासनं होमं          | ४५      | ९६       | त्रिषडेकादशमे सूर्यः            | १८      | २        |
| त्यक्त्वास्तकेन्द्रस्थितसौम्य   | ३२      | १२४      | त्रिषडेकादशसहितो                | १८      | ४        |
| त्वपूजयाऽनया शुक्र              | ३७      | १०७      | त्रिषष्ठेषु पापेषु              | ३७      | २०५      |
| त्वं योनि त्वं तथा तारा         | ३९      | ७५       | त्रिषुष्ठुष्ठन्दो देवतार्को     | १८      | ४१       |
| त्याज्यं तयोर्नैधनभं विलग्नं    | ३२      | ८६       | त्रिषुष्ठुष्ठन्दोऽस्य मन्त्रस्य | १८      | ६९       |
| त्वाष्ट्रध्वृवश्रीपतिभेषु       | १४      | ६०       | त्रिषष्ठलाभगाः पापा             | ४१      | ३२       |
| त्वाष्ट्रे प्रियालुः सुरतप्रियो | २४      | १८       | त्रिषष्ठलाभगेष्वेषु             | ३७      | १६६      |
|                                 |         |          | त्रिस्कन्धपारङ्गम एव            | १       | १०       |
| त्र                             |         |          | त्रिंशद्वागं लग्नमितं           | २३      | १५       |
| त्रयोदश त्रयोदश                 | ३७      | ५५       | त्रैलोक्ये यानि भूतानि          | २६      | २१       |
| त्रयोदशक्षेऽपि चतुर्दशक्षेऽ     | ४       | ४        | त्र्यम्बकस्य तु मन्त्रस्य       | ४६      | २१       |
| त्रयोदशलवैर्युक्तः              | ४२      | ६२       |                                 |         |          |
| त्रयोदशी सुभोगदा                | ३७      | २२       | द                               |         |          |
| त्रायन्तामिति मन्त्रस्य         | ४६      | ८६       | दक्षिणतोऽपि जरद्व               | ७       | २        |
| त्रिकोणकेन्द्रसंस्थाभ्यां       | ३७      | २१५      | दक्षिणद्वारहीनं तद्             | ३९      | १२७      |
| त्रिकोणकेन्द्रस्वत्राय          | ३९      | ७२       | दक्षिणपाश्वर्विमोक्षो           | ९       | ५४       |
| त्रिकोणगा यदा सौम्याः           | ४१      | ३०       | दक्षिणपाश्वर्ख्यः स च           | ९       | ५६       |
| त्रिकोणे शुभे खेटे              | ३७      | १६८      | दक्षिणहनुभेदसंज्ञितम्           | ९       | ५२       |
| त्रिकोणान्त्येषु सौम्येषु       | ३७      | २१२      | दक्षिणासहितां भक्त्या           | ४६      | १५       |
| त्रिकोणे द्वित्रिराशौ वा        | ३७      | ९१       | दक्षिणे तस्य चाकाशम्            | १८      | ८१       |
| त्रिघे शकाब्दे मुनिभिर्विभक्ते  | ११      | ३९       | दग्धयोगं निहन्त्याशु            | ४३      | ८३       |
| त्रितयं गवां च दद्याद्          | १४      | ९२       | दग्धलग्नोद्भवं दोषं             | ४३      | १४१      |
| त्रिद्युस्पृग्दिवसं त्याज्यं    | ४२      | ८९       | दग्धलग्नोद्भवो दोषः             | ४३      | ६६       |



| श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं |
|--------------------------------|---------|----------|--------------------------------|---------|----------|
| दग्धसद्वनि यत्कर्म             | ४२      | ७२       | दास्त्रादिन्दृक्षद्वयगे दिनेशे | २       |          |
| दत्त्वाष्टमग्रहत्वं पीतो       | ९       | ३        | दासीदासगृहाद्येषु              | ४५      | १७६      |
| दत्त्वा हृष्ठं प्रयत्नेन       | ३७      | १०६      | दिक्षु विदिक्षु प्रभवः         | १०      | २७       |
| दद्यात्पटुं ग्रहज्ञेभ्यः       | ३६      | ११       | दिगीश्वरा भास्करशुक्र          | ३७      | ३८       |
| दमयन्तीमहाजाती                 | १८      | १०९      | दिग्द्वारभे लग्नगते तदंशे      | ३७      | ७०       |
| दम्पत्योर्जन्मभे चैक्ये        | ३२      | १६       | दिग्द्वारभेषु यात्रोक्तेषु     | ३७      | ७३       |
| दर्शनमुपैति नियतं              | १०      | ३३       | दिग्द्वारराशयः सर्वे           | ३७      | ३५       |
| दशदिवसपञ्चदिनात्रिपक्ष         | १८      | १४       | दिग्धूमदोषं हन्त्याशु          | ४३      | १३८      |
| दशनिति सूर्यमुक्तक्षर्ता       | १९      | २८       | दिग्धूमदोषो हन्त्याशु          | ४३      | ६५       |
| दशमगताः शुभखेटाः               | ३२      | १६२      | दिग्राशिलग्नगे जीवे            | ३७      | २२४      |
| दशमस्थानगाश्चन्द्रसहिताः       | ४०      | १८       | दिग्वर्गाशिलग्नस्थे            | ३७      | २२६      |
| दशमस्थे शुभे लाभे              | ३७      | २०८      | दिग्वर्गाणामियं योनिः          | ३९      | ४४       |
| दशमेकादशनिधन                   | १८      | ५        | दिग्विदिक्षु स्थिता रेखा       | ३९      | २४       |
| दशम्यां सिंहकीटाख्यौ           | ४२      | ६९       | दिग्विदिक्षु स्थितैः           | ३३      | १४       |
| दशम्येकादशी निन्द्या           | ४२      | ८१       | दिङ्मध्योद्भवमत्स्यौ           | ३९      | १३       |
| दशविघमोक्षाः कथिताः            | ९       | ६२       | दिनकरतनये ग्रस्ते              | ९       | ३८       |
| दशाङ्गुलोक्तो मध्यो            | ४५      | १५       | दिनकरधिष्यात्तितयं             | ७       | ३        |
| दस्त्रक्षतो भानि भवन्ति        | ३२      | २०६      | दिनकरभात्सप्तमभं               | २१      | १        |
| दस्त्रादितीज्यमृगमैत्र         | ३२      | १७७      | दिनकरमित्रविशाखा               | ५       | १२       |
| दस्त्रेन्द्रिन्द्रकरादितमैत्र  | १४      | ८३       | दिनकरशिमसमाने                  | ९       | २८       |
| दस्त्रेन्दुभुजगभास्करमित्र     | २१      | ७        | दिनकृति मन्त्रिणि सततं         | ११      | १८       |
| दहनप्रहरणडमरमरुदामय            | ११      | २०       | दिनक्षये व्यतीपाते             | ३४      | ४        |
| दह्यते प्रविशतां च मन्दिरं     | ३८      | ५        | दिनपतिनिशिपतिदिवसौ             | ३२      | २२१      |
| दाता सहिष्णुर्विजितेन्द्रियश्च | ३३      | ३१       | दिनपतिसंक्रमणात्प्राक्         | १९      | ११       |
| दानं वेदविदे दद्याच्           | १५      | २५       | दिनप्रमाणं त्वयनं च सर्वं      | ११      | ५        |
| दारिद्र्यं रविणा कुजेन         | ३२      | ४२       | दिनमेकं सदा त्यज्यम्           | ४२      | ९३       |
| दारुणभानि पुरन्दरकोणप          | १४      | ३०       | दिनाधिपा धातृविधातृ            | १२      | १        |

| श्लोकानुक्रमणिका         | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|--------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| दिनाधिपे मेषवृषालि       | ३२      | ३        | दृढब्रता सत्यपरा सुवृत्ता | २४      | १९       |
| दिने दिने वृद्धिमुपागतः  | ३२      | ५        | दृष्ट्वा दैवविकारं        | ४५      | ३७       |
| दिनेषु युग्मेषु च        | २४      | ४२       | दृष्टः समस्तदिवसे         | ७       | ११       |
| दिवसमुहूर्ताः कथिताः     | १७      | २        | दृष्टे शवे रोदनवर्जिते    | ३७      | ४८       |
| दिवसस्य त्रिभागे तु      | २९      | ३८       | दृश्यन्ते द्वित्रिदिनैः   | १०      | १४       |
| दिवसस्याष्टमे भागे       | ४२      | २५       | दृश्यन्ते यद्यनलदिशि      | १०      | ९        |
| दिवा चन्द्रवती राका      | १२      | ३०       | दृश्यन्ते याम्यायां       | १०      | १०       |
| दिवान्धकारो वृक्षाणां    | ४५      | ४५       | दृश्यते वा प्रतीपा सा     | ४५      | ७९       |
| दिवा प्रवेशः शुभदः       | ३८      | ४        | देवतागुरुपूजां च          | १५      | ३४       |
| दिवामृत्युप्रदाः पादा    | ४२      | ५०       | देवताग्निः स्विष्टकृच्च   | १८      | १५०      |
| दिवायोगा इति ख्याताः     | ४२      | ५२       | देवताश्च तथा विश्वे       | ४२      | १४७      |
| दिवि ऋक्षग्रहजास्ते      | १०      | ३        | देवदारुतरोर्धुपो          | ४६      | ६५       |
| दिवैव मृत्युदं योगं      | ४३      | १०३      | देवानुरूप्नितृन्विप्रान्  | ३७      | १३५      |
| दिवैव मृत्युदो मृत्यु    | ४३      | ३१       | देवमन्त्री विशालाक्षः     | १८      | १४१      |
| दिवैव रोगदं योगं         | ४३      | १०४      | देवस्य यस्योऽुतिथि        | ४०      | ६        |
| दिव्यान्तरिक्षभौमाश्च    | ४२      | ८७       | देवं हुताशनं भक्त्या      | ४६      | १३       |
| दीक्षणसमये त्वसितः       | १८      | १७       | देशे च काले च तथा         | ३२      | १६७      |
| दीर्घग्रीवापतिं नीलं     | ३७      | १२९      | दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषा   | १८      | १४२      |
| दीर्घबाहुं महारौद्रं     | १५      | २९       | दैत्यमन्त्री दिवादर्शी    | ३७      | १०५      |
| दुन्दुभिवर्षे सततं       | ६       | ८४       | दैत्येज्ये सस्यपतौ        | ११      | ३०       |
| दुर्भिक्षकरं याम्यं      | ९       | १२       | दैवोद्वाहो यज्ञवते        | ३२      | १७२      |
| दुर्मतिवर्षे वर्षति      | ६       | ८३       | दोषनाडीषु यत्कर्म         | ४२      | ३७       |
| दुश्चिक्यलाभारिगता       | ३३      | १०       | दोषशान्तिपञ्चदुर्गां      | ३५      | ४३       |
| दुष्ट्योगं निहन्त्याशु   | ४३      | ९५       | दोषं शून्यतिथेजातं        | ४३      | १४३      |
| दुष्ट्योगे कृतं कर्म     | ४२      | २१       | दोषः शून्यतिथेजातिः       | ४३      | ६८       |
| दुःखशोकौ धनप्राप्तिः     | ३९      | १७       | दोषानशेषानमृताख्ययोगो     | ३२      | १२७      |
| दूर्वासमानवर्णे हारिद्रे | ९       | ३१       | दोषोऽप्येको गुणान्हन्ति   | २९      | ६५       |

| श्लोकानुक्रमणिका                  | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------------|---------|----------|---------------------------------|---------|----------|
| दोषोऽप्येको निहन्त्येव            | २९      | ६७       | द्विदैवत्वाष्ट्रवारीशरुद्रादिति | ३९      | ३३       |
| दोषो महापात इति                   | ३२      | ९३       | द्विदैवधातृवह्यर्कवसुदैवत       | ४२      | ५५       |
| द्यूनस्थिनता सेन्दुशुभा           | ४०      | १६       | द्विदैवभे पुष्पवती प्रवृत्ता    | २४      | २०       |
| द्युमुहूर्तास्त्ववशिष्ठा          | १७      | ७        | द्विदैवभे भवेष्याधिमासैनैकेन    | ४६      | ६३       |
| द्युरात्रिमध्यं खिलमङ्गलेषु       | ३२      | ११०      | द्विदैवमित्रचान्नेन्द्रवहि      | ४२      | ४०       |
| द्युवारक्षजमृत्युधात              | ३२      | २८       | द्विदैवरौद्रमूलेन्द्रवारि       | ४२      | ५        |
| द्रव्यमन्त्रविधानेन               | ३६      | २        | द्विदैववारीशशशाङ्कमूलध्रुवेषु   | १४      | ५६       |
| द्वाचत्वारिंशोत्तरशताधिकाः        | १०      | २१       | द्विभर्तृका मेषनवांशके          | ३२      | ४८       |
| द्वात्रिंशदंशा पैशाच्याः          | ३९      | २३       | द्विमासस्योत्तरादोषः पुष्टे     | ४२      | १२४      |
| द्वात्रिंशद्वाह्यतो वक्ष्यमाणा    | ३९      | १९८      | द्विशालाद्यासु सर्वासु          | ३९      | १३५      |
| द्वादशभागो द्वादशमस्त्रिंश        | २३      | १६       | द्विस्वभावेषु सर्वेषु           | ३७      | १९८      |
| द्वादशस्थं रविं भौमः              | २९      | ६४       | द्वयन्तरान्तरिते सौम्ये         | ३७      | १९२      |
| द्वादशं भवति जन्मलग्नतो           | ३२      | ८४       |                                 |         |          |
| द्वादशांशात्मकं वायुपण्डलं        | ३५      | १२       | ध                               |         |          |
| द्वादश्यां सार्पनक्षत्रे          | ४२      | ३४       | धनत्रिकोणस्थशुभग्रहोत्थ         | ३२      | १०७      |
| द्वादश्येकादशीनागागौरी            | ४२      | ८        | धनदं धनदं गेहं                  | ३९      | १०३      |
| द्वारमायामतः कार्यं               | ३९      | १५       | धनधान्यहानिरतुला                | ४४      | ५        |
| द्वारेषु जापकानष्टौ               | ४२      | १४०      | धनलाभं त्वमरांशे                | ४४      | ९        |
| द्वारेषु जापकानष्टौ               | ३५      | १९       | धनसौख्यवर्तीं सुभगां            | ३२      | १५४      |
| द्वाविंशतिः समुत्पत्तौ            | १५      | २६       | धनाख्यं सदनं द्वित्रि           | ३९      | १०७      |
| द्विजपशुसज्जनवृद्धिवैशाखे         | ६       | ८        | धरामरा गोकुलराजवृन्दा           | ६       | ५९       |
| द्वितीयस्था ग्रहाः सौम्याः        | २९      | ५६       | धर्मकर्मद्वित्रिसंस्थः          | ४१      | ४०       |
| द्वितीया च तृतीया च               | ४२      | ८०       | धर्मस्त्वं वृषरुपेण             | १८      | १६०      |
| द्वितीयायां तृतीयायां             | १२      | ११       | धर्मात्मजनैधनभे                 | २३      | २१       |
| द्वितीयायां तृतीयायां             | १२      | १३       | धर्मायगेषु पापेषु               | ३७      | २११      |
| द्वित्राश्वैवाधिदैवत्याः पञ्चानां | १८      | १२७      | धातृद्वये कोणपपितृपुष्टे        | १४      | ४२       |
| द्विदैवजलवस्वन्त्यब्रह्मोज्य      | ४२      | १        | धातृशशीन्द्रकुबेरा वरुण         | ९       | ८        |

| श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|--------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| धात्री सुरप्रवरयज्ञवरौथपूर्वे: | ६       | ३४       | नवतत्रतेषु सर्वत्र           | १२      | ४५       |
| धान्यरत्स्वर्णयुतां            | ३९      | ६३       | नक्षत्रलाक्षितो योगः         | ४३      | २८       |
| धान्योपरि सुसंस्थाप्य          | ४५      | १९२      | नक्षत्रवारतिथियोग            | २४      | ३५       |
| धारयित्वा सहेमाज्या            | ३३      | ५०       | न च दशमनिशाविवर्जनं          | २४      | ४८       |
| धिष्ण्ये चोपकुले लग्ने         | ३७      | २२५      | न नैधनं नैधनशुद्धलग्नं       | २९      | ४४       |
| धूपाभावे गुणगुलुः              | १८      | १२३      | न नैधने कर्मविशुद्धियुक्ते   | २७      | ४        |
| धूपो मलयजं पिष्टं              | ४६      | ३८       | न नैधने नैधनशुद्धलग्ने       | २५      | ७        |
| धूमनिभो विषमाख्याः             | १०      | २९       | न नैधनेभेऽपि नवाष्टलग्ने     | ३८      | १३       |
| धूमयोगं निहन्त्याशु            | ४३      | १०९      | न नैधनोदये कर्तुरष्टमे       | ३९      | ७०       |
| धूमे मण्डलतः शुद्धे            | ४२      | ६३       | नन्दं स्त्रीहनिं नूनं        | ३९      | १०१      |
| धृतगुग्गुलधूपोऽत्र             | ४६      | ४४       | नन्दाख्यं सदनं यत्र          | ३९      | १०९      |
| धृतगुग्गुलधूपोऽत्र             | ४६      | ५३       | नन्दा च भद्रा च जया          | १२      | ४        |
| धृतान्नपायसापूप                | १८      | १२४      | नन्दाभौमार्क्योर्भद्रा       | ४१      | ४३       |
| धृतान्नप्लक्षसमिध              | ४५      | १५९      | नन्दास्वम्बुपवित्राग्नि      | ४१      | ६        |
| धृतान्नं कृशरान्नं च           | ३७      | ११८      | नमस्ते रुद्र इत्यस्य         | ४६      | ९६       |
| ध्रुवसंज्ञं गृहं त्वायं        | ३९      | १००      | नरपतिकलहाज्जगतः              | १०      | ३०       |
| ध्रुवं धान्यं जयं नन्दं        | ३९      | ९८       | नरानजानश्वखरोष्टपक्षि        | ६       | ८८       |
| ध्रुवाख्यं द्वित्रिभूमायं      | ३९      | १०४      | नरेन्द्रपत्नीद्विजस्यवृद्धिः | ९       | ४६       |
| ध्रुवोग्रसाधारणदारुणक्षे       | १४      | ४८       | न लंघ्यः परिधो दण्डः         | ३७      | ३२       |
| धेनुर्धीर्णं पिबेद्यद्वा       | ४५      | ९४       | नवधिष्यानि नृपाणां           | २२      | १०       |
| धेनुं शङ्खं रक्तवृषं हेमं      | १८      | १५५      | नवप्रवेशेऽप्यथ कालशुद्धिः    | ३८      | २        |
| ध्यात्वा समर्चयेच्छुकं         | १८      | ६२       | नवमगताः शुभखचराः             | ३२      | १६१      |
| ध्वजधूमसरिश्वाख्य              | ३९      | १६६      | नवमदिनं प्रवेशाद्यत          | १२      | २४       |
| ध्वजः सिंहे तौ च गजे           | ३९      | १७१      | नवमस्थानगाः सौम्याः          | ४०      | १७       |
|                                |         |          | नवमासं तथाश्लेषां            | ४२      | १२५      |
|                                |         |          | नवमी त्रिविधा ज्ञेया         | १२      | २३       |
| न कुर्यान्मङ्गलं               | १६      | १२       | नवमे सौम्यखचरा               | २९      | ६१       |

| श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                  | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------|---------|----------|-----------------------------------|---------|----------|
| नवम्यामश्युक्षुक्षुक्षुले   | १२      | ६१       | निर्द्रितपितृसार्पाख्या           | १७      | ६        |
| नवम्यां सिंहकीटाख्या        | ४२      | ७१       | निर्द्रितिर्देवताछन्दो गायत्री    | ४२      | १५१      |
| नवर्क्षपर्यायवशाहृधूभमाद्यं | ३२      | १७६      | निर्द्रितिर्देवता त्रिष्टुष्टन्दः | ४२      | १५५      |
| नववस्त्रभृतः क्रमशो         | ४४      | २        | निर्द्रितिप्रतिमां कुर्याद्       | ४२      | १३७      |
| नवान्नभोजने मृत्युः         | ४२      | ११०      | निखिलगुणयुतस्य राजां              | ३७      | १        |
| नवान्नभोजने मृत्युः         | ४२      | ६७       | निखिलजनानां वृद्धिः               | ९       | ११       |
| नवाम्बरं सम्भृतमाशु         | ४४      | १०       | निखिलवरकला                        | २४      | २८       |
| नवांशदोषः सकलं              | ३२      | ५४       | निखिला धरणी सहिता                 | ६       | ४१       |
| नवैकादशमं दुःख              | ३९      | १३८      | निखिलान्मण्डलान्वे                | ३५      | १३       |
| नवोनवोभवत्यस्य              | ४६      | ३१       | निखिलेष्वपि धिष्ठयेषु             | १४      | ४०       |
| न सर्वराशेरुदयो विलग्नं     | ३२      | ७०       | निर्गमात्पूर्वतो न प्रवेशः        | ३२      | २३२      |
| नाक्षत्रे यो दोषो न हन्ति   | १४      | १०६      | निर्देशान्नामतो यत्र              | ४३      | ७५       |
| नागचतुष्पदतैतिलकरणे         | १९      | ५        | निधनव्ययगाः सौम्याः               | २३      | ४५       |
| नागपाशधरो देवः              | ३६      | १७       | निधनं तु प्रहराद्वे तु            | ३२      | ७७       |
| नागपाशधरो रत्नभूषणः         | १८      | ९१       | निधनं बन्धनं भीतिः                | ३९      | १८       |
| नागवीथिविचरस्म्भृगोः सुतः   | ७       | ५        | निधनाग्रिव्ययमन्मथभवने            | २३      | ३६       |
| नाडयः पञ्च मुखे गलेऽथ       | १६      | १६       | निरीक्ष्यमाणे लग्ने               | २९      | ७५       |
| नादाकारं शूर्पनिर्भं        | ४५      | १०३      | निश्यद्वात्संक्रान्तिः            | १९      | १३       |
| नानाकल्याणदाः शश्वत्        | ३९      | १४५      | निषिद्धयोगद्युनराशिजातान्         | ३२      | ३०       |
| नानाविधानि हर्ष्याणि        | ३९      | १७९      | निहन्ति मृत्युयोगं तु             | ४३      | ७७       |
| नानाविधैः सस्यविचित्रता     | ६       | ४४       | निहन्ति सिद्धामृतयोगजातान्        | २९      | ६९       |
| नानाविधोद्यानतडागवप्र       | ११      | १६       | निहितं त्रिविधोत्पातैः            | १४      | १०४      |
| नानाविधोद्यानतडागसस्य       | ६       | १००      | निःस्वं द्विर्द्वादशे नूनं        | ३९      | ५५       |
| नामनिर्देशतो यत्र चैव       | ४३      | ३        | निःस्वं स्त्रीदूषणं हानिः         | ३९      | २०       |
| नाशं ययुनृपतयोन्तगतः        | ३       | १०       | नीचगता रिपुविजिता                 | १८      | ११       |
| नाशः संपद्धुविधयशोबन्धु     | ३२      | १४६      | नीचर्क्षनीचांशकसंस्थितेऽपि        | २९      | ११       |
| नासन्त्यान्तकवहिधातृनिशिपा  | १४      | १        | नीचशत्रुगते जीवे                  | ३९      | ३१       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|----------------------------|---------|----------|
| नीचस्थिताः शत्रुगृहस्थिताश्च | २९      | ४७       | नोद्वाहयात्रोपनयनप्रतिष्ठा | १२      | ५        |
| नीचांशसंस्थिते शुक्रे        | २९      | १०       | न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्था:   | ३९      | १९४      |
| नीराजनं च कर्तव्यं           | ३३      | १८       | प                          |         |          |
| नीराजयेद्रक्षमन्त्रैः        | ३३      | ५८       |                            |         |          |
| नीहारदोषं हन्त्याशु          | ४३      | १३५      | पक्षच्छिद्रोक्तनाडीनां     | ४३      | १०१      |
| नीहारदोषो हन्त्याशु          | ४३      | ६२       | पक्षाद्विवैवेन्द्रकरेषु    | १४      | ५२       |
| नृगजाश्वपशुनां हि            | ३९      | ७९       | पक्षावर्कविकारा यो         | ४५      | १२६      |
| नृत्यगीतादिसंयुक्तः          | १२      | ५३       | पक्षोऽब्दसन्धिस्त्रिदिनं   | ३२      | १९       |
| नृपसंन्यासिविद्वांसो         | ४२      | ९०       | पङ्कविदूषितरूपः            | ९       | ३२       |
| नृपाः खराऽब्दे भुवि          | ६       | ५३       | पङ्कुयोगं निहन्त्याशु      | ४३      | ८०       |
| नृयुक्तुलामेषधटाश्विसिंहाः   | ३२      | १९२      | पञ्चगव्यामृतभ्राजत्        | ३६      | ६        |
| नेत्रयोर्मित्रलाभः स्यात्    | ४५      | १७९      | पञ्चत्वकपल्लवोपेतं         | ४५      | १९०      |
| नैपुण्यंवाहावहशिल्पसन्धि     | १३      | ४        | पञ्चत्वकपल्लवोपेतान्       | ३४      | १२       |
| नैमित्तिकमनध्यायं कृष्णे     | २९      | ३१       | पञ्चत्वकपल्लवोशीर          | ३६      | ५        |
| नैऋत्यभोद्भूतसुतः सुता       | ३२      | २३९      | पञ्चदशांशो दिवसे           | १७      | ४        |
| नैऋत्यभोद्भूतसुतः सुता       | ४२      | ११७      | पञ्चपर्वसु नन्दासु         | १२      | २०       |
| नैऋत्यभौजङ्गमगण्डदोष         | ४२      | १२२      | पञ्चपर्वसु पाते च          | १२      | २९       |
| नैवेद्यं धृतपिष्टानं         | ४६      | ४७       | पञ्चमनवमायधनस्मरणः         | १८      | ६        |
| नैवेद्यं तिलमाषानं           | ४६      | २६       | पञ्चमस्थानगाः सौम्या       | २९      | ५८       |
| नैवेद्यं पायसं साज्यं        | ४६      | २९       | पञ्चमी सप्तमी चैव          | २८      | १०       |
| नैवेद्यं मण्डकापूपं          | ४६      | ३२       | पञ्चशलाकाचक्रे             | १४      | १०३      |
| नैवेद्यं मोदकाज्यानं         | ४६      | ५९       | पञ्चाङ्गतुष्टदिवसे लग्ने   | ३७      | ८६       |
| नैवेद्यं विविधानेन           | ३५      | ३८       | पञ्चाङ्गतोषो रविसंक्रमश्च  | ३२      | २१       |
| नैवेद्यं शर्करापूप           | ४६      | ५०       | पञ्चाङ्गमन्त्रे कुशलः      | ३३      | ३२       |
| नैवेद्यं हविरप्येत्          | ४६      | ८५       | पञ्चाङ्गलग्नलग्नानंश       | २९      | ६८       |
| नैवेद्यान्ते ततः पश्चाच्     | ४५      | २४       | पञ्चाङ्गशुद्धिरहितश्       | ४२      | १०७      |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका        | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|-------------------------|---------|----------|
| पञ्चाङ्गशुद्धौ दिवसे       | ४०      | ९        | परितः स्वस्वमन्त्रैः    | ३४      | १०       |
| पञ्चाङ्गसंज्ञात्रभवः       | ३२      | ३६       | परितो जिह्वालीढः        | ९       | १८       |
| पञ्चाङ्गसंशुद्धिदिने       | ३८      | १२       | परिभवनितक्लेशैः         | ६       | ६८       |
| पञ्चादिदशपर्यन्ताः         | ३९      | १६३      | परिवेषकृतं दोषं         | ४३      | १३९      |
| पञ्चामृतैः सलेहैश्च        | ४६      | ५        | परिवेषरजोधूम            | ४५      | १२५      |
| पञ्चेष्टिके जीवशशाङ्कसूर्य | ४०      | १०       | परिवेषाह्यं योगं        | ४३      | ११२      |
| पञ्चोत्तरचत्वारिंशद्       | १       | १३       | परिवेषे चक्रयुक्ते      | ४२      | ६४       |
| पट्टं शिरसि बध्नीयात्      | ३३      | २०       | परिवेषो निहन्त्याशु     | ४३      | ६१       |
| पतिप्रिया पुष्पवती         | २४      | १४       | परेषु शुभदं गेहं        | ३९      | ५६       |
| पद्माभयकरः पद्मवर्णः       | ४६      | ४९       | परैरभिभवस्तत्र          | ४५      | १०२      |
| पद्मपूर्वदलाग्रे च         | १८      | ८४       | पलाशसमिदाज्यान्तैः      | ४५      | २०       |
| पथ्याभिलाषी निपुणः         | ३३      | ३०       | पलाशसमिधाज्यान्तैः      | ३५      | ३६       |
| पर्णस्तृणैः काष्ठवर्षेस्   | ४५      | ७७       | पलाशाश्वत्थजम्बीर       | ३३      | ४५       |
| पत्राङ्गुरलतानां च         | ४५      | १३६      | पशुप्रदा मानकरी         | ३७      | २०       |
| पर्यन्ते भवति तमो          | ९       | २५       | पश्चादुपप्लवादेव        | ४२      | १८       |
| परकृतदोषं निखिलं           | १४      | ७८       | पश्चादभ्युदिते शुक्रे   | ३७      | ९३       |
| परचक्रागमं तत्र            | ४५      | १००      | पश्चिमद्वारसहिता        | ३९      | १४४      |
| परपरुषपरा स्यादुर्भगा      | २४      | ६        | पश्चिमद्वारहीनं तद्     | ३९      | १२४      |
| परमां सिद्धिमाप्नोति       | ३६      | २४       | पश्चिमोत्तरयोः शाला     | ३९      | १३०      |
| परमोच्चगतो जीवो            | ४१      | २१       | पाद एव न शुभः           | ३२      | ७५       |
| परमोच्चगतोऽप्येको          | ४१      | ४६       | पादुकौपानहौ कार्यो      | ३९      | १८३      |
| परयोगो नृपसेवा             | २३      | ५        | पादेन दूष्यं सकलं       | ३२      | ७१       |
| परवर्गागतस्त्वेकः          | ३९      | ३०       | पादेन पादं विनिहन्ति    | ३२      | ६९       |
| पवर्गोच्चारिते प्रश्ने     | ३९      | ८८       | पानीयभे पुष्पवती        | २४      | २४       |
| परविषयविजयार्थं            | ३७      | ३        | पापग्रहैः स्वान्त्यगतैः | ३३      | ६        |
| पराद्वाङ्गेषु सौम्येषु     | ३७      | १९०      | पापयुतेक्षितरहिता       | २३      | १३       |
| परिणयनं व्रतबन्धन          | १४      | २७       | पापयोः कत्तरीकर्त्रो    | ३२      | ४६       |

| श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------|---------|----------|--------------------------------|---------|----------|
| पापविद्वाधिष्ठितभं          | ४२      | १०६      | पुनर्वसुभवो व्याधिर्           | ४६      | ३६       |
| पापषड्वर्गजो दोषो           | ३२      | ५८       | पुनर्वसोर्भाद्वशधिष्यवृन्दे    | २       | ११       |
| पापसमुत्थस्त्वशुभस्         | २३      | १७       | पुनः पुनः पञ्चमषष्ठितथ्योः     | ३२      | ६६       |
| पापांशकगते चन्द्रे          | २९      | ३०       | पुन्नागशोकतिलकशमी              | ३९      | १९१      |
| पापोऽपि लग्नाधिपतिस्        | ३२      | १२३      | पुरतो मण्डपं चास्य             | ३९      | १०६      |
| पालाशसमिदाज्यानैः           | ४५      | १४०      | पुरन्दरश्रीपतिवैश्वदेव         | ५       | २        |
| पावकदुर्गादिवसौ             | ३२      | २१८      | पुरन्दरेशयोर्मध्ये सर्व        | ३९      | १७०      |
| पिङ्गलः५१ कालयुक्तश्च ५२    | ६       | २६       | पुरुहूतादिशं पुरन्दरक्षे       | ३७      | २७       |
| पितामहक्षें सुगुणा          | २४      | ८        | पुरे जनपदे कोशे                | ४५      | ११       |
| पितामहानुसारेण              | ४२      | १७४      | पुष्टं दमनकं धूपं              | ४६      | ६२       |
| पितामहोक्तमार्गेण           | ३९      | १५१      | पुष्टस्याद्वितीयांश            | ४१      | ४५       |
| पितृद्वैवाग्निशतेन्द्रमूल   | ३२      | १७८      | पुष्टे त्वहिर्बुध्यपुनर्वसौ    | १४      | ५३       |
| पितृभे चोत्थितो व्याधिः     | ४६      | ४५       | पुष्टे धनिष्ठास्वदितौ          | १४      | ४१       |
| पितृमूलेज्यभाग्यार्क        | ३९      | २७       | पुष्टे समुत्थितो व्याधिः       | ४६      | ३९       |
| पितृवसुतिष्ठेन्द्रनल        | १४      | ८५       | पुंनाम्ने श्रवणं तिष्यः        | २५      | २        |
| पीतवस्त्रयुगं यस्माद्       | १८      | १६२      | पूजाकर्मणि सा ग्राह्या         | १२      | ४४       |
| पीताम्बरं कृष्णवर्णं        | २५      | १२       | पूजाहोमं यथा पूर्वम्           | ४५      | ८५       |
| पुच्छं तत्राडिकास्ति        | १६      | १७       | पूर्णसु पुष्टपौष्णाद्य         | ४१      | १०       |
| पुण्डरीकं१ द्वायोगं         | ४३      | २९       | पूर्णेन्दुलग्नांशकवासरेषु      | १४      | ४७       |
| पुण्यस्त्वं शङ्खु पुण्यानां | १८      | १५९      | पूर्णेन्दुशुक्रज्ञसुरेज्यवाराः | १३      | १६       |
| पुण्यं लोकमभिप्रेषुर्       | १२      | २७       | पूर्वदक्षिणयोर्नूनं            | ३९      | १३२      |
| पुण्येऽहि चन्द्रताराणां     | १८      | २२       | पूर्वद्वारविहीनं तद्           | ३९      | १२६      |
| पुत्रचूडाकृतौ माता          | २८      | ६        | पूर्वतः परतः सूर्य             | ४२      | ९२       |
| पुत्राद्यैः सह भुजीत        | ३३      | ५४       | पूर्ववत्स्वर्णगोदानै           | ४५      | ८०       |
| पुत्रीविवाहात्परतः          | ३२      | २३३      | पूर्ववदूर्ध्वं सर्वं           | ३२      | २१७      |
| पुत्रोद्वाहन्नैव पुत्री     | ३२      | २३७      | पूर्वविद्वा तु कर्तव्या        | १२      | ५५       |
| पुत्रोद्वाहन्नैव पुत्राः    | ३२      | २३१      | पूर्वं प्रवेशिकं भूत्वा        | ३७      | ४४       |

| श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| पूर्वात्रयभुजगान्त            | १४      | ८२       | पौष्णद्वये मित्रहरिद्वयेन्दु | १४.     | ७०       |
| पूर्वात्रयं स्वातीभुजङ्गरौद्र | १४      | ५०       | पौष्णे विशीला बहुदुःखशोका    | २४      | ३१       |
| पूर्वात्रये पुष्यपुर्ववसौ च   | १४      | ६२       | प्लवङ्ग ४१ कीलकः ४२          | ६       | २५       |
| पूर्वात्रये मूलमृगादि         | १४      | ४३       | प्लववर्षे निखिलजनाः          | ६       | ६५       |
| पूर्वात्रितयं पैतृभूम्        | १४      | ३१       | प्रकीर्णकामाः प्रमदा         | ६       | ३७       |
| पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु        | ३७      | ३१       | प्रकृतिः प्रयाति विकृतिं     | ६       | ५२       |
| पूर्वाद्विधिष्येषु पतिप्रिया  | ३       | १७       | प्रक्षुभ्यन्ति क्षितीशाः     | ८       | ६        |
| पूर्वाद्विङ्गेषु सौम्येषु     | ३७      | १८९      | प्रग्रहणं चेत्राच्यां        | ९       | ५८       |
| पूर्वाफालगुनिभे व्याधिरः      | ४६      | ४८       | प्रच्छकनिधनविलग्नं           | ३७      | १३       |
| पूर्वाश्चिन्योर्याम्यमैत्र    | ३२      | २०४      | प्रच्छकयात्रासमये            | ३७      | ९        |
| पूर्वाहे नृपतिभयं             | १९      | ८        | प्रच्छकलग्नादशुभो            | ३७      | ११       |
| पूर्वे लक्षणुणं दानं          | १५      | २७       | प्रच्छकलग्नाद्विमगुः         | ३७      | १४       |
| पूर्वोक्तद्रव्यसंयुक्तान्     | ४२      | १४१      | प्रच्छकविलग्नसमये            | ३७      | ५        |
| पूर्वोक्तलक्षणे कुण्डे        | ४५      | ५१       | प्रच्छन्नामररूपं धृत्वा      | ९       | १        |
| पूर्वोक्तलक्षणोपेतं           | ३५      | १५       | प्रजापतिस्त्वस्य शनेः        | १८      | ६८       |
| पृथगष्टशतं भक्त्या            | ४५      | ६५       | प्रतिचन्द्रकृतं दोषं         | ४३      | १३४      |
| पृथिव्यां यानि कार्याणि       | १२      | १५       | प्रतिचन्द्रो निहन्त्याशु     | ४३      | ६०       |
| पृष्ठो रश्मिहीनाः             | ४२      | १०१      | प्रतिपद्मधवारे च             | ४२      | १९       |
| पृष्ठोन्तता गजस्यैव           | १८      | ३०       | प्रतिपद्मबुनक्षत्रे          | ४२      | ३३       |
| पेटिकायां वस्त्रहानिः         | ४५      | १७१      | प्रतिवर्षं भक्तियुक्त्या     | १२      | ४३       |
| पैठीनसो वर्वरदेशजातः          | १८      | ७०       | प्रतिशुक्रं प्रतिबुधं        | ३७      | ९५       |
| पोषयतीश्वरवर्षे               | ६       | ३९       | प्रतिष्ठा देवतानां च         | १५      | ३३       |
| पौरन्दरे पुष्पवती             | २४      | २२       | प्रतिसूर्याह्वयं दोषं        | ४३      | १३३      |
| पौषे द्विज क्षत्रजनोपताप      | ९       | ४१       | प्रतिसूर्यो निहन्त्याशु      | ४३      | ५९       |
| पौष्णद्वयादित्यकरेज्यमित्र    | ३७      | २५       | प्रतीपगे पञ्चदशेऽथ           | ४       | ५        |
| पौष्णद्वयेन्दुश्रवणत्रये च    | १४      | ६३       | प्रत्यर्कनीहारमहेन्द्रचाप    | ३२      | २७       |
| पौष्णद्वये पैतृभयाम्यसाथ      | २४      | ४०       | प्रत्यर्कपूर्वा दशपूर्वदोषा  | ३२      | ३२       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| प्रत्यन्ते विमलतरः           | ९       | ६१       | प्रगथानं धनुषां पञ्च         | ३७      | १४०      |
| प्रत्यरिनैधनसंज्ञौ           | १४      | ७९       | प्रहरणदारुणबन्धन             | १४      | ७        |
| प्रत्येकं प्रतिमन्त्रैश्च    | १८      | १४८      | प्रहोऽम्भोजभवामरेन्द्र       | १       | १        |
| प्रदक्षिणां व्रजन्त्यध्यान्  | ३४      | १९       | प्राकारं तोरणादीनि           | १५      | १६       |
| प्रथमदिने वत्सरतः            | २०      | १        | प्राकारोद्धरणं सर्वं         | १६      | ९        |
| प्रथमरजोदर्शनतः              | २४      | ४        | प्राकृतमित्रसंक्षिप्तं       | ५       | ८        |
| प्रथमा मेखला तत्र            | १८      | २६       | प्राककुण्डं गजवक्त्रस्य      | ३५      | ३३       |
| प्रबला अपि दोषास्ते          | ४३      | ७०       | प्राकपश्चिमस्थौ सुरदानवेज्यौ | ७       | १४       |
| प्रभवोऽ विभवः २ शुक्लः ३     | ६       | २१       | प्राक्सौम्ययोर्द्विशाला सा   | ३९      | १३१      |
| प्रभञ्जनं महायोगं योगः       | ४३      | ५२       | प्रागभागे मन्दिरस्याथ        | ३३      | १२       |
| प्रभञ्जनो महायोगो            | ४३      | १२५      | प्रागद्वारसहिता सा च         | ३९      | १४२      |
| प्रभाकरस्योदयनात्            | १३      | ११       | प्रागादिक्षु द्विपदाः        | ३९      | २०८      |
| प्रभूतदोषं यदि दृश्यते       | २४      | ३६       | प्रागुत्तरदिशि यदि           | १०      | ३४       |
| प्रभूतवायुर्भूवि मध्य        | ११      | १४       | प्रागुद्गतोऽहस्त्रितयं शिशुः | ३२      | १२       |
| प्रमाणमाहुतेश्वात्र          | १८      | १२९      | प्रागेव प्रग्रहणं कृत्वा     | ९       | ५९       |
| प्रमोदवर्षे सुजना            | ६       | ३२       | प्राग्रेखामध्यमं कुण्डं      | ३५      | १४       |
| प्रयाणसमये यस्य              | ३७      | ४०       | प्राङ्मुखोदण्मुखो भूत्वा     | ३३      | ४०       |
| प्रलयानलसदृशाभा              | १०      | १९       | प्राच्यां भृगुर्भोजकटे       | १८      | ६१       |
| प्रवेशकाले यदि रौद्रभस्य     | २       | ९        | प्राणरूपो हि जगतो            | १८      | ९३       |
| प्रवेशलग्नान्निधनस्थितो      | ३८      | १९       | प्राणरूपो हि यो लोकान्       | ३६      | १८       |
| प्रवेशे स्वगृहे ग्रामे       | ३७      | ९६       | प्रायश्चित्तं चिकित्सां च    | ३२      | २४४      |
| प्रशस्ता प्रतिपत्कृष्णा      | २९      | ३२       | प्रालेयकुन्दकुमुदामलपुण्डरीक | ३       | २२       |
| प्रश्नेत्युच्चारिते वेधे     | ३९      | ९२       | प्रालेयरश्मौ यदि लग्नसंस्थे  | ३१      | ३        |
| प्रश्नेऽप्युच्चारिते यत्र    | ३९      | ९१       | प्रालेयरश्मौ यदि लग्नसंस्थे  | २९      | ४५       |
| प्रसार्य प्राञ्जलिः साक्षाद् | ४६      | ९३       | प्रासादो वाथ सौधो            | ३९      | ११४      |
| प्रसिद्धा रुद्रसूक्तस्य      | ४२      | १४४      | प्रासादो वाथ सौधो            | ३९      | ११७      |
| प्रस्तारं यन्मनोरम्यं        | ३९      | १५०      | प्रासादो वाथ सौधो            | ३९      | १६०      |

| श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका        | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------------|---------|----------|-------------------------|---------|----------|
| प्रासादो वाऽथ सौधो              | ३९      | ११८      | बला अखिलमृगाणां         | २०      | ११       |
| प्रासादो वाऽथ सौधो              | ३९      | ११३      | बलाधिकः सौम्यनभश्चरो    | ३२      | १२५      |
| प्रासादो वाऽथ सौधो              | ३९      | ११६      | बलिनं गुणसम्पन्नं       | ४३      | १०       |
| प्रासादो वाऽथ सौधो              | ३९      | १११      | बलिनः केन्द्रगाः सौम्या | ४१      | २९       |
| प्रासादो वाऽथ सौधो              | ३९      | ११५      | बलिं तत्र प्रदातव्यं    | ४६      | ६९       |
| प्रासादो वाऽथ सौधो              | ३९      | ११२      | बले नृनार्योरिनजीवयोश्च | ३२      | १३२      |
| प्रीतिर्नृनार्योरतुलैक्यजात्यां | ३२      | २११      | बहव्वर्षदानैश्च तदोषं   | ४५      | १०७      |
| प्रीतिर्बुद्धिः सुगुणनिरति      | ३२      | १४८      | बहुधान्यः १२ प्रमाथी च  | ६       | २२       |
|                                 |         |          | बहुधान्याब्दे सततं      | ६       | ४०       |
|                                 |         |          | बहुरोगभयं कुरुते        | १०      | ३७       |
| फ                               |         |          | बहुवृष्टिभिरखिलधरा      | ६       | ९६       |
| फलपाको भवेदष्टमासै              | ४५      | ३६       | बहुव्ययकरी सैव          | ३९      | १४९      |
| फलसिद्धिर्धिष्यगुणै             | ३७      | १५०      | बहुसुतधनधान्यप्रोल्ल    | २४      | २६       |
| फलिनीबकुलाजातिर्                | १८      | १०८      | बहुसुतधनसंपच्छील        | २४      | ५        |
| फाल्मुनमासे वृद्धिः             | ६       | ६        | बाह्लीकखशवङ्गाङ्गेषु    | १९      | २४       |
| फाल्मुनाद्यत्रयोदश्यां          | १२      | ४८       | बीजवापं गृहोत्साहं      | १५      | ३५       |
|                                 |         |          | बीजवापं धनग्राहम्       | १५      | ११       |
| ब                               |         |          | बीजवापं धनग्राहं        | १५      | १९       |
| बन्धनं छेदनं चैव                | १५      | ३१       | बुधगुरुसितचन्द्राहे     | १९      | २        |
| बन्धनं रोधनं चैव                | १५      | २१       | बुधराशिगते चन्द्रे      | २३      | ३१       |
| बन्धुस्थाश्चन्द्रयुताः          | ३२      | १५६      | बुधवारे भवेद्व्याधिः    | ४६      | १०८      |
| बन्धूकपूगपनससरोज                | ३९      | १९२      | बुधवासे सुरेज्येन्दु    | ४१      | १४       |
| बन्धूरगं श्वैणमिभेन्द्रसिंह     | ३२      | १८३      | बुधेज्ञानी गुरौ भोगा    | २७      | ८        |
| बलप्रदस्य ग्रहवासरे             | १३      | १५       | बुधो लग्नगतो जीवः       | ५       | १        |
| बलप्रदास्य खेटस्य               | ३७      | ८०       | बृहस्पते अतियदर्यो      | २९      | ५५       |
| बलयुक्तैः शुभखचरैर्             | २३      | २६       | बृहस्पते अतीत्यस्य      | १८      | ५८       |
| बलवति दितिजगुरौ                 | २३      | २४       |                         | ४६      | ४०       |

| श्लोकानुक्रमणिका                  | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------------|---------|----------|--------------------------------|---------|----------|
| ब्रह्मणः पूर्वतो दिक्षु           | ३९      | २०६      | भगद्वितयादितिभद्वितयैः         | ५       | १०       |
| ब्रह्मत्वं कुम्भपूजायां           | १८      | १५३      | भङ्गोऽस्य पौष्णक्षर्गते दिनेशो | २       | १३       |
| ब्रह्मदण्डं महायोगं               | ४३      | ४९       | भचक्रभ्रमणात्स्थूल             | ४१      | ३        |
| ब्रह्मदण्डं महायोगं               | ४३      | ५१       | भचतुष्कं वह्निधिष्याद्         | ४२      | ५९       |
| ब्रह्मदण्डाह्यो योगो              | ४३      | १२२      | भद्रभक्तं च भद्राग्नेः         | ४३      | १४३      |
| ब्रह्मदण्डाह्यो योगो              | ४३      | १२४      | भद्रास्वदितिदैत्येज्ये         | ४१      | ७        |
| ब्रह्माणी कौमारी वाराही           | ३२      | २१६      | भद्रितयं श्वसनसखं              | १४      | ३४       |
| ब्रह्मा तु देवता तत्र             | ४६      | १०३      | भरणीचित्रविश्वाख्य             | ४२      | ९        |
| ब्रह्मादिदिक्षु प्रत्येकं         | ४५      | १५३      | भरण्यामुत्थितो व्याधिः         | ४६      | २०       |
| ब्रह्मेज्यार्थमवैशाख              | ४२      | ३        | भल्लातको देवादारुः             | ३३      | ४८       |
| ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्         | ४२      | १६९      | भवदशमाद्यकलत्रिषट्सु           | १८      | ३        |
| ब्राह्मणान्वरयेत्पश्चात्          | ४२      | १३८      | भवनादिगतौ फलदौ                 | १८      | १५       |
| ब्राह्मणास्तत्त्वसंख्याकान्       | ३५      | २०       | भवनान्त्यगताश्च यदा            | १८      | १३       |
| ब्राह्मणाय ततो दद्यात्            | ४५      | १९३      | भवरिपुसहजैः पापैस्             | २३      | ४२       |
| ब्राह्मणेभ्यो जापकेभ्यः           | ३४      | २१       | भवरिष्के सौम्येषु              | ३७      | २१३      |
| ब्राह्मणेभ्यो विशिष्टेभ्यो        | ४५      | १५१      | भ्रष्टेत्सुकः कर्मगतैर्        | ३३      | ७        |
| ब्राह्मं च दिव्यं मनुपित्र्यमानं  | ११      | १        | भाग्ये भाग्यवती                | २४      | १५       |
| ब्राह्मे पर्वणि सम्यग्            | ९       | ९        | भाण्डीरकरवीराम्लै              | ३३      | ४२       |
| ब्राह्मोद्भावः कायदैवार्षसंज्ञाश् | ३२      | १६९      | भाद्रपदेऽब्दे षण्डास्          | ६       | १२       |
| ब्राह्मो विवाहस्तज्जातः           | ३२      | १७०      | भानां यदा सौम्यगतस्            | ३       | १५       |
| ब्रूयात्प्रत्यङ्गमुखो राजा        | ३३      | २१       | भानां यदा सौम्यगतिः            | ६       | १४       |
|                                   |         |          | भानुवारादिर्भिर्युक्तास्       | ४२      | १५       |
| भ                                 |         |          | भानुवारादिसम्भूतान्            | ४३      | १०२      |
| भक्त्याष्टशतं जुहुयाद्            | ४५      | १४८      | भानुवारे च संक्रान्तौ          | ३५      | ८        |
| भगवासवमाषाढे                      | ४२      | ७५       | भानोरुदयास्तसमये               | २       | २१       |
|                                   |         |          | भान्तरालकृतं दोषं              | ४३      | ८९       |

| श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका               | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------|---------|----------|--------------------------------|---------|----------|
| भोगप्राप्तिर्विधविभवः     | ३२      | १५०      | भौजङ्गपौरन्दरपौष्णभानां        | ४२      | १२०      |
| भित्तिः पक्वेष्टकाभिवा    | ३९      | १८८      |                                |         |          |
| भिनति योगतारां च          | ४       | ११       | म                              |         |          |
| भिनति रोहिणीचक्रं         | ७       | १२       | मकरस्थोगुरुर्गावः              | ४६      | ९०       |
| भिनति वेधकृद्ग्रहो        | ३२      | ७४       | मकरादिराशिषट्कम्               | २       | २        |
| भुवि रसनिचयाः सर्वे       | ११      | ३४       | मधाविशाखानलम्भुसार्प           | १४      | ७१       |
| भूतप्रेतपिशाचेषु          | ४५      | १२२      | मधाविशाखानलसार्पयाम्य          | १४      | ४९       |
| भूदेवभूमीशनिमित्तोऽपि     | १४      | ६८       | मञ्जिकां पायसं साज्यं          | ३७      | ११९      |
| भूदेवसंघोऽध्वरतत्परश्च    | ११      | १५       | मण्डकागुडसंयुक्तम्             | ४६      | ४१       |
| भूपतेर्यस्य सन्त्यश्चाः   | ३४      | १        | मण्डपस्य वहिः कुण्डं           | ३४      | ६        |
| भूपसंक्षोभसम्भूत          | ६       | ५१       | मण्डलं चतुरस्त्रं तु           | ३६      | ३        |
| भूमिपुत्रो महातेजा        | १८      | १३९      | मणिनिधिमोकः सदृश               | १४      | ९६       |
| भूमिभवा भौमाः स्युश्      | १०      | ४        | मदृहे धनधान्यादि               | ३९      | २२०      |
| भूमिसुतः फालुन्योरुदयं    | ४       | ७        | मद्ये वाहननाशः स्याच्          | ४५      | ५८       |
| भूरिभूतिनाशिनी            | ३७      | २१       | मधुच्छन्द ऋषीन्द्रागनी         | ४६      | ६४       |
| भूषणमङ्गलकार्यम्          | २३      | ६        | मधुपर्कादिकं कुर्यात्          | ३५      | १८       |
| भूसुते स्वोच्चगे लाभे     | ३७      | १८३      | मधुपर्णो भोगयुक्तः             | ४६      | ४३       |
| भृगुतनये राहुगते          | ९       | ३७       | मधुपृष्ठतिलाज्यान्त्रं         | ४६      | ५६       |
| भृगुवारे भवेद्वयाधिः      | ४६      | ११०      | मधुरं कटुकं त्वम्लं            | ३९      | ४        |
| भृगुषट्काख्यो दोषो        | ३२      | ६३       | मधुवल्मीकजच्छत्र               | ४५      | ११२      |
| भृगोर्लाङ्गे भृगोर्वर्गे  | ३७      | १००      | मध्यनाडी पतिं हन्ति            | ३२      | १८९      |
| भेरुण्डपिङ्गलककाक         | ३२      | २१४      | मध्यमरेखानियतं                 | ७       | १        |
| भेषजपात्रविद्याविवाहशिल्प | १४      | १४       | मध्यमसस्यक्षितितल              | ११      | ३१       |
| भौमवारे भवेद्वयाधिः       | ४६      | १०७      | मध्यंदिनगते भानौ               | ३२      | २२६      |
| भौमास्तु तुच्छफलदाः       | ४५      | ७        | मध्याद्विनिर्गतैः सूत्रैश्     | ३५      | १०       |
| भौमे स्वराशिगे लग्ने      | ३७      | १८५      | मध्यानि सस्यानि विचित्रवृष्टिः | ११      | १७       |
| भौमं शान्त्या शमं याति    | ४५      | ८        | मध्ये तमसाविष्टं वितमस्कं      | ९       | २४       |

| श्लोकानुक्रमणिका        | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका         | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-------------------------|---------|----------|--------------------------|---------|----------|
| मध्ये नवपदो ब्रह्मा     | ३९      | २१३      | महाशूलाहृयो योगः..       | ४३      | २०       |
| मनस्थिते मूलफलं         | ६       | १९       | महाहालाहलं योगं          | ४३      | १०५      |
| मन्त्रेण च चरुं हुत्वा  | ४५      | ७२       | महिषखरकरभाणां            | २३      | ४४       |
| मन्त्रेणानेन रेवन्तं    | ३४      | ९        | महिषीनायकारूढ़ं          | ४६      | २३       |
| मन्त्रेणदं विष्णुरिति   | १८      | ५५       | महीभृता पञ्चमपञ्चमेऽहिं  | १४      | ६६       |
| मन्त्रिण शशाङ्कतनये     | ११      | २१       | महेशभे पुष्पवती          | २४      | १०       |
| मन्त्रेणोत्तानपर्येण    | १८      | ६४       | महोपहाराद् रुद्रस्य      | ४५      | ९        |
| मन्त्रोऽनिदूतमित्यस्य   | १८      | ४४       | मागधं सूरसेनाख्यं        | ३९      | १७४      |
| मन्त्रं तु अम्बकं चास्य | १८      | ४२       | माधे कृष्णचतुर्दश्याम्   | १२      | ४६       |
| मन्दफला निखिलधरा        | ११      | २४       | माधे तु पञ्चमी षष्ठी     | ४२      | ८३       |
| मन्दिराणामष्टविधं       | ३९      | १७३      | माधेऽर्थलाभः प्रथमप्रवेश | ३८      | ८        |
| मन्वन्तरादितिथयः        | १२      | ३५       | माधे सस्यविवृद्धिर्      | ६       | ५        |
| मर्माणि सन्धयो ज्ञेयाः  | ३९      | २५       | माङ्गल्योत्सवपानादि      | १६      | ६        |
| मरकतमणिपीतश्चेद         | ९       | ३०       | माणिक्यशङ्कुकनक          | ५       | १७       |
| मरणं तत्तदीशानां        | ४५      | ६८       | मातङ्गराक्षसाह्य         | २१      | १०       |
| मस्तके चेन्द्रलुप्ते    | ४५      | १८७      | मातुलुङ्गजपात्वष्टै      | १८      | ११०      |
| महर्षिभिः शास्त्रवितर्क | ३२      | २४१      | मातृगण्डसुते ताते        | ४२      | १२८      |
| महाकुलिकयोगश्च          | ४३      | २६       | मानं विधातुः खलु         | ११      | २        |
| महाकुलिकयोगं तु         | ४३      | ९९       | मायाविनी कार्पटिका       | २४      | ११       |
| महागणितमार्गस्थो        | ४२      | ७३       | मार्जनं कारयेत्स्य       | ४६      | १२       |
| महागणितमार्गण           | ३७      | ८४       | मालिकां कटिसूत्रं च      | १५      | ३२       |
| महाप्रभञ्जनं दोषं       | ४३      | १४०      | माषमुद्घतिलात्रेन        | ४६      | ९८       |
| महापातौ वैधृतिश्च       | ४२      | ९४       | मासदग्धासु तिथिषु        | १२      | २६       |
| महायोगो निहन्त्याशु     | ४३      | ८२       | मासप्रधानाखिलमेव         | २       | ७        |
| महारोगाभितप्तो वा       | ४५      | १३८      | मासान्तदोषस्त्वचिराद्    | ४३      | १८       |
| महाशिरो महाववत्रो       | १८      | १४४      | मासान्ते त्रिदिनं दोषो   | ४३      | ९१       |
| महाशूलाहृयं योगं        | ४३      | ९४       | मासि भाद्रपदे यस्मिन्    | १२      | ६०       |

| श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------------|---------|----------|-------------------------------|---------|----------|
| मासि भाद्रपदे शुक्ले            | १२      | ५९       | मुञ्चन्ति देवताः सर्वाः       | ४६      | १०५      |
| मासि मार्गशिरस्यैव              | १२      | ४१       | मुहूर्तं शक्तितोऽन्येषां      | ३७      | १५१      |
| मासि मास्ययने चन्द्र            | १८      | २१       | मुहूर्तश्शाष्टमः शश्वद्       | ४१      | ५१       |
| मासे तपस्ये तपसि                | ४०      | २        | मूलकमीखिलं धातु               | १६      | १०       |
| मासे तपस्ये तपसि                | ३९      | ४१       | मूलत्रिकोणर्क्षगतस्           | ३२      | ११९      |
| मासे मासे मासपादि               | २५      | ५        | मूलत्रिकोणगाः पापास्          | ४१      | ४९       |
| मासेषु चोर्जादिषु               | ६       | १        | मूलत्रिकोणगाः सौम्याः         | ४१      | ४८       |
| माहिषोष्ट्रश्वगोहस्ति           | ४५      | ४७       | मूलत्रिकोणस्वगृहोच्च          | ३३      | २        |
| मित्रर्क्षगो मित्रनवांशगो वा    | ३२      | ११५      | मूलहर्युत्तराभाद्र            | ४१      | १९       |
| मित्रत्वे मित्रत्वं शत्रुत्वे   | ३२      | २२३      | मूलाद्यपादजनितः               | ४२      | १२१      |
| मित्रत्वं लेपनं चैव             | १५      | १०       | मूलाद्यपादो दिवसे             | ४२      | १२९      |
| मित्रभे चोथितो व्याधिः          | ४६      | ६६       | मूलाद्यपादो यदि रात्रिभागे    | ४२      | १३०      |
| मित्रराशिगतो जीवो               | ४१      | २४       | मूलाय स्वाहा प्रजापतये        | ४२      | १५७      |
| मित्रवर्गिते सौम्ये             | ३७      | १८७      | मूलाश्लेषातारयोः              | ३२      | २०५      |
| मित्रविरोधः सततं                | ५       | १३       | मूले प्रकामाऽधिक              | २४      | २३       |
| मित्राधिमित्रोच्चवृहांशजाता     | ३२      | १०३      | मूले मद्राधिपतिं कलिङ्गं      | १०      | ४७       |
| मित्राधिमित्रस्वक्षेत्रसंस्थे   | २९      | ७८       | मृगगणा मध्ये सिंहं            | १४      | ८०       |
| मित्राधिमित्रस्वगृहोच्चमूल      | ३२      | ११२      | मृगपक्षिविकारेषु              | ४५      | ११४      |
| मित्रेन्दुपौष्णोत्तररोहिणीषु    | १४      | ४५       | मृगसिंहौ तृतीयायां            | ४२      | ७०       |
| मित्रं मानससंज्ञः पद्माख्यो     | २१      | ९        | मृगादिष्ट्राशिषु संस्थितेऽकें | ३८      | १८       |
| मिलित्वा स्त्रुक्स्त्रुवं तत्र  | १८      | १५१      | मृगेन्द्रमध्यमांशस्थे         | ४२      | २८       |
| मीनांशके भर्त्सुतार्थहीन        | ३२      | ५१       | मृगेन्द्रसंस्थिते जीवे        | ४२      | २६       |
| मुक्ताम्बुशङ्कुस्फटिकेक्षुरौप्य | १३      | २        | मृतिका वृषशृङ्गं च            | ३३      | १५       |
| मुकुरोपरि निशासानीलसदृशं        | ९       | २३       | मृत्युन्नगव्यसद्वीज           | ४६      | ८        |
| मुखान्ते चार्चयेत्साधि          | १८      | १०२      | मृत्युतुल्यं महादोषं          | ४३      | ९८       |
| मुखं यः सर्वदेवानां             | ३६      | १४       | मृत्युर्नेस्वं बहुविधधनं      | ३२      | १४५      |
| मुख्योऽप्रजानां ग्रहमित्रवर्गः  | ३२      | २२४      | मृत्युवारुणसूक्तैश्च          | ४५      | १४९      |

| श्लोकानुक्रमणिका                    | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-------------------------------------|---------|----------|-----------------------------|---------|----------|
| गृत्युः शोको बहुविधधनं              | ३२      | १४७      | यच्छेषं तत्पुनर्द्विघ्नं    | ११      | ४६       |
| मृदुध्वक्षिप्रचरेषु                 | १४      | ४६       | यजमानाभिषेकार्थं            | १८      | १३४      |
| मृदुध्वक्षिप्रचरेषु                 | २७      | २        | यज्जलबन्धनमोचन              | २३      | १२       |
| मृदुध्वक्षिप्रचरेषु                 | १४      | ५५       | यज्ञक्रिया पौष्टिकमङ्गलानि  | १२      | १७       |
| मृदुध्वक्षिप्रभेषु                  | ३९      | ६९       | यज्ञक्रियामङ्गलपुष्टिविद्या | १३      | ५        |
| मृदुवृन्दं भचतुष्यम्                | १४      | ३३       | यत्कर्म कथितमृक्षे          | १७      | ५        |
| मृदुवृन्दे कथितान्यपि               | १४      | ३७       | यत्त्राशिकृतं यत्तच्        | ४२      | १०३      |
| मेघातिथिर्जगत्यग्निः                | ४६      | २५       | यत्त्रयंशमाद्यत्रय एव       | ३२      | १३९      |
| मेघोपग्रहदोषे निर्धात               | २१      | ३        | यत्र स्वेच्छगते लग्ने       | ३७      | १६९      |
| मेषगते सुरसचिवे                     | ६       | ८९       | यत्रार्कगुर्वोरपि नैधन      | ३२      | १३३      |
| मेषगे भास्करे षष्ठे                 | ३७      | १८४      | यत्रार्द्धरात्रसंयुक्ता     | १२      | ४७       |
| मेषवृषोक्तं कर्म गज                 | २३      | ३        | यत्रैकादशगे चन्द्रे         | ३७      | १६७      |
| मेषसिंहश्वचापभसंस्थे                | ४       | १४       | यत्रैकादशगे सौम्ये          | ३९      | ३७       |
| मेषादिमीनपर्यन्तं                   | ३७      | २९       | यथा ग्रहाणां तीक्ष्णांशुः   | १८      | १७७      |
| मैत्रध्वक्षिप्रचरेषु भेषु           | २६      | ४        | यथा दैत्या हता देवैस्       | ४३      | ७४       |
| मैत्रविश्वाम्बुवाय्विन्दु           | ४२      | २        | यथा पीयुषयोगाख्यं           | ४३      | २१       |
| मैत्राख्यसंक्रदनपौष्णभेषु           | ८       | २        | यदन्तरालं पितृसार्पधिष्ये   | ३२      | ६४       |
| मैत्रीकरणं मित्रभमतिमैत्रं          | २०      | ७        | यदस्य कर्मण इति             | १८      | १४९      |
| मैत्रे विमित्रा सगदा                | २४      | २१       | यदा कृष्णत्रयोदश्यां        | १२      | ३७       |
| मोषुणस्त्विवतिमन्त्रेण              | १८      | ९०       | यदा प्रतीपगौ खेटौ           | ७       | १७       |
| मोषुणस्त्विवतिमन्त्रेण              | ४२      | १५०      | यदा यत्र प्रवेशः स्यात्     | ३२      | ३९       |
| मौड़ीबन्धः शास्यते                  | २९      | २        | यदा यदा गजानां च            | ३५      | ७        |
| मौनी मूत्रपुरीषे तु                 | ३३      | ३९       | यदा वक्रौ गुरुसितौ          | ४२      | २४       |
| म्लेच्छान्सुराश्रांश्च कलिंगवङ्गान् | ९       | ४९       | यदैकगोत्रे कलहस्            | ३२      | २१३      |
| य                                   |         |          | यदिङ्मुखो वास्तुपुरुषः      | ३९      | ६०       |
| यच्छेषं तत्पुनर्द्विघ्नं            | ११      | ४८       | यद्यद्वारणभोक्तं तत्        | १४      | ३८       |
|                                     |         |          | यद्यद्वारं मन्दिरं          | ३८      | १७       |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका                | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|---------------------------------|---------|----------|
| यद्युपसूर्यकमस्यां         | २       | २२       | यस्मिन्मुहूर्ते जनितः           | २६      | १        |
| यद्येकस्मिन्मासे           | ९       | १३       | यस्मिन्वारे दुमुहूरतलग्नं       | ३७      | १२       |
| यद्वास्तुपूजारहितं         | ३८      | २३       | यः क्षीणचन्द्रोन्त्यषडष्टसंस्थः | ३८      | २०       |
| यममैत्रादितिभाजपाद्        | ४२      | २३       | यः कर्त्तरी नाम महान्           | ३२      | ४४       |
| यमं यजेद्याम्यदले          | १८      | ८८       | यः कर्मसाक्षी लोकानां           | ३६      | १५       |
| यमे तृतीयगे लाभे           | ३७      | २२३      | यः पापखेटोद्ववसग्रहाख्यो        | ३२      | ४१       |
| यमोऽधिदेवता पूज्या         | १८      | ६७       | यः पापषड्वर्गमहान्स दोषः        | ३२      | ५७       |
| यवर्गोच्चरिते प्रश्ने      | ३९      | ८९       | यः सिद्धियोगो विनिहन्ति         | ३२      | १२६      |
| यस्मात्त्वं छाग यज्ञानाम्  | १८      | १६८      | या चैत्रवैशाखसिततृतीया          | २९      | ३९       |
| यस्मात्त्वं पृथिवी सर्वा   | १८      | १६४      | यात्राभेषजभूषण                  | १४      | २        |
| यस्मादशून्यं शयनं          | १८      | १६९      | यात्रायां कर्तृनाशः             | ४२      | १११      |
| यस्मादायसकर्माणि           | १८      | १६५      | यात्रायां यस्य वा शुक्रः        | ३७      | ३७       |
| यस्माद्रत्नप्रदानेन्       | १८      | १६६      | यात्रायां शकुनं यस्य            | ३७      | ४३       |
| यस्माद्विना भूमिसुतस्य     | ४       | १        | यात्रालग्नस्य केन्द्रेषु        | ३७      | ९०       |
| यस्य ग्रहस्यैव च वासरे     | १३      | १४       | यात्रालग्नेऽर्कसंक्रान्ति       | ३७      | ८८       |
| यस्य नरस्य हि जन्मनि       | २२      | ४        | यात्रा सम्पूर्णफलदा             | ३७      | ७९       |
| यस्य राज्ञो गजाः सन्ति     | ३५      | १        | यात्राहवेऽप्युत्कटभूषिते        | १४      | ६७       |
| यस्य वै जन्मनक्षत्रे       | ३६      | १        | यात्रेष्टसिद्धिदार्केन्दो       | ३७      | ६१       |
| यस्याभिषेके पुरुहूतमन्त्री | ३३      | ९        | यामत्रयाधिकां यत्र              | १२      | ७१       |
| यस्यास्तु लग्ने तदधीश्वरे  | ३२      | ८३       | या मासदाधास्तिथयो               | ३२      | २६       |
| यस्मिङ्याद्वे विरला        | ६       | ५६       | याम्यपश्चिमयोर्नुं              | ३९      | १२९      |
| यस्मिन्द्वारनक्षत्रे       | ४       | १०       | याम्यपश्चिमयोरेव                | ३९      | १३३      |
| यस्मिन्दर्शस्यान्ताद्      | २       | ५        | याम्यायामभिषिनचन्तु             | ३३      | २२       |
| यस्मिन्थिष्ये यदा नृणां    | ४६      | २        | याम्यायां दिशि संस्था           | १०      | १५       |
| यस्मिन्थिष्ये यः प्रभवति   | २२      | ७        | याम्यायां दिशि संस्थाः          | १०      | १७       |
| यस्मिन्थिष्ये विपति        | २२      | ५        | याम्ये गतः शक्तिगदा             | १८      | ४९       |
| यस्मिन्लाद्वे विलयं        | ६       | ७८       | याम्ये म्लेच्छाधिपतिं           | १०      | ४२       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| या लक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थं   | १८      | १७३      | योऽसौ निधिपतिर्देवः          | . ३६    | १९       |
| यायिनां विजयस्तत्र           | ३७      | ५८       | योऽसौ वज्रधरो देवः           | ३६      | १२       |
| युग्मपत्रं महापत्रं          | ३९      | ६७       |                              |         |          |
| युग्मांशलग्ने बलयुक्त        | २४      | ४४       | र                            |         |          |
| युग्मेषु मासेषु च षष्ठमासात् | २७      | १        | रक्तगन्धं कुङ्कुमं च         | ४६      | ५५       |
| युद्धयन्ति क्षितिपतयः        | ६       | ८२       | रक्तचन्दनगन्धोऽत्र           | ४६      | १००      |
| युद्धे भटप्रतिभटा            | ६       | ८५       | रक्तचन्दनजम्बीर              | १८      | ११२      |
| युद्धोपकरणभूषण               | २३      | ११       | रक्तचन्दनबिल्वाम्र           | ३९      | ६६       |
| युवतीकरसंग्रहणं              | १४      | ११       | रक्तवर्णं श्यामकेशं          | ३७      | १२८      |
| ये चान्यसामान्यगुणाः         | ३२      | ११४      | रक्तवृष्टौ रणोद्योगो         | ४५      | ७५       |
| येनोक्तमेकं दिवसं            | ३२      | १४       | रक्ताक्षिवर्षे सततं          | ६       | ८६       |
| ये पापखेटप्रभवाश्            | २९      | ७९       | रक्तः सूर्यः शरदि            | २       | २५       |
| ये पार्थिवेन्द्रा विलयं      | ६       | ४७       | रक्तो रविगाँरनिभः            | १३      | १७       |
| ये मण्डनाध्यायगुणापवादा      | ४३      | ६९       | रक्षोगणाधिपः साक्षात्        | ३६      | १६       |
| ये मासदग्धादिदशैव दोषा       | ३२      | ३१       | रक्षोयक्षादिसत्वानां         | ४५      | १३३      |
| ये लग्नदोषाः कुनवांशदोषाः    | ३२      | १३०      | रजतेन सशुद्धेन               | ३७      | १०१      |
| योगत्रयं वर्जनीयं            | ४२      | २९       | रत्ननिभं तोरणवत्             | १४      | ९७       |
| योगलग्नयुता राज्ञां          | ३७      | १५३      | रत्नमालाह्रयं योगं           | ४३      | ३९       |
| योगस्य सप्तविंशांशो          | १५      | ४०       | रथाश्वहेमाम्बरलोहकारा        | ६       | ७७       |
| योगातियोगः केन्द्राङ्क       | ३७      | २१६      | रविचन्द्रसुरेज्ययमाः         | १४      | ८९       |
| योगान्तरालकं दोषं            | ४३      | ९०       | रविभादहिपितृमित्र            | २१      | ५        |
| योगान्तरालदोषो यः            | ४३      | १७       | रविरविजभौमवारे               | १४      | ९१       |
| योगान्तिकगतिरतुला            | ५       | ११       | रविरविजभौमवारे               | १९      | १        |
| योगीशः पुण्डरीकाक्षः         | २५      | १६       | रविः स्थायी शशी यायी         | ३७      | ५६       |
| यो जानाति हि पञ्चाङ्गं       | १२      | ७५       | रवेः समो ज्ञः सितसूर्यपुत्रा | ३२      | १९७      |
| योनिश्च पश्चिमे भागे         | १८      | २९       | रवौ लग्ना केन्द्रस्थे दोषाः  | २९      | ४९       |
| योऽसाविन्दुधरो रुद्रः        | ३६      | २०       | रसनाथे देवगुरौ               | ११      | ३६       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| रसेश्वरे सूर्यसुते           | ११      | ३८       | रिक्तासु शत्रोवधबन्धशस्त्र   | १२      | ८        |
| राक्षसाम्बुपयोर्मध्ये        | ३९      | १६८      | रिक्तास्वमायां बुधभौमवार     | ३३      | ५        |
| राजराष्ट्रविनाशाय            | ४५      | १२४      | रिक्तास्वीज्यद्विदैवेन्द्र   | ४१      | ९        |
| राजराष्ट्रविनाशः             | ४५      | ४८       | रिपुवधभेदनदहन                | १४      | १९       |
| राजराष्ट्रविनाशः             | ४२      | ३९       | रुद्रस्य भालनेत्राग्नि       | १६      | १३       |
| राजसर्षपमुस्तं च             | ३३      | १६       | रुद्रसार्पाम्बुनैरूर्धत्य    | ४२      | ४        |
| राजाभिषेकोत्सवमङ्गलाश्च      | १३      | १        | रुद्रेण पुरुषसूक्तेन         | ३५      | ३१       |
| राजान्यत्वं च कुर्वन्ति      | ७       | १८       | रुक्षः क्षुद्रयदायी          | १०      | २६       |
| राजालोकनसमये                 | १८      | १६       | रुपादिवलसम्पूर्णा            | ४२      | १००      |
| राजीवकुन्दमुकुल              | १८      | १११      | रुपोपजीवाखिलपण्यजीवि         | ९       | ४४       |
| रात्रादौ तज्जलौः पूर्य       | ३९      | ५        | रेखामेकामूर्ध्वगां षट्       | १५      | ७        |
| रात्रिचरात्रिशिसमये          | १९      | ९        | रेखाश्चोर्द्धा: पञ्च तिर्यक् | ३२      | ८        |
| रात्रिमुहूर्तस्त्वजपाद्      | १७      | ८        | रेवतीद्वयहस्तेन्दुधातृमित्र  | ४१      | १६       |
| राज्ञौपकरणवाहनमङ्गल          | ३७      | ६        | रेवन्तपूजामन्त्रेण           | ३४      | १५       |
| रात्रौ जागरणं कुर्यात्       | ४५      | ४२       | रेवन्तपूजामाचार्यः           | ३४      | १३       |
| राशिकूटतदधीश                 | ३२      | २२५      | रोगभयं समुदाये               | २२      | १२       |
| राशिकूटादिकं सर्वं           | ३९      | ५४       | रोगशान्तिं प्रवक्ष्यामि      | ४६      | १        |
| राशीनेकं द्वाविनाक्रान्तराशे | ३७      | ३९       | रोगादस्माच्च मां त्राहि      | ४६      | १०२      |
| राष्ट्रभङ्गं वदेच्छीघ्रं     | ४५      | ५५       | रोगादस्माच्च मां रक्ष        | ४६      | १४       |
| राष्ट्रविद्रावणं बाल         | ४५      | ५७       | रोगादिरित्यन्तसुराः          | ३९      | २०३      |
| राहुरसौ दनुजत्वाद्           | ९       | ५        | रोचनं कुङ्कुमं शङ्खं         | ४२      | १३५      |
| राहुस्थितर्क्षं तस्यास्यं    | ३७      | ५४       | रोहिणीद्वयपुष्येन्द्र        | ४१      | १७       |
| राहोः सुतास्तामसकीलकाद्याः   | २       | १४       | रोहिणीशः सुधादीप्तः          | १८      | १३८      |
| राहौ लानादिकेन्द्रस्थे       | २९      | ५२       | रोहिण्यामुत्थितो व्याधिः     | ४६      | २७       |
| रिक्ताममां दग्धतिथिं         | ३८      | ७        | रोहिण्यां वा वैष्णवे         | २५      | ११       |
| रिक्तामात्यक्तदिनेष्वनिन्द्य | ४०      | ५        | रौद्राक्ववारीशमरुद्विदैव     | ८       | १        |
| रिक्तासु पर्वस्वथं कार्तिकेय | २४      | ३२       |                              |         |          |

| श्लोकानुक्रमणिका<br>ल         | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| लक्षदोषान्बुधो हन्ति          | ३७      | १५५      | लग्नांशसौम्यग्रहवर्जा        | ३२      | १०२      |
| लक्ष्मीप्राप्तिर्भवति         | ३२      | १४९      | लग्ने गुरौ विधौ खस्थे        | ३७      | १७१      |
| लग्नकेन्द्रे जन्मपतौ          | ३७      | २१९      | लग्ने चन्द्रे च चरभे         | ३७      | १९९      |
| लग्नगते तुहिनकरे              | २३      | ३५       | लग्ने भावश्चोदितास्तेषु      | ३२      | १६८      |
| लग्नगते सुरसचिवे              | २३      | ३०       | लग्ने शशसौम्यखचरो            | ३२      | १२२      |
| लग्नमालोकयेज्जीवस्            | ४१      | २२       | लग्ने सौम्ये रवौ षष्ठे       | ३७      | १७६      |
| लग्नषष्ठाष्टमान्त्यस्थः       | २९      | ५४       | लग्ने सौम्येष्टमे चन्द्रे    | ३७      | २२२      |
| लग्नस्थजीवज्ञसित              | ३२      | १०१      | लग्नेऽस्य पृष्ठाग्रगयोर्     | ३२      | ४३       |
| लग्नस्थभौमाष्टमसंस्थदोषो      | ३२      | ५९       | लङ्कापूपमध्वान्य             | ४६      | ८८       |
| लग्नं तद्वच ततस्त्रिभागो      | ३२      | १३५      | लघुधिष्ये स्थिरमृदुभे        | १४      | ८१       |
| लग्नं महादोषविदूषितं          | ३२      | १०५      | लघुमैत्रध्ववमृदुभे           | १४      | १०७      |
| लग्नं महादोषविदूषितं          | ३२      | १००      | लब्ध्वा तेभ्यः स्वस्तिवाक्यं | ३३      | ५१       |
| लग्नं सर्वगुणोपेतं            | २९      | ६६       | लाभगता निखिलरुंगा            | ३२      | १६३      |
| लग्नं स्वनाथशुभमित्र          | ३२      | १२१      | लाभप्रदं सोमसुतस्य वर्गे     | ४४      | ११       |
| लग्नस्था शुभखचराः             | ३२      | १५३      | लाभश्च व्ययसंज्ञश्च          | ३७      | १४५      |
| लग्नात्कुजाष्टमो दोषो         | ३२      | ६०       | लाभस्थानगताः सर्वे           | ४०      | १९       |
| लग्नात्केन्द्रगते चन्द्रे     | ३७      | १८०      | लाभस्थितो यदा सूर्यश्        | ४१      | ४१       |
| लग्नात्रिपञ्चास्तदशायोषु      | ३१      | ५        | लिखिताष्टदले पद्मे           | १८      | १०१      |
| लग्नात्पृष्ठसंस्थे शशिनि      | ४२      | १३       | लिखेदष्टदलं पद्मं            | ३५      | २४       |
| लग्नात्सप्तमगाः सौम्या        | २९      | ६०       | लेपनं भूषणं चैव              | १५      | ३६       |
| लग्नादिसर्वे खलु राशयश्च      | ३२      | ४७       | लोकानां विष्णुसम्भूतं        | ४५      | ३४       |
| लग्नादिसौम्यग्रहराशयो         | २९      | ४०       | लोहितवर्णो ग्रीष्मे          | २       | १८       |
| लग्नादृष्टिये शुभखेचरे        | ४०      | १३       | लोहितैरावतोष्ट्रश्च          | ४५      | ५        |
| लग्नान्तरालं घटिकाद्व         | ३२      | ६७       |                              |         |          |
| लग्नास्तशुद्धिस्तु महान्सदोषः | ३२      | ९५       | व                            |         |          |
| लग्नांशकाधीशशुभावलोक          | ३२      | ११३      | वक्षःस्थले तु सौभाग्यं       | ४५      | १७८      |

| श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------|---------|----------|-----------------------------|---------|----------|
| वक्रेन्दुकुन्दकुमुदस्फटिक   | ७       | १९       | वसुभस्योत्तरार्द्धच्च       | ३७      | ७६       |
| वक्ष्यमाणैश्च मन्त्रैश्च    | १८      | १३६      | वस्तूनां च शुभानां च        | ३७      | ४२       |
| वटाश्वत्थकपित्थाख्य         | ३९      | १८५      | वस्त्रबन्धमलंकारं           | १५      | १२       |
| वत्सयुता गोवनिता            | ३७      | ७        | वस्त्रबन्धं गजारोहं         | १५      | २२       |
| वत्सरं तप्यते पुण्यं        | १२      | ६५       | वस्त्रबन्धं गृहस्थापं       | १५      | २०       |
| वधबन्धविषान्यस्त्रछेदनो     | १६      | ११       | वस्वपरार्द्धात्पञ्चकधिष्ये  | १४      | ७७       |
| वन्दे सर्वरसश्रेष्ठ         | १८      | १७२      | वस्त्राक्षतैर्गुगुलधूपदीपैः | १४      | ५४       |
| वमनि धूमानलरक्ततोयं         | ४५      | ३१       | वहिभाद्वितयमब्दशरीरं        | ६       | १७       |
| वरुणं कालिकानाथम्           | ३७      | १३०      | वहिर्भयं सुतहानिः           | ४४      | ४        |
| वरशृंगाटकरूपं               | १४      | ९८       | वहिभीतिः शत्रुभीतिः         | ४५      | १४२      |
| वरस्य लक्ष्मीं निखिलं       | ३२      | ९१       | वहिर्विधाताद्रिसुता         | १२      | ३        |
| वरुणं पश्चिमे भागे त्वन्नो  | १८      | ९२       | वहेभयं वहिसमानवर्णं         | ६       | १५       |
| वर्गोत्तमगतश्चन्द्रो        | ४१      | ३१       | व्रणयुक्ते भवेद्वानिः       | ३९      | ६        |
| वर्गोत्तमगते लाने           | ३७      | १७०      | व्रतोपवासाखिल               | १२      | १४       |
| वर्गोत्तमगतो जीवः           | ४१      | २८       | वातसंज्ञं महादोषं           | ४३      | ११४      |
| वर्गोत्तमस्थशुभयेचरसंयुतं   | ३२      | १२०      | वापीकूपतडागपूर्तिर्         | ६       | ३६       |
| वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो    | ३२      | ५३       | वारप्रवृत्तिविज्ञानं        | १३      | १३       |
| वर्गोत्तमांशगे लग्ने        | ३७      | ७२       | वारप्रवृत्ते घटिका          | १३      | १२       |
| वर्गोत्तमांशोद्भवचन्द्रजाता | ३२      | १०४      | वारयोगगुणं हन्ति            | ४३      | ४        |
| वर्णादिनंगणमहेन्द्रवधूविदूर | ३२      | १७५      | वारानकादितस्त्रिघ्नाः       | ४२      | ५४       |
| वर्द्धमानाह्यं योगं         | ४३      | ८        | वाराः प्रशस्ताः शुभ         | ३२      | ६        |
| वर्धमासैः पक्षैः            | १०      | ५        | वारिजं गुग्गुलुं धूपे       | ४६      | ८७       |
| वर्षाधिष्पो मेषदिन्य        | ११      | १०       | वारिधरा-वारिचर्यं           | ६       | ५०       |
| वश्यास्त्यक्त्वा राशयो      | ३२      | २०१      | वारुणनैऋतपौष्णान्           | ५       | ६        |
| वलक्षपक्षः खलु              | ३       | १२       | वारुण्यां भोजनगृहं          | ३९      | १६५      |
| वलक्षपक्षः शुभदः            | ४०      | ४        | वारेशे बलसंयुक्ते           | ४२      | ४८       |
| वलक्षपक्षे प्रतिपत्रयाणे    | ३७      | १७       |                             |         |          |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| वायुतो दक्षिणे कोणे        | १८      | ८०       | विधातृरगौरीऽफणिः             | २९      | ३५       |
| वायुं कृष्णमृगासीनम्       | ३७      | १३१      | विधातृगौरीभुजगभान्           | १२      | १६       |
| वायुं पूज्य शमीष्वत्र      | ४५      | १०६      | विधातृद्वितये सार्पात्       | २८      | ११       |
| वासवर्क्षचतुर्थांशे        | ४२      | ११६      | विधोर्बलावलेनैतसंक्रमेण      | १९      | २६       |
| वासवे प्रथमे पादे          | ४२      | ११५      | विधोस्तु षष्ठाष्टमरिष्टदोषः  | ३२      | ५५       |
| वास्तुज्ञानं प्रवक्ष्यामि  | ३९      | १        | विपत्प्रदा विपत्तारा         | ३९      | ५२       |
| वास्तुज्ञो वास्तुमन्त्रेण  | ३९      | २१६      | विपद्योगं निहन्त्याशु        | ४३      | ८८       |
| वास्तुपूजा च कर्तव्या      | ३९      | १९६      | विपुलाख्यं यदा यत्र          | ३९      | ११९      |
| वास्तुपूजामकृत्वा यः       | ३९      | २२२      | विप्रक्षमाधीश्वरविदचतुर्था   | ३२      | २०९      |
| वास्त्वायामदलं नाभिस्      | ३९      | ६४       | विप्राणामुपनयनं              | २९      | ३        |
| विकला ऋज्यनुवक्रा          | ५       | १४       | विप्राणां क्षत्रियाणां       | १८      | २५       |
| विगजतुरगभीतान्             | ३७      | २३०      | विप्रान्सन्तोषयेद्वक्त्या    | ४५      | ६६       |
| विग्रहं निग्रहं चैव        | १५      | १४       | विप्रेभ्यो भोजनं दत्त्वा     | ३९      | २१९      |
| विग्रहः सर्वलोकानां        | ११      | ४५       | विमलः प्रतिपद्यन्ते          | ३       | ३        |
| विचित्रपुष्पगच्छेन         | ४६      | ७३       | विमुंच्यथवा मासैर्           | ४६      | ७७       |
| विचित्ररम्याणि गृहाणि      | ३७      | १३९      | विरुद्धयोगेषु च आद्यपादः     | १५      | ४        |
| विचित्रसस्यांवरचित्रवर्णा  | ६       | ३५       | विलग्नगा गोघटकर्कटाश्च       | ३१      | ६        |
| विचित्रतामङ्गुच्चित्रकुम्भ | ३२      | १४२      | विलग्नराशेर्भृगुष्टकदोषः     | ३२      | ६२       |
| विजयं नाम भवति             | ३९      | १२१      | विलम्बिवर्षे त्वरिवृन्दरोगैः | ६       | ६०       |
| विजयाख्यं यदा नूनं         | ४३      | ४८       | विलयं यान्त्यवनीशाः          | ६       | ९३       |
| विजयाख्यो महायोगं          | ४३      | १२०      | विवर्ज्यास्तारकास्त्वेताः    | ३९      | ५३       |
| विजयाख्यं यदा नूनं         | ३९      | १२१      | विवाहदानकर्माणि              | १५      | १३       |
| विजयाख्यो महायोगो          | ४३      | १२१      | विवाहश्वैकजन्यानांम्         | ३२      | २३६      |
| विजयादशमी तत्र             | १२      | ६२       | विवाहेविधवा नारी             | ४२      | ६६       |
| विडालसर्पशशक               | ३७      | ४९       | विवाहेविधवा                  | ४२      | १०९      |
| वितस्तिमात्रं शङ्कुः       | ३९      | ६५       | विविधानि निमित्तानि          | ३७      | ११६      |
| विद्यातपोत्रतयुतान्        | ३५      | १७       | विविधामयचोरभयं               | ६       | ७२       |
| विद्वान्त्रयेऽपि पूर्वेव   | १२      | ७०       |                              |         |          |

| श्लोकानुक्रमणिका                 | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------------|---------|----------|-----------------------------|---------|----------|
| विवैरिणा: सर्वधाराधिनाथा:        | ६       | ९९       | वेदशतद्विद्विरदा            | १४      | ९४       |
| विशदं त्वाहिबुध्यभमेकं           | ५       | ७        | वेदस्य चक्षुः किल शास्त्रम् | १       | ६        |
| विशाखाविश्वधिष्यान्त्य           | ४       | १२       | वेदाचारं परित्यज्य          | ४५      | १२०      |
| विशालशुक्ले वृद्धिः              | ३       | ९        | वेदात्मकं च नैऋत्याम्       | ३५      | ३०       |
| विशां पीतं चतुर्थानां            | ३९      | ३        | वेदीमध्ये ललितकमले          | १८      | ३९       |
| विशिरो द्वित्रिशिरसो             | ४५      | ८८       | वेधसमन्वितखचरा              | १८      | ८        |
| विश्वाम्बुमूलेन्द्रविशाखमैत्र    | ३       | १३       | वेपमानानि यदि वा            | ४५      | ४९       |
| विश्वावासौ विविधसस्ययुता         | ६       | ६७       | वैदेहादीनि सर्वाणि          | ३९      | १७६      |
| विश्वेदेवा स इत्यस्य             | ४६      | ८०       | वैनाशिकादित्रक्षेषु         | ३७      | ८३       |
| विश्वेदेवास्तथोदीच्याम्          | ३३      | २३       | वैशाखे च तृतीयायां          | १२      | ५०       |
| विषप्रदाधेन हतस्य                | ३२      | ७२       | वैशाख्यां विप्रमुख्येभ्यो   | १२      | ५१       |
| विषमाय शुभायैव                   | ३९      | ५१       | वैश्वानर्के बहुमित्रपुत्र   | २४      | ७        |
| विषयोगो निहन्त्याशु              | ४३      | १५       | वैश्वे सती पुष्पवती         | २४      | २५       |
| विषाग्निशस्त्राहवभेददम्भ         | १३      | ३        | व्यञ्जनं गन्धपुष्पान्       | १२      | ५२       |
| विषुवतोऽयनतोऽपि                  | ३२      | ३७       | व्यतीपातेऽन्तरे दोषस्       | ४३      | ३८       |
| विषुवत्ययने ग्रहणे               | १९      | १७       | व्यत्ययेनागतं शेषं          | ३९      | ४६       |
| विष्णुस्त्वमश्वरुपेण             | १८      | १६३      | व्यत्यये व्यत्ययफलं         | ३७      | ६०       |
| विष्णुं च देवतापूज्यं            | २५      | १४       | व्ययगो दुग्धाब्धिभवः        | ३२      | १६४      |
| विष्णुं च देवतामन्यत             | १८      | ५६       | व्ययस्थानस्थिताः सर्वे      | २९      | ६३       |
| विष्णोः स्वरूपं कनकेन            | २५      | १३       | व्ययान्विताः सर्वजनाः       | ६       | ४८       |
| विष्णुभ्यः प्रीतिरायुष्मान्      | १५      | १        | व्ययेऽष्टमे वा सुतभे        | २५      | ९        |
| विसिताः सचन्द्रसौम्या            | ३२      | १५५      | व्याकुली शालमली             | १८      | ११६      |
| विस्तारद्विगुणोत्सेधं            | ३९      | २१       | व्याधिर्लक्ष्मी वहिभयं      | ४५      | १८६      |
| विस्तारायामगुणितं                | ३९      | ४७       | व्यासाङ्गुलत्रिगुणम्        | ३२      | १४०      |
| विस्फुलिङ्गेऽथवा धूमे            | ४५      | ५६       | वृकासनो जैमिनिगोत्रजोन्त    | १८      | ७४       |
| वीक्षयेत्संयुतो वापि             | ४१      | २३       | वृद्धत्वमिन्दोस्त्रिदिनं    | ३२      | १३       |
| ब्रीहिभिश्चायुरर्थो चेत्सर्वकामी | ४५      | २८       | वृद्धिधूवाख्यो व्याधातो     | १५      | २        |
| वेतालडाकिनीभूता                  | ३५      | ५        |                             |         |          |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|-----------------------------|---------|----------|
| वृषभनिभा वृषभाब्दे           | ६       | ४३       | शने: पश्चिमतः स्थाप्य       | १८      | ७८       |
| वृषराशिगते चन्द्रे लाभगे     | ३७      | १७४      | शने: समो वाक्पतिरिन्दुसूनः  | ३२      | २००      |
| वृष्टिः प्रभूताखिलसस्यवृद्धि | ६       | ३०       | शनोदेवीत्यनेनैव             | १८      | ६६       |
| वृष्टर्भयं धूमनिभः पिशङ्ग    | ६       | १६       | शनौ लग्नादिकेन्द्रस्थे      | २९      | ५१       |
| श                            |         |          |                             |         |          |
| शकटाख्यं महायोगं             | ४३      | ९६       | शम्बरबन्धनमोक्षणवापी        | १४      | २१       |
| शकादग्निहतानंद्              | ११      | ४९       | शम्बरमोचनबन्धनभूषण          | २३      | १०       |
| शक्तियुते भृगुतनये           | २३      | ४१       | शयने कर्तृनिधनं             | ४५      | १६७      |
| शक्रसार्पमधावहि              | ४२      | ६०       | शय्यासु वृषभः शस्तः         | ३९      | १८२      |
| शङ्कुं त्रिधा विभज्याद्यां   | ३९      | ६८       | शलभा मूषकाश्चैव             | ११      | ५०       |
| शङ्कुपानेन सूत्रेण           | ३९      | १०       | शवर्गोच्चारिते प्रश्ने      | ३९      | ९०       |
| शङ्कुचक्रगदापद्म             | १५      | २८       | शवार्द्धाङ्गं गृहीत्वा श्वा | ४५      | ११३      |
| शची शचीपतिं पूज्य            | ४५      | १२३      | शशाङ्कतोयेशकरान्त्यमित्र    | १४      | ५७       |
| शतच्छिद्रं बृहत्कुम्भं       | ४२      | १६२      | शशरक्तनिभो युद्धं           | २       | २०       |
| शतच्छिद्रं बृहत्कुम्भं       | ४२      | १४९      | शशितनये ग्रस्ते सति         | ९       | ३५       |
| शतताराद्विदैवार्द्रा         | ४२      | ५७       | शशितनये जीवे वा             | २३      | ३३       |
| शतप्रमाणामथवाऽ सहस्री        | २४      | ३९       | शशितनये रसनाथे              | ११      | ३५       |
| शतौषधिसमायुक्तं              | ४५      | १९१      | शशिनैर्ऋत्यमणितृभे          | २३      | ३८       |
| शत्रुघातं रिपूच्चाटं         | १५      | १८       | शशिबलमादौ कल्प्यं           | २३      | ४६       |
| शत्रुनीचाधिशत्रृक्षे         | २९      | १८       | शशिवत्प्रभासमेता            | १०      | २२       |
| शत्रुराशौ तदंशस्थे           | २९      | १५       | शश्वत्कुबेरगृहवदालये        | ३९      | १५८      |
| शत्रुवृद्धिः पुत्रहनि        | ३९      | १९       | शस्ता वाग्वामभागे           | ३७      | ४५       |
| शत्रोरष्टमलाने वा            | ३७      | २१८      | शस्त्रकर्म रिपूच्चाटं       | १५      | २३       |
| शत्रोरागमनं भाव्यम्          | ४५      | ६९       | शस्त्रक्षुद्रयदास्ते        | १०      | २०       |
| शनिवारे भवेद्वयाधिर्         | ४६      | १११      | शस्त्रभयामयजननी             | ५       | १५       |
| शनिः स्वतुङ्गः सौम्य         | ४१      | ३६       | शाकं च वेदगुणितं            | ११      | ४१       |
|                              |         |          | शाकिन्यारामखलपू             | ४५      | १७२      |

| श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका         | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------|---------|----------|--------------------------|---------|----------|
| शाखामृगाख्यभल्लूक         | ३७      | ५२       | शिरीषामलकाशोक            | १८      | ११४      |
| शाखेशगुरुशुक्राणां        | २९      | ५        | शिल्पप्रहरणबन्धन         | १४      | १२       |
| शाखेशगुरुशुक्राणां        | २९      | ८        | शिवगाथां विष्णुगाथां     | १८      | १३२      |
| शाखेशगुरुशुक्राणां        | २९      | १३       | शिवविष्णोः कथालापैर्     | ४५      | २३       |
| शाखेशगुरुशुक्राणां        | २९      | १४       | शिवसर्पित्रपितरो         | १७      | १        |
| शाखेशगुरुशुक्राणां        | २९      | ६        | शिशवश्वोद्धता यत्र       | ४५      | १२१      |
| शाखेशो वा गुरौ शुक्रे     | २९      | ९        | शिशुपशुवनितानिचयो        | ६       | ९०       |
| शान्तिकपौष्टिकमखिलं       | १४      | २३       | शिष्टेभ्यो दक्षिणां      | ३७      | १०९      |
| शान्तिकपौष्टिकमङ्गलं      | १४      | १५       | शीतवातोष्णसंत्राणं       | १८      | १७०      |
| शान्तिकपौष्टिकमङ्गलं      | २३      | ४        | शीर्षोदये चोपचये         | ३३      | ४        |
| शान्तिकपौष्टिकयात्रा      | १४      | ८        | शीर्षोदये लग्नगते        | ३७      | ६७       |
| शान्तिकपौष्टिकशिल्पं      | २३      | ९        | शुक्रज्ञकुञ्जमन्देज्य    | ४१      | ४४       |
| शान्तिकपौष्टिकशिल्पं      | १४      | ६        | शुक्रे केद्रे लग्नसंस्थे | ३७      | २२०      |
| शान्तिकं पौष्टिकं चैव     | १५      | ३७       | शुक्रे चास्तङ्गते यत्र   | ३७      | ८७       |
| शारदसस्यविनाशः            | ९       | १०       | शुक्लमाल्याम्बरधरः       | १८      | १४७      |
| शार्वरीशरदि भाति          | ६       | ६२       | शुक्लमाल्याम्बरधरः       | ३३      | ५२       |
| शालानां पापसंज्ञानां      | ३९      | १४८      | शुक्लवस्त्रयुगं दद्याद्  | ३९      | २१७      |
| शालीक्षुगोधूमयवादिसस्य    | ७       | ६        | शुक्लसूक्ष्माम्बरैर्वे   | ३७      | १०२      |
| शास्त्रस्वरूपग्रहचार      | १       | ९        | शुक्ले द्वितीयादित एव    | ३२      | ४        |
| शास्त्रात्समानीतमहातिपातः | ३२      | ९४       | शुचिमासे चतुर्दश्यां     | १२      | ५६       |
| शास्त्रोक्तमार्गेण        | ३२      | १३६      | शुचिशुक्ले च पञ्चम्यां   | १२      | ५४       |
| शिथिलीजायते प्राच्यां     | ४५      | १५५      | शुद्धस्फटिकसंकाशः        | ४६      | ३४       |
| शिथिलीजायते यस्य          | ४५      | १४१      | शुद्धस्फटिकसंकाशो        | १८      | ९७       |
| शिथिलीजायते याम्यम्       | ४५      | १५८      | शुद्धा त्रेधा तथा विद्धा | १२      | ६८       |
| शिथिलीजायते रौद्रे        | ४५      | १६४      | शुभकार्याण्यखिलानि       | २३      | ३२       |
| शिथिलीजायते वायौ          | ४५      | १६१      | शुभकृच्छरदि विभाति       | ६       | ६३       |
| शिरीषलोध्रपनस             | ३३      | ४१       |                          |         |          |

| श्लोकानुक्रमणिका       | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| शुभकेन्द्रत्रिकोणस्थे  | ३९      | ३८       | शुभाशुभेषु त्रिधनायकेन्द्र   | २७      | ६        |
| शुभखचरस्त्वशुभो वा     | ३७      | १२       | शुभे दिने दैवविदं            | ३१      | १        |
| शुभखचरस्त्वेको वा      | ३७      | १५       | शुभेनैकेन योगः स्यात्        | ३७      | २१४      |
| शुभखचरा घटराशिं        | २३      | २०       | शुभेषु चन्द्रयोगेषु          | ३३      | ११       |
| शुभखचरे लग्नगते        | २३      | २३       | शुभैयात्रोक्तशकुनैर्         | ३९      | ७३       |
| शुभखचरेषु स्थितेषु     | २२      | ६        | शुभोऽधिमित्रकर्षगतस्         | ३२      | ११६      |
| शुभखचरौ द्वौ बलिनौ     | ३७      | १६       | शुष्कः कमण्डलुधरस्           | ४६      | २८       |
| शुभगुणगणहीना           | २४      | २९       | शूद्रविट्रौरभूप              | १९      | ४        |
| शुभग्रहः स्वोच्चसंस्थो | २९      | ७४       | शून्यधिष्योद्भवं दोषं        | ४३      | १४२      |
| शुभग्रहाणां भवने       | २७      | ३        | शून्यधिष्योद्भवो दोषः        | ४३      | ६७       |
| शुभग्रहे द्वये लग्न    | ३७      | १६५      | शून्याधिमासद्वितयं           | ४२      | १०४      |
| शुभग्रहे लग्नगते       | ३७      | ६९       | शूलदोषापनुत्यर्थं            | १९      | २९       |
| शुभग्रहेषु केन्द्रेषु  | ३७      | १८८      | शूलाख्यानि च धिष्यानि        | ३७      | ३०       |
| शुभदः सर्वधिष्यानां    | ४       | १३       | शूलाग्रस्त्वितरो वा स        | १०      | ४०       |
| शुभदो व्यत्ययकेतुस्    | १०      | ३९       | शेषस्थानेषु निर्माणं         | ३९      | २६       |
| शुभद्वयान्तरगते        | ३७      | १७९      | शेषं तु द्विगुणीकृत्य        | ११      | ४४       |
| शुभद्वये त्रये वापि    | ३९      | ३९       | शेषा ग्रहाणां राशयंशाः       | ३९      | ५७       |
| शुभफलदा परिधावि        | ६       | ७४       | शेषैः सुदृष्टः सततं          | २९      | ४१       |
| शुभयोगं निहन्त्याशु    | ४३      | ६        | शोकदुःखप्रदं शश्वत्          | ३९      | १३९      |
| शुभयोगं निहन्त्याशु    | ४३      | ४६       | शोभकृति क्षितिपतयो           | ६       | ६४       |
| शुभयोगो निहन्त्याशु    | ४३      | ११९      | श्येनगृधादयो व्योमि          | ४५      | १११      |
| शुभलग्ने दशमध्वे       | २३      | २२       |                              |         |          |
| शुभवगस्थितो जीवः       | ४१      | २६       | श्री                         |         |          |
| शुभवारे शुभांशे च      | ३९      | ७१       | श्रवणादितिकर्काशसंस्थिते     | २९      | २६       |
| शुभानि कार्याणि चर     | १२      | ९        | श्रावणमासस्यासिताष्टम्यां    | १२      | ५७       |
| शुभाशुभग्रहोत्पात      | ४१      | ४        | श्रावणवर्षे क्षेमं सस्यान्यं | ६       | ११       |
| शुभाशुभनिमित्तानि      | ३७      | ४१       | श्रीखण्डचम्पकाम्बष्ट         | ३३      | ४४       |

| श्लोकानुक्रमणिका                  | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------------|---------|----------|------------------------------|---------|----------|
| श्रीमान्कुलीनोऽव्यसनो             | ३३      | २९       | षष्ठाष्टमद्वादशके शशाङ्के    | ३२      | ५६       |
| श्रीवृक्षबिल्वखदिर                | १८      | १०७      | षष्ठाष्टमान्त्यगश्चन्द्रो    | २७      | १०       |
| श्रुतिस्मृतिनां पदमुत्तमं         | २९      | १        | षष्ठाष्टमे वा दशमे           | ३२      | २४३      |
| श्रुतिस्मृतिज्ञः पटुरर्थेशास्त्रे | १       | ८        | षष्ठाष्टमेषु पापेषु          | ३७      | २२१      |
| श्रेष्ठयोगं तथा हन्ति             | ४३      | ५        | षष्ठस्थाः खचरासौम्या         | २९      | ५९       |
| श्रेष्ठा नृपा युधि लयं            | ३       | ११       |                              |         |          |
| श्रोत्रियाय विशिष्टाय             | ४२      | १६८      |                              |         |          |
| शृङ्गालसदृशे नादे विकारे          | ४५      | १०४      |                              |         |          |
| शृङ्गालो विशति ग्रामं             | ४५      | १०९      |                              |         |          |
| शृङ्गे व्रीहियवाकारे वृष्टिः      | ३       | ८        | संकरशवरनिशाचरनिधनं           | ६       | ९७       |
| शृण्वन्मङ्गलवाक्यानि              | ३३      | ३८       | सङ्गीतविद्याखिलशिल्पकर्म     | १२      | ७        |
| शृण्वन्हरिकथालापान्संध्यादि       | ३३      | ४९       | संग्रहः कतरीसूर्यसन्क्रान्ति | ४२      | १०५      |
| श्वेतातपत्रध्वजचामर               | ३७      | १३७      | संग्रामयोग्याखिलवास्तुशिल्प  | १२      | १२       |
| श्वेता द्विजान्मन्ति              | २       | १६       | सन्क्रमणं यद्यहनि            | १९      | १२       |
| श्वेतवर्णो सुधापूर्णो             | ४६      | १८       | सन्क्रान्तिदोषे त्वचिरात्    | ३२      | ३८       |
|                                   |         |          | स च चक्रकेतुरनिशं            | १०      | २८       |
|                                   |         |          | सत्खचराः सदसच्च              | ३२      | १६५      |
| षट्काष्टके मृत्युरथाङ्गनाया       | ३२      | १८४      | सदा गदार्ता सुपतिव्रता       | २४      | ३३       |
| षट्पदालयमादित्यस्याय              | ३९      | ८२       | सदा मृगे भाग्यवती            | २४      | ९        |
| षट् पौष्ण्यभाद्रद्वादश            | ३       | १६       | सदैव दर्शे पितृकर्म चैव      | १२      | १८       |
| षडङ्गजापकस्तत्र                   | ४२      | १५३      | स निरोधो विज्ञेयस्           | ९       | २०       |
| षडङ्गुलोत्सेधसमं                  | ३२      | १३८      | सदैव नष्टेन्दुतिथीश्वराः     | १२      | २        |
| षड्हादशाष्टभिर्हस्तैः             | १८      | २३       | सनः पितेति मन्त्रस्य         | ४६      | ६१       |
| षड्भानि च शुभकर्मणि               | २२      | ९        | सन्तर्प्य देवान्सपितृन्      | २६      | २        |
| षण्मासद्राष्ट्रभीतिः              | ४५      | ७४       | सन्धिविग्रहयात्रादि          | १६      | ८        |
| षष्ठ्यब्दजन्मप्रभवादिकानां        | ११      | ३        | सन्धिविग्रहयानाख्य           | ३३      | ३५       |
| षष्ठितं गतगम्यं भुक्तिहतं         | २२      | ३        | सन्धुक्षतो पितृनृपतेः        | ४५      | ४४       |

| श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका           | अ. क्रम | श्लो. सं |
|----------------------------|---------|----------|----------------------------|---------|----------|
| सन्मानायतनं नवाम्बरधृतिः   | ४४      | १        | सरितां चाम्बुसंशोषं        | ४५      | १२८      |
| सपञ्चगव्यतैलेन्            | ४५      | १८९      | सर्पच्चतुष्कं वसुवारिरुद्र | ३२      | २०७      |
| सपत्नदेशान्नगरं            | ३७      | २३१      | सर्वजित् २१ सर्वधारी च     | ६       | २३       |
| सप्तभिरब्दैर्विधवां        | ३२      | १५८      | सर्वजिदब्दे निखिलं         | ६       | ४९       |
| सप्तभिरुदयात्सर्वं         | ३३      | ३७       | सर्वदा धनदा नृणां          | ३९      | १४६      |
| सप्तमगाः सकलखगाः           | ३२      | १५९      | सर्वदिक्षु प्रशस्तोऽपि     | ३७      | ३४       |
| सप्तमी चाष्टमी सौम्ये      | ४२      | ८२       | सर्वदिक्ष्वपि यातृणां      | ३७      | ३३       |
| सप्तमी विजयदा              | ३७      | १९       | सर्वदेवमयी त्वाद्या        | ४५      | १९       |
| सप्तम्यां माघशुक्लायद्दृ॑६ | १२      | ४२       | सर्वदेशेष्विदं मुख्यं      | ३२      | २२८      |
| सप्तषष्ठ्यादितिथयः         | ४२      | १४       | सर्वद्वारिकधिष्ययानि       | १४      | ७३       |
| सप्ताङ्गचिह्नानि नृपस्य    | १२      | ६        | सर्वभूताश्रया भूर्मि       | १८      | १६७      |
| सबिल्वं गुणगुलुर्धूपो      | ४६      | ९७       | सर्वानिमानतिबलः            | २९      | ७२       |
| सभां प्रविश्य राज्या       | ३३      | ५३       | सर्वे जामित्रसंस्था        | ३२      | १५२      |
| समरारम्भविभूषण             | १४      | २५       | सर्वेषामेव वर्णनां         | २८      | ८        |
| समसप्तकयोर्जीवं            | ४३      | २४       | सर्वेषु मासेष्वधिमासकः     | २       | ४        |
| समस्तवस्तुग्रहणाशमसीस      | १३      | ७        | सर्वस्मिन्नपि समये         | १४      | ७६       |
| समिद्विनिचुलैः सार्द्धं    | ४६      | ८२       | सलोकपालहरम्ब               | ३४      | ३        |
| समुदायं द्विनवमध्यं        | २२      | ८        | स विमर्द्दे विज्ञेयः स च   | ९       | २१       |
| समुद्रसंज्ञको योगो         | ४३      | ९७       | सवेणुवीणामधुरस्वरेण        | ३२      | १४४      |
| समौ सितार्कि शशिजश्        | ३२      | १९८      | सव्यगते तमसि सति           | ९       | १७       |
| सम्पूर्णदिवसे कर्ता        | ३५      | ४१       | सव्यापसव्यतेहग्रसन         | ९       | १६       |
| सम्पूर्णफलदमादौ            | २३      | १४       | सस्यपतौ त्रिदशगुरौ         | ११      | २९       |
| सम्पूर्णा शुभदास्त्वेते    | ३९      | ५०       | सस्यपतौ तुहिनकरे           | ११      | २६       |
| सम्पूर्णेन्दुभयाष्टम्योर्  | २७      | ९        | सस्यवृद्धिरपांहानिर्       | ४५      | १३२      |
| सम्भोगशीला परकार्यकारिणी   | २४      | १७       | सस्याधीशो भास्वति भूमौ     | ११      | २५       |
| समुखे चन्द्रजे यत्र        | ३७      | ९४       | सस्यानामीतिभयं             | ६       | ७५       |
| सरणं चाद्रिगेहानां         | ४५      | १३०      | सस्याभिवृद्धिर्हरिकीटयोश्च | ३       | ६        |

| श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका            | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------|---------|----------|-----------------------------|---------|----------|
| स स्वोदयर्थात्रिवमेऽष्टमे | ४       | २        | सिंहांशके सा पितृमन्दिरस्था | ३२      | ४९       |
| सहजैकादशो पापे            | ३७      | २०६      | सिंहे सिंहाशके जीवे कलिङ्गे | ४२      | २७       |
| सा दक्षिणद्वारयुता        | ३९      | १४३      | स्थिरचरकार्यं त्वखिलं       | २३      | २        |
| सा मध्यनाडी पुरुषं        | ३२      | २०३      | स्थिरचरशान्तिकपौष्टिक       | १४      | ९        |
| साधारणवृन्दोक्तं          | १४      | ३९       | स्थिरभेषु च पापेषु          | ३७      | २०२      |
| साधारणे दारुणभे           | १४      | ५९       | स्थिरराशिगते सूर्ये         | ३९      | ४०       |
| साध्यवर्गं पुरः स्थाप्य   | ३९      | ४५       | स्थिरराशिषु विष्णुपदं       | १९      | १४       |
| सापत्नसप्ताङ्गसमस्त       | ३७      | २३२      | स्थिरराशिषु संस्थेषु        | ३७      | १९७      |
| सामान्यमन्यमानानि         | ३९      | १७८      | स्थिरराशौ शुभवर्गे          | २३      | १९       |
| साम्राज्यमितिमन्त्रेण     | ३३      | २४       | स्थिरराशौ लग्नगते           | ३७      | २०१      |
| सायंसंध्यादिकं कृत्वा     | ३३      | ५५       | स्थिरसंज्ञं भचतुष्टयमम्     | १४      | २९       |
| सार्पद्विदैवमित्रेन्दु    | ४२      | ४५       | स्थिरसाधारणचरभे             | १४      | १११      |
| सर्पेशताराजनिता           | ४२      | ११८      | स्थिरसाधारणधिष्यैः          | १४      | ७४       |
| सावित्रसौम्यनैऋत्य        | ४२      | १५९      | सीदन्ति सस्यनिचया           | ११      | २७       |
| साहसदारुणचित्रक           | २३      | ८        | सीमन्ते गर्भनाशः            | ४२      | ३८       |
| साहसदारुणशत्रु            | १४      | ३        | सीसेन शुद्धकांस्येन         | १८      | ३८       |
| सितपक्षस्याद्यदिने        | २०      | ३        | सुगन्धपुष्पाम्बरभूषणेषु     | २४      | १२       |
| सितपक्षे हिमकिरणो         | २०      | ८        | सुगन्धवस्तुनिचय             | ३९      | १५३      |
| सितरक्तहरितपीतद्रव्याणां  | ६       | ३        | सुगन्धवस्तूनि सित           | ११      | ३७       |
| सितावनेयामरपूज्यसूर्य     | २५      | १०       | सुग्रीवः पुष्पदन्तश्च       | ३९      | २११      |
| सिते केन्द्रगते सूर्ये    | ३७      | १७५      | सुतजनने सन्क्रान्तौ         | १९      | १९       |
| सितेतराद्यवासरो           | ३७      | २३       | सुदर्शनमहायोगो              | ४३      | ११६      |
| सिद्धा तिथिर्हन्ति        | ३२      | १२८      | सुदर्शनं महायोगं            | ४३      | ४३       |
| सिद्धां तिथिं हन्ति       | ४३      | ४७       | सुदुर्मुखाब्दे प्रलयं       | ६       | ५८       |
| सिद्धिः साध्यः शुभः       | १५      | ३        | सुदेव इति मन्त्रं च         | ४५      | ११५      |
| सिनीवाली दृष्टचन्द्रा     | १२      | ३१       | सुधातलमखिलं यद्             | ६       | ८१       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|-------------------------------|---------|----------|
| सुधायोगान्निहन्त्येव         | ४३      | ९        | सूर्यभौमशनिराहुकेतवः          | २९      | ४८       |
| सुधायोगो निहन्त्याशु         | ४३      | ८१       | सूर्यस्य स्थापयेद्वाहिं       | १८      | ४३       |
| सुभानुवर्षे प्रतपत्यज्       | ६       | ४५       | सूर्यस्य राशिज्वलितो          | ४२      | १०२      |
| सुभिक्षकृत्स्ममतीव           | ९       | ४०       | सूर्यः स्थिरः शीतकरश्         | १३      | ८        |
| सुरगुरुमैत्रभभाग्ये          | २३      | ३७       | सूर्याचन्द्रमसोर्धिष्य        | १५      | ४१       |
| सुरगुरुहिंसुके लग्ने         | २३      | २७       | सूर्याच्चतुर्थं यल्लग्न       | ३२      | २२७      |
| सुरनरसद्विधानं               | १४      | १६       | सूर्यात्सप्तमलग्नं            | ३२      | २२९      |
| सुरनरसद्विधिलं               | १४      | ५        | सूर्याय कपिलां दद्याच्        | ३७      | ११२      |
| सुरसचिवाश्चनिस्ताराः         | १४      | ३२       | सूर्यारयोर्वासर्वर्गं         | १३      | २०       |
| सुरसचिवेमन्त्रिणि सति        | ११      | २२       | सूर्यांशकगते चन्द्रे          | २९      | २५       |
| सुरसचिवे शुक्रे वा           | २३      | २५       | सूर्येन्दुभौमाकर्यहिकेतवश्च   | ४०      | १२       |
| सुरासुरा ग्रहाः सर्वे        | ३५      | ४        | सूर्ये स्वात्यर्क्षसंयाते     | ३४      | २        |
| सुरासुराणां समरे             | १६      | १९       | सोमवारे दितिमरुद्             | ४१      | १२       |
| सुरेज्ययाता भग्नाः           | ६       | २०       | सोमसर्पौ दित्यदिती            | ३९      | २१२      |
| सुरेज्यदैत्येज्यशशीन्दुजानां | ३७      | २४       | सोमात्मिकाः स्त्रियः          | २४      | १        |
| सुरेशताराजनिता               | ३२      | २४०      | सोमोधेनुमनेनैव उदीच्यां       | १८      | ९६       |
| सुवक्रं भोगदं नूनं           | ३९      | १०२      | सौधाख्यं सदनं शश्छन           | ३९      | १०५      |
| सुवर्णगन्धपुष्पाणि           | ४२      | १३६      | सौम्यायने गुरौ शुक्रे         | २८      | ३        |
| सुवर्णेन प्रमाणेन            | ४५      | १४३      | सौम्यायने निर्मलयोः           | ३०      | २        |
| सुवर्णेन प्रमाणेन            | ४६      | ३        | सौम्याः कुर्वन्ति दशमे        | २९      | ६२       |
| सुवर्णो द्विभुजः पद्म        | ४६      | ७८       | सौम्ये लग्नगते चन्द्रे        | ३७      | १९५      |
| सुवृष्टिसस्यार्धधरा          | ६       | ७१       | सौम्येष्वाद्यन्तकेन्द्रेषु    | ३७      | २१०      |
| सूत्रिते समये तस्मिन्        | ३९      | ७४       | सौम्ये सुदीर्घे चतुरस्त्रपीठे | १८      | ५७       |
| सूत्रिते समये यत्र           | ३९      | ७६       | सौम्येऽब्दे सस्यानां          | ६       | ४        |
| सूत्रे विसूत्रिते तस्मिन्    | ३९      | ८१       | सौम्योन्नते जिह्वा            | ३       | ५        |
| सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु       | ३४      | ८        | सौरं च संक्रान्तिवशाद         | ११      | ४        |
| सूर्यपुत्रं हयारूढं          | ३४      | ७        | संध्याद्वयेऽनले दीप्ते        | ४५      | ११९      |
| सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो        | १८      | १४३      | संस्कारार्थं चतुर्णां च       | १८      | १२५      |



| श्लोकानुक्रमणिका                  | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका              | अ. क्रम | श्लो. सं |
|-----------------------------------|---------|----------|-------------------------------|---------|----------|
| स्कन्दोऽधिदेवता त्वस्य            | १८      | ५१       | स्वजन्ममासर्क्षतिथिक्षयेषु    | ३२      | ४१       |
| स्कन्धद्युयं वृत्तविचित्रम्       | १       | ३        | स्वतुङ्गगः शशी यत्र           | ४१      | ३८       |
| स्खलिते चाम्बरादीनां              | ३७      | ११५      | स्वतुङ्गगे गुरौ शुक्रे        | ३९      | ३६       |
| स्तनचरणगलोष्टा                    | ३७      | ८        | स्वतुङ्गतुङ्गाशगते            | २९      | २४       |
| स्तोकं जलं मुञ्चति                | ६       | ६१       | स्वतुङ्गस्थः कुजः सौम्य       | ४१      | ३५       |
| स्त्रीगीतमुक्ताफल                 | १३      | ६        | स्वतुङ्गस्वांशगो जीवो         | ४१      | २०       |
| स्त्रीदूरे समजामित्र              | ३२      | १९१      | स्वतुङ्गांशस्थिताः सौम्याः    | ४१      | ४७       |
| स्त्रीधिष्ण्यतो भे नवके           | ३२      | १८०      | स्वनीचगः शत्रुनिरीक्षितश्च    | ३१      | ४        |
| स्त्रीधिष्ण्यतो वेद ४ दिगा १०     | ३२      | १७९      | स्वनीचगाः शत्रुगृहस्थिताश्च   | ३२      | १३४      |
| स्त्रीसेवनं पर्वसु पक्षमध्ये      | १२      | २१       | स्वनीचगैर्वैरिगृहोदिगैर्वा    | ३३      | ३        |
| स्थलजलभूषणमखिलं                   | १४      | २८       | स्वनीचस्वारिषड्वर्ग           | २९      | १६       |
| स्थापनमुण्डनमण्डनन्               | १४      | २२       | स्वमित्रगेहे मित्रांशे        | २९      | २०       |
| स्थापयेच्चतुरः कुम्भा             | ३६      | ४        | स्वमित्रराशिसंस्थे वा         | २९      | १९       |
| स्थायिनां विजयस्तत्र              | ३७      | ५७       | स्वर्यं प्रजाता अप्येते       | ३१      | १९५      |
| स्नातुर्नीराजनं कुर्याच्चित्रानैः | ४२      | १६४      | स्वराशिगे बुधे लग्ने          | ३७      | १५६      |
| स्नात्वादौ कायशुद्धयर्थ           | १८      | ३३       | स्वराशिगे शुभे लग्ने          | ३७      | ७४       |
| स्फुटमानीय खगेन्द्रं              | २२      | २        | स्वराशिसंस्थिते शुक्रे        | ३७      | १७७      |
| स्यादलिन्दं लघुस्थाने             | ३९      | ९७       | स्वराशिस्वांशगे सौम्ये        | ३७      | १५८      |
| स्युस्तिस्त्रस्तिथयो वारे         | १२      | ३८       | स्वर्णदास्वपरं चोदडमुखायां    | ३९      | १४७      |
| स्युः सप्तगोत्रा भचतुष्टयेन       | ३२      | २१२      | स्वर्णरत्नफलोपेतं             | १८      | १०४      |
| स्योनापृथिव्यसौ मन्त्रस्          | १८      | ५२       | स्वर्णेन वा समीकृत्य          | १८      | १५६      |
| स्वकार्यसिद्धिरित्येवं            | ३३      | ३४       | स्वर्वर्गस्थः शशी यत्र        | ४१      | ४२       |
| स्वकीयलिङ्गेषु तयोः               | ३२      | २०८      | स्वशत्रुलग्नराशौ वा           | ३७      | ६३       |
| स्वक्षेत्रगः स्वस्य नवांशगो       | ३२      | ११७      | स्वस्ववर्णैः सुगन्धादर्       | ३७      | १२५      |
| स्वगृह्यविधिना कुण्डे             | ३५      | ३५       | स्वस्वस्थानेषु देवेषु         | ३९      | २०७      |
| स्वगृह्योक्तविधानेन               | ४२      | १५६      | स्वातीत्रये पूर्वदिशि         | ७       | १०       |
| स्वचतुर्भागविस्तारे               | ३९      | १७५      | स्वातौ मधायां निर्रृतौ        | १४      | ६९       |
| स्वच्छन्दत्वं कदशन                | ३२      | १५१      | स्वात्यक्षें चोत्थितो व्याधिः | ४६      | ६०       |

| श्लोकानुक्रमणिका             | अ. क्रम | श्लो. सं | श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|------------------------------|---------|----------|---------------------------|---------|----------|
| स्वाधिमित्रगते सौम्य         | ३७      | २२८      | हविः कूष्माण्डंखण्डः      | ४६      | ९५       |
| स्वाधिमित्रगते सौम्ये        | ३७      | ७५       | हस्तत्रये च श्रवणत्रये च  | २९      | ३७       |
| स्वाधिमित्रगृहस्थे वा        | २९      | २१       | हस्तत्रये पुष्टपुर्नवसौ च | १४      | ६४       |
| स्वाधिमित्रगृहे स्वाधि       | २९      | २२       | हस्तत्रये पुष्टपुर्नवसौच  | १४      | १०८      |
| स्वारिनीचगते जीवे            | २९      | १२       | हस्तत्रये मित्रहरित्रये च | ४०      | ७        |
| स्वाहाप्रियं मेषसंस्थं       | ३७      | १२७      | हस्तत्रये सौम्यहरित्रये च | १४      | ५८       |
| स्वांशसंस्थे बुधे लग्ने      | ३७      | १५७      | हस्तद्वयस्वातीविशाखमैत्र  | ५       | ४        |
| स्वेष्टलग्ने लग्नगते         | ३७      | ६२       | हस्तक्षेत्रे धनिकवरा      | १०      | ४५       |
| स्वोच्चगे लग्नगे सौम्ये      | ३७      | १६२      | हस्तवासवयोराद्यं          | ४२      | ४९       |
| स्वोच्चांशगे शुभे लग्ने      | २९      | ७६       | हस्तादिपञ्चस्वथ           | १४      | ४४       |
| स्वोच्चे स्वोच्चांशगे        | ३७      | १६४      | हस्तार्यमभत्वाशूद्        | ३९      | ३४       |
| ह                            |         |          |                           |         |          |
| हनू च कुक्षी त्वथ पापभेदैः   | ९       | ५१       | हस्तेन्दुदस्त्रमित्रेज्य  | ४१      | १८       |
| हन्ति कल्याणयोगाख्यं         | ४३      | ७        | हस्ते समुत्थितो व्याधि    | ४६      | ५४       |
| हन्ति ज्येष्ठान्त्यपादोत्थः  | ४२      | ११९      | हस्तैः षोडशभिः कार्यं     | ४५      | १२       |
| हन्ति योगं मौसलाख्यं         | ४३      | २७       | हंसः शुचिषदित्यस्य        | ४६      | ९९       |
| हन्ति शार्दूलयोगाख्यं        | ४३      | ३७       | हानिश्चेदकसंक्रान्ति      | १९      | २७       |
| हन्त्यर्थहीनं त्वमरप्रतिष्ठा | ४०      | २१       | हारकाञ्चीकलापं च          | १५      | २४       |
| हरिते त्वामयभीतिः            | ९       | २७       | हारकाञ्चीकलापं च          | १५      | ३०       |
| हरिपदयाम्यत्वयने             | १९      | १६       | हालाहलाह्यं नामे          | ४३      | १००      |
| हरिशार्दूलवराहगर्दभगज        | १९      | २३       | हिमकरवीर्याद्वीर्यं       | १८      | १८       |
| हरिहरधात्र्युत्तरवसु         | १४      | ८४       | हिमकिरणबलमाधारं           | २३      | ४७       |
| हरीतकीविष्णिनाग              | ३३      | ४७       | हिमकिरणः सितपक्षे         | १८      | १२       |
| हविरश्वत्थसमिधशू             | ४६      | ९१       | हिमकिरणे त्वेषु युते      | २१      | ४        |
| हविर्मसूरमिष्टान्नं          | ४६      | ७९       | हिमकिरणे लग्नगते          | २३      | २९       |
| हविस्तदेव सलिलं              | ४६      | १०१      | हिमद्युतेरभ्युदितस्य      | ३       | ४        |

| श्लोकानुक्रमणिका          | अ. क्रम | श्लो. सं |
|---------------------------|---------|----------|
| हिरण्यगर्भगर्भस्थं        | १८      | १६१      |
| हिरण्यरेता: पर्जन्यो      | ३९      | २०९      |
| हीनकालेऽधिके काले         | ४५      | ८६       |
| हीनाधिका न कर्तव्या       | ४५      | १७       |
| हुतेदाज्याक्तसमिधश्       | १८      | १२८      |
| हुत्वा च तप्येद्विप्रान्  | ४५      | ९७       |
| हेमलम्बो ३१ विलम्बश्च ३२  | ६       | २४       |
| होमं च कारयेत्प्राच्यां   | ४५      | १४७      |
| होमान्ते दक्षिणां दद्याच् | ४५      | २६       |
| हौतभुगजपादायमयाम्यक्षेषु  | ५       | ५        |



## द्वितीयं परिशिष्टम्

३.२.०      ग्रन्थोद्धृतभौगोलिकनामां सूचि: —

| क्रम. | भौगोलिकशब्दः | संदर्भः(अ. / श्लो.सं)   | प्रदेशः   |
|-------|--------------|---|---|
| १     | अङ्गः        | ८/५, १०/४८, ३२/३३   | बंगालः  |
| २     | अश्मकः       | ८/१, १०/४३  | त्रावणकोरः  |
| ३     | अवन्तिः      | ३९/१७४<br>९/३४, ३९/१७७  | मध्यप्रदेशः   |
| ४     | आनर्तः       | ९/५०  | सौराष्ट्रः  |
| ५     | आर्यावर्तः   | ९/३७  | हिमवद्विन्ध्य-<br>पर्वतयोः पवित्रभूमिः <sup>१</sup> |
| ६     | उज्जयिनी     | १०/४४   | उज्जयिनी  |
| ७     | कलिंगः       | ६/७६, ६/९९, ८/२<br>८/५, ९/४३, ९/४९<br>१०/४२, १०/४७, १८/३९<br>३२/२९, ४२/२७ | उत्तरप्रदेशः  |

<sup>१</sup> Holy land(Punyabhumi) between the Himvat & Vindhya mountain (History of Dharmashastra Vol. IV, P.V. Kane)

| क्रम. | भौगोलिकशब्दः | संदर्भः(अ. / श्लो.सं)                  | प्रदेशः                              |
|-------|--------------|--|--------------------------------------|
| ८     | काम्बोजः     | ९ / ३९, ९ / ४३, ९ ४८<br>९ / ५०, १०/४५  | पूर्वकाश्मीर /<br>पूर्वहिमालयप्रदेशः |
| ९     | काश्मीरः     | ८ / १, ८ / ५, ९ / ३९<br>९ / ४०, ९ / ४७ | काश्मीरः                             |
| १०    | कावेरी       | ९ / ३४                                 | कावेरी नदी                           |
| ११    | कुरुः        | ३२/२९                                  | दिल्लीसमीपे प्रान्तः                 |
| १२    | कैक्याः      | ९ / ३७, १०/४८                          | बियासनदीप्रदेश-<br>पश्चिमभागः        |
| १३    | कोंकणदेशः    | ६ / ८२, १०/५०, ३२/३०                   | कोंकणप्रदेशः                         |
| १४    | खशः          | ६ / ७६, ९ / ४९, १०/४६<br>११/१०, ३२/३३  | उत्तरभारत-<br>पर्वतीयप्रदेशः         |
| १५    | गान्धारः     | ९ / ४७, ३९/१७४,<br>३९/१७७              | कंदहारप्रांतः                        |
| १६    | गुर्जरः      | ६ / ५६, १०/४७, ४२/२७                   | गुजरातः                              |
| १७    | गौतमी        | ४२/२८                                  | गौतमी नदी .                          |

| क्रम. | भौगोलिकशब्दः | संदर्भः(अ. / श्लो.सं)  | प्रदेशः                                |
|-------|--------------|--|--|
| १८    | गौडः         | ६/५६, ६/९९, ८/१<br>८/५, ९/२१, ९/४१<br>१०/४६, १९/२६, ३२/३२<br>४२/२७ | उत्तरबंगालः                            |
| १९    | चीनः         | ९/४७, ९/४८, ९/५०   | चीनदेशः                                |
| २०    | त्रैगर्तिकः  | ९/५०   | लुधियाना/पतियाला<br>देशस्य दक्षिणभागः  |
| २१    | दर्दुरः      | ९/५०   | मैसूरस्य अग्निदिशि<br>स्थितः पर्वतः    |
| २२    | दशार्णजः     | ९/३७   | पूर्वमालवाभागः                         |
| २३    | द्रविडः      | ९/२१, ९/३९, १०/४८  | कांजीवरम्,<br>दक्षिणप्रदेशः            |
| २४    | नार्मदतीरं   | ९/३४   | नर्मदातटप्रदेशः                        |
| २५    | नेपालः       | ९/३५   | नेपालदेशः                              |
| २६    | नैमिषं       | १०/४८  | नैमिषारण्यं गोमती-<br>नदीसमीपे अरण्यम् |

| क्रम. भौगोलिकशब्दः       | संदर्भः(अ. / श्लो.सं)   | प्रदेशः  |
|--------------------------|---|--|
| २७ पाञ्चालः              | १०/४८, ३९/१७३,<br>३९/१७५, ३९/१७६  | रोहिलखण्डे<br>गङ्गा/यमुनामध्ययोः<br>सङ्घमप्रदेशः |
| २८ पाण्ड्यः              | १०/४४   | तिनेवल्ली/मदुराप्रदेशः                           |
| २९ पुलिन्दः              | ८/१, ९/४७, ९/४८   | दक्षिणदिल्ली/बुंदेल-<br>खंडस्य पश्चिमप्रान्तः    |
| ३० भागीरथी               | ३७/२२९, ४३/१२६  | गङ्गातटप्रदेशः                                   |
| ३१ मध्यमदेशः<br>मध्यदेशः | ६/७४, ९/२४<br>६/७८, ३२/३१,<br>४२/२६                                     | हिमवद्विंध्ययो-<br>र्मध्यभागः <sup>३</sup>       |
| २ मद्रः                  | ९/४१, १०/४७   | पंजाबप्रान्तः                                    |
| ३३ मागधः                 | ९/२१, ९/३९, ९/४८<br>९/५०, १०/४३, ११/१०<br>११/२९, १८/६५, ३२/३२<br>३९/१७४ | दक्षिणबिहारप्रान्तः                              |
| ३४ वङ्गः                 | ६/७६, ८/५, ९/४९<br>११/१०, ३२/२९, ३२/३३                                  | पूर्वबंगालः                                      |

२ हिमवद्विंध्ययोर्मध्यंयत्प्रग्विनशनादपि। प्रत्यगेव प्रयागाश्च मध्यदेशः स कीर्तिः ॥ मनु.२.२१

| क्रम. | भौगोलिकशब्दः  | संदर्भः(अ. / श्लो.सं)           | प्रदेशः                     |
|-------|---------------|---------------------------------|-----------------------------|
| ३५    | वर्वरः        | १८/७०                           | सिंधुसमीपस्था<br>शकप्रदेशाः |
| ३६    | वाहीकः        | ८/२, ९/४३, ३२/२९                | पंजाबप्रान्तः               |
| ३७    | विदेहः        | ९/४१, ३९/१७३,<br>३९/१७६, ३९/१७७ | मिथिला                      |
| ३८    | शूरसेनाः      | ९/४८, १०/४२, ३९/१७४             | मथुरा                       |
| ३९    | सरयुः         | ९/३५                            | सरयुनदी                     |
| ४०    | सिन्धुद्वीपः  | १८/६६                           | सिन्धुतटप्रदेशः             |
| ४१    | सिन्धुतीरः    | ९/३५                            | सिन्धुतटप्रदेशः             |
| ४२    | सौराष्ट्रदेशे | ८/५, ९/३८, ९/४९<br>३२/२९        | गुजरातमध्ये<br>सौराष्ट्रम्  |
| ४३    | सौवीरः        | ९/४९                            | सिंधु/झेलमनदीप्रदेशः        |
| ४४    | हूणः          | ११ १०, ३२/३३                    | भारतवायव्यप्रदेशे देशः      |

## तृतीयं परिशिष्टम्

**३.३.०** वसिष्ठसंहितायां निर्दिष्टानां सूचितानां च  
वैदिकमन्त्राणां सूचिः —

**३.३.१** निर्दिष्टानां वैदिकमन्त्राणां सूचि :—

| क्रमः | मन्त्रः                                    | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्  |
|-------|--|---------------------|--|
| १     | अग्निन्दूतम्<br>(अग्निं दूतं वृणीमहे)      | १८.४४               | ऋग्वेदः १.१२.१, अथर्व. २०.१०.१.१<br>साम. ३.७९०, तै. सं. २.५.८.५,<br>तै.ब्रा. ३.५.२.३                         |
| २     | अग्निन्दूतम्<br>(अग्निं दूतं वृणीमहे)      | १८.८६               | ऋग्वेदः १.१२.१, अथर्व. २०.१०.१.१<br>साम. ३.७९०, तै. सं. २.५.८.५,<br>तै.ब्रा. ३.५.२.३                         |
| ३     | अग्निर्मूर्ढा<br>(अग्निर्मूर्ढा दिवः ककुत) | १८.५०               | ऋग्वेदः ८.४४.१६, शु.यजु. ३.१२,<br>१३.१४, १५.२०, साम. २७, १५३२,<br>तै.सं. १.५.५१, ४.४.१.१<br>तै.ब्रा. ३.५.७.१ |
| ४     | अग्ने यजुष्ट<br>(अग्ने यजिष्ठो अध्वरे)     | १८.१२५              | ऋग्वेदः ३.१०.७, साम. १००   |
| ५     | अग्ने विवस्वदुषसस्तु                       | १८.५४               | ऋग्वेदः १.४४.१, साम. ४०; १७८०<br>(अग्ने विवस्वदुषसः:)  |

| क्रमः | मन्त्रः               | वसिष्ठसंहितासंदर्भः                                       | मूलम्   |
|-------|-----------------------|---|---|
| ६     | अतो देवाः             | ४६.८३<br>(अतो देवा अवन्तु नः)                             | ऋग्वेदः १.२२.१६, साम. १६.७४,  |
| ७     | अदितिर्यौश्च          | ४६.४०<br>(अदितिर्यौरदितिरंतरिक्षं)                        | ऋग्वेदः १.८९.१०, नि. ४.२३,<br>अथर्व. ७.६.१, वा.य. २५.२३,<br>तै.आ. १.१३.२                |
| ८     | अन्नाद्               | १८.६२<br>(अन्नात्परिस्थुतः)                               | शु.यजु. १९.७५   |
| ९     | अपमृत्युम् अपक्षुधाम् | ४५.१४४  | तै.ब्रा. ३.१०.८.१   |
| १०    | अर्यमा यानि           | ४६.५२<br>(अर्यमा णो अदितिं)                               | ऋग्वेदः ३.५४.१८   |
| ११    | आ कृष्णेन             | १८.४०   | ऋग्वेदः १.३५.२, शु.य. ३३.४३,<br>३४.३१, तै.सं. ३.४.११.२                                  |
| १२    | आनोभद्रास्य सूक्तस्य  | ४३.२०<br>आद्याः पञ्च च सप्त च<br>(आनो भद्राः क्रतवो यंतु) | ऋग्वेदः १.८९.१, वा.य. २५.१४<br>नि. ४.१९   |
| १३    | आप्यायस्य             | १८.४६<br>(आप्यायस्य समेतु)                                | ऋग्वेदः १.९१.१६, ९.३१.४,<br>शु.यजु. १२.११२, तै.सं. ३.२.५.३,<br>४.२.७.४, तां.ब्रा. १.५.८ |

| क्रमः | मन्त्रः  | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्   |
|-------|--|---------------------|---|
| १४    | आप्यायस्य<br>(आप्यायस्य समेतु)                                       | ४६.७७               | ऋग्वेदः १.९१.१६, ९.३१.४,<br>शु.यजु. १२.११२, तै.सं. ३.२.५.३,<br>४.२.७.४, तां.ब्रा. १.५.८   |
| १५    | आपोहिष्ठामयो<br>(आपो हि ष्ठा मयोभुवः)                                | १८.४८               | ऋग्वेदः १०.९.१, शु. यजु.<br>११.५०, ३६.१४, साम. १८.३७,<br>अथर्व. १.५.१, तै.सं. ४.१.५.१,<br>५.६.१.४, ७.४.१९.४,<br>तै.आ. ४.४२.४, १०.१.११ |
| १६    | आयङ्गौः  | १८.६७               | ऋग्वेदः १०.१८९.१, शु.यजु. ३.६,<br>तै.सं. १.५, ३.१, साम. ६३०, १३७६,<br>अथर्व. ६.३१.१, २०.४८.४  |
| १७    | आ यन्तु नः<br>(आयन्तु नः पितरः)                                      | ४६.४६               | वा.सं. १९.५८  |
| १८    | आवायो भूप<br>इत्याद्या ऋग्भिः<br>पञ्चभिरेव च<br>(आ वायो भूप शुचिपाः) | ४५.१०६              | ऋग्वेदः ९.९२.१, वा.य. ७.७<br>तै.सं. १.४.४.१, ३.४.२.१  |
| १९    | आश्लेषाभ्यः स्वाहा<br>दंदशूकेभ्यः स्वाहा                             | ४२.१४४              | तै.ब्रा. ३.१.४.७  |

| क्रमः | मन्त्रः   | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्  |
|-------|---|---------------------|--|
| २०    | इदं विष्णुः   | १८.५५               | ऋग्वेदः १.२२.१७, शु.यजु. ५.१५,<br>तै.सं.१.२, १३.१, साम.२२२, १६६९,<br>अथर्व.७.२६.४  |
| २१    | इन्द्रमिन्द्रञ्च  | १८.८४               | ऋग्वेदः ८.१२.१९  |
| २२    | इन्द्रव   | ४६.७१               | ऋग्वेदः ९.६९.१०  |
| २३    | इन्द्राग्नो आगतम्<br>(इन्द्राग्नौ आगतं सुतं)                  | ४६.६३               | ऋग्वेदः ३.१२.१, साम.६६९,<br>तै.सं.१.४.१५.१, वा.य. ७.३१,  |
| २४    | इन्द्रायेन्द्रो मरुत्वम्तु<br>(इन्द्रायेन्द्रो मरुत्वस्तु ते) | १८.६०               | ऋग्वेदः ९.६४.२२, साम ४७२, १०७६   |
| २५    | इमं मे वरुण<br>(इमं मे वरुण श्रुधि)                           | ४६.८९               | ऋग्वेदः १.२५.१९, साम.१५८५,<br>वा.य. २१.१, तै.ब्रा. २.१.११.६  |
| २६    | उदुत्यम्<br>(उदुत्यं जातवेदसं)                                | ४६.५४               | ऋग्वेदः १.५०.१, सामवेदः ३१,<br>अथर्व.१३.२.१६, २०.४७. १३<br>वा.सं. ७.४१, ८.४१, ३३, ३१<br>तै.सं. १.२.८.२, ४.४३.१, नि.१२.१५ |
| २७    | उद्घृतासि<br>(उद्घृतासि वराहेन)                               | १८.११८              | तै.आ. १०.१.८   |

| क्रमः | मन्त्रः         | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्  |
|-------|-----------------|---------------------|--|
| २८    | उत्तानपर्ण      | १८.६४               | ऋग्वेदः १०.१४५.२, अथर्व. ३.१८.२<br>(उत्तानपर्णे सुभगे)   |
| २९    | कदुद्राय        | १८.९८               | ऋग्वेदः १.४३.१, तै.आ. १०.१७.१<br>(कदुद्राय प्रचेतसे)   |
| ३०    | कयानश्चित्राभुव | १८.७१               | ऋग्वेदः ४.३१.१, शु.यजु. २७.३९,<br>३६.४, तै.सं.४.२, ११.२, साम.१६९,<br>६८२, तै.आ.४.४२.२अथर्व. २०.१२४.१ |
| ३१    | केतु कृणवन्न    | १८.७५               | ऋग्वेदः १.६.३, शु.यजु. २९.३७,<br>तै.सं.७.४, २०.१, साम.१४.७०,<br>अथर्व. २०.२६.६, ४७.१२, ६९.११         |
| ३२    | कोणे शिशुः      | १८.८०               | ऋग्वेदः ९.१०२.१, साम.५७०,<br>१०.१३   |
| ३३    | गणानान्त्वा     | १८.७८               | ऋग्वेदः २.२३.१, तै.सं. २.३, १४.३<br>(गणानां त्वा गणपतिं)   |
| ३४    | गौरी            | १८.८०               | ऋग्वेदः १.१६४.४१, तै.आ.१.९.४,<br>तै.ब्रा.२.४.६.११, अथर्व. ९.१०.२१<br>१३.१.४२                         |

| क्रमः | मन्त्रः  | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्   |
|-------|--|---------------------|---|
| ३५    | गौरीर्मिमाय                                      | १८.४७               | ऋग्वेदः १.१६४.४१, अथर्व.<br>९.१०.२१, १३.१.४२, तै.ब्रा.<br>२.४.६.११, तै.आ. १.९.४   |
| ३६    | चित्रं देवानाम्<br>(चित्रं देवानामुदगादनीकं)     | ४६.५७               | ऋग्वेदः १.११५.१, ऐ.आ.३.९,<br>अथर्व. १३.२.३५, २०.१०७.१४,<br>तै.सं.१.४.४३१, २.४.१४.४, वा.य.<br>७.४२, १३.४६, तै.ब्रा.२.८.७.३,<br>नि.१२.१६, तै.आ. १.७.६, २.१३.१ |
| ३७    | जातवेदसे   | १८.७९               | ऋग्वेदः १.९९.१, तै.आ.१०.२.१   |
| ३८    | जीमूतस्य<br>(जीभूतस्येव भवति प्रतीकं)            | ३४.१९               | ऋग्वेदः ६.७५.१, वा.य.२९.३८,<br>तै.सं. ४.६, ६.१  |
| ३९    | तव वायुवृत्त<br>(तव वायुवृत्तस्पते)              | १८.९४               | ऋग्वेदः ८.२६.२१, वा.य.२७.३४   |
| ४०    | तत्पुरुषाय विद्धहे                               | ३५.२२               | तै.सं. २.९.१, तै.आ. १०.१.५  |
| ४१    | त्वन्नो अग्न<br>(त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्) | १८.९२               | शु. यजु. अ.२१.३   |
| ४२    | त्वेष ब्रह्म च<br>(एष ब्रह्मा च ऋत्विजः)         | १८.७७               | साम. १.४३८, २.१११८<br>तै.ब्रा. ३.७.९.५  |

| क्रमः | मन्त्रः   | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्   |
|-------|---|---------------------|---|
| ४३    | त्रायन्ताम्<br>(त्रायन्तामिह देवाः)                                   | ४६.८९               | ऋग्वेदः १०.१३७.५, अथर्व. ४.१३.४,  |
| ४४    | त्र्यम्बकं  | १८.४२               | ऋग्वेदः ७.५१.१२, शु.य. ३.६०,<br>तै.सं.१.८.६.२, अथर्व. १४.१.१७                             |
| ४५    | देवस्य त्वा<br>(देवस्य त्वा सवितुः)                                   | ४६.१७               | शु.यजु. १.१०, २१.२४, ५.२२, २६;<br>६.१.९.३०; ९.३०, ३८; ११.९.२८;<br>१८.३७. २०.३; ३७.१, ३८.१ |
| ४६    | देवस्य त्वा<br>(देवस्य त्वा सवितुः)                                   | ३३.१६               | शु.यजु. १.१०, २१.२४, ५.२२, २६;<br>६.१.९.३०; ९.३०, ३८; ११.९.२८;<br>१८.३७. २०.३; ३७.१, ३८.१ |
| ४७    | देवाः कपोत इत्यादि<br>जप्तव्याः पञ्चभिर्द्विजैः<br>(देवाः कपोत इषितो) | ४५.११४              | ऋग्वेदः १०.१६५.१, अथर्व. ६.२७.१,<br>नि. १.१७  |
| ४८    | नमस्ते रुद्र  | ४६.९९               | वा.सं. १६.१   |
| ४९    | नमो ब्रह्मण्य<br>(नमो ब्रह्मणे)                                       | ४६.२७               | ऐ.ब्रा. ८.९.५   |
| ५०    | नमो उस्तु सर्पेभ्य<br>नमो अस्तु                                       | ४२.१४६<br>४६.४२     | शु.यजु. १३.६<br>शु.यजु. १३.६  |

| क्रमः | मन्त्रः          | वसिष्ठसेहितासंदर्भः             | मूलम्  |
|-------|------------------|---------------------------------|--|
| ५१    | नमोऽस्तु         | १८.७३<br>(नमोऽस्तु सर्वेभ्यः)   | शु.यजु.१३.६  |
| ५२    | नवो नवो भवति     | ४६.३१<br>(नवो नवो भवति जायमानो) | ऋग्वेदः १०.८५.१९, नि.११.६,<br>अथर्वा.७.८१.२, १४.१.२४,<br>तै.सं.२.३.५.३; ४.१४.१ |
| ५३    | नमः शङ्कराय      | ४६.३४                           | वा.सं. १६.४१   |
| ५४    | पुनन्तु मा       | ४६.२५<br>(पुनन्तु मा देवजनाः)   | ऋग्वेदः ९.६७.२७, वा.य.१९.३९,<br>तै.ब्रा.१.४.८.१; २.६.३.४                       |
| ५५    | प्रजापतये स्वाहा | ४३.३१                           | वा.सं.१८.२८, २२.३२   |
| ५६    | प्रजापते न       | १८.६८<br>(प्रजापते न त्वदेतानि) | ऋग्वेदः १०.१२१.१०, शु.यजु.१०.२०,<br>२३.६५, अथर्वा.७.७९.४, ८०.३,                |
| ५७    | ब्रह्मज्ञानम्    | १८.७२<br>(ब्रह्म ज्ञानं प्रथमं) | शु.यजु. १३.३, अथर्व. ४१.१, ५.६.१   |
| ५८    | ब्रह्मज्ञानम्    | १८.५९<br>(ब्रह्म ज्ञानं प्रथमं) | शु.यजु. १३.३, अथर्व. ४१.१, ५.६.१   |
| ५९    | बृहस्पते अति     | ४६.४०<br>(बृहस्पते अति यदर्यः)  | ऋग्वेदः २.२३.१५, शु.यजु. २६.३,<br>तै.सं.१.८, २२.२                              |

| क्रमः | मन्त्रः   | वसिष्ठसंहितासंदर्भः   | मूलम् |
|-------|---|---|-------|
| ६०    | बृहस्पते अतियदर्यः १८.५८<br>(बृहस्पते अति यदर्यः)                                       | ऋग्वेदः २.२३.१५, शु.यजु. २६.३,<br>तै.सं.१.८, २२.२                         |       |
| ६१    | भग एव भगवान् ४६.४८<br>(भग एव भगवाँ अस्तु देवाः)   | ऋग्वेदः ७.४.१.५,<br>अथर्व.३.१६.५, वा.य. ३४.३८,<br>तै.ब्रा. २.५.५.१, ८.९.८ |       |
| ६२    | भद्राग्ने इति सूक्तस्य ४३.१९<br>आद्यचर्चो द्वे जपोत्यकौ<br>(भद्रा ते अग्ने स्वनीकः)     | ऋग्वेदः ४.६.६, तै.सं. ४.३, १३.१   |       |
| ६३    | मित्रस्य चर्षिणीः ४६.६६   | ऋग्वेदः ३.५९.६, वा.सं.११.६२,  |       |
| ६४    | मोषुण ४६.७४   | ऋग्वेदः १.१७३.१२, वा.सं.३.४६  |       |
| ६५    | मोषुणस्तु १८.९०   | ऋग्वेदः १.१७३.१२, वा.सं.३.४६  |       |
| ६६    | मोषुणस्तु ४३.२  | ऋग्वेदः १.१७३.१२, वा.सं.३.४६  |       |
| ६७    | मूलाय स्वाहा ४३.३३<br>प्रजापतये स्वाहा । मूलं<br>प्रजामित्यष्टभिर्वाक्यै मन्त्रद्वयेन च | तै.ब्रा. ३.१.५.३<br>वा.सं.१८.२८, २२.३२<br>तै.ब्रा. ३.१.२.२                |       |
| ६८    | मूलं प्रजामिति ४३.२९<br>मन्त्रद्वयस्य   | तै.ब्रा. ३.१.२.२  |       |

| क्रमः | मन्त्रः                     | वसिष्ठसंहितासंदर्भः                    | मूलम्  |
|-------|-----------------------------|--|--|
| ६९    | मूलं प्रजामित्यष्टौ         | ४३.३०<br>(मूलं प्रजां विरावत्रं विदेय) | तै.ब्रा.३.१.२.२  |
| ७०    | यत इन्द्रं त्रिभिर्मन्त्रैः | ४५.१३९<br>(यत इन्द्रं भयामहे)          | ऋग्वेदः ८.६१.१३, तै.आ.१०.१.९,<br>तै.ब्रा.३.७.११.४ अथर्व. १९.१५                                   |
| ७१    | यदस्य कर्मणः                | १८.१४९                                 | आ.श्रो. ३.१२.१, आ.गृ.१.१०.२३   |
| ७२    | यमाय सोमम्                  | १८.८८<br>(यमाय)                        | शु.यजु. ३८.९   |
| ७३    | रुद्राय स्वाहा              | ४५.६४                                  | श.ब्रा. ५.१.१, तै.ब्रा.३.१.४.४   |
| ७४    | विश्वेदेवास                 | ४६.८०<br>(विश्वेदेवास आ गत)            | ऋग्वेदः २.४१.१३, ६.५२.७,<br>शु.य.७.३४  |
| ७५    | शतमग्निः                    | ४६.९३<br>(अग्निमन्त्रैः)               | ऋग्वेदः १.१.१  |
| ७६    | शत्रो देवी                  | १८.६६                                  | ऋग्वेदः १०.९.४, शु.यजु. ३६.१२,<br>तै.ब्रा.१.२, १.१, २.५.८.५, साम.३३,<br>तै.आ.४.४२.४, अथर्व.१.६.१ |
| ७७    | शुक्रं तेऽन्यत्             | ३७.१०३<br>(शुक्रं ते अन्यद्यजन्ते)     | ऋग्वेदः ६.५८.१, नि. १२.१७,<br>तै.सं.४.१, ११.२, साम.७५,<br>तै.आ.१.२.४, १०.१, ४.५.६                |

| क्रमः | मन्त्रः                               | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्   |
|-------|---------------------------------------|---------------------|---|
| ७८    | स नः पिता<br>(चित्रं देवानामुदगानीकं) | ४६.६१               | ऋग्वेदः १.१.९, नि. ३.२१<br>तै. सं. १.५.६.२, वा. य. ३.२४,  |
| ७९    | सप्त ते अग्रे:                        | १८.१५१              | वा. सं. १७.७९   |
| ८०    | सार्पेभ्यः स्वाहा                     | ४२.१४४              | तै. ब्रा. ३.१.४.७   |
| ८१    | साम्राज्यम्<br>(साम्राज्याय सुक्रतुः) | ३३.२४               | ऋग्वेदः १.२५, १०.९  |
| ८२    | सुदेव<br>(सुदेवो अद्य प्रपतेद्)       | ४५.११५              | ऋग्वेदः १०.९५.१४ श. ब्रा. ११.५, १.८,<br>नि. ७.३           |
| ८३    | सोमो धेनुम्<br>(सोमो धेनुं सोमो)      | १८.९६               | ऋग्वेदः १.९१.२०, वा. य. ३४.२१<br>तै. ब्रा. २.८.३.१        |
| ८४    | स्योना पृथिवी                         | १८.५२               | ऋग्वेदः १.२२.१५, शु. यजु. ३५.२१,<br>३६.१३, अथर्व. १८.२.१९ |
| ८५    | हंसः शुचिषद्                          | ४६.९९               | ऋग्वेदः ४.४०.५, वा. सं. १०.२४,<br>१२.१४                   |

३.३.२

## वसिष्ठसंहितायां सूचितानां वैदिकमन्त्राणां सूचिः —

| क्रमः | मन्त्रः                             | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्  |
|-------|-------------------------------------|---------------------|--|
| १     | अघोरमन्त्रः                         | ४५.२०               | मै.सं.२.९.१०, तै.सं. १०.४५.१   |
| २     | अब्लिङ्गैः<br>(आपो हि ष्टा मयोभुवः) | १८.१३६              | ऋग्वेदः १०.९.१, शु. यजु. ११.५०,<br>३६.१४, साम. १८.३७, अथर्व.१.५.१,<br>तै.सं.४.१.५.१, ५.६.१.४, ७.४.१९.४,<br>तै.आ. ४.४२.४, १०.१.११ |
| ३     | अब्लिङ्गैः<br>(आपो हि ष्टा मयोभुवः) | ३३.१७               | ऋग्वेदः १०.९.१, शु. यजु. ११.५०,<br>३६.१४, साम. १८.३७, अथर्व.१.५.१,<br>तै.सं.४.१.५.१, ५.६.१.४, ७.४.१९.४,<br>तै.आ. ४.४२.४, १०.१.११ |
| ५     | अब्लिङ्गैः<br>(आपो हि ष्टा मयोभुवः) | ३४.१२               | ऋग्वेदः १०.९.१, शु. यजु. ११.५०,<br>३६.१४, साम. १८.३७, अथर्व.१.५.१,<br>तै.सं.४.१.५.१, ५.६.१.४, ७.४.१९.४,<br>तै.आ. ४.४२.४, १०.१.११ |
| ६     | अब्लिङ्गैः<br>(आपो हि ष्टा मयोभुवः) | ४२.१३७              | ऋग्वेदः १०.९.१, शु. यजु. ११.५०,<br>३६.१४, साम. १८.३७, अथर्व.१.५.१,<br>तै.सं.४.१.५.१, ५.६.१.४, ७.४.१९.४,<br>तै.आ. ४.४२.४, १०.१.११ |
| ७     | आब्लिङ्गैर्वारिमन्त्रैः             | ४५.१४६              | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा.सं.२१.१  |

| क्रमः | मन्त्रः                                 | वसिष्ठसंहितासंदर्भः            | मूलम्  |
|-------|---|--------------------------------|--|
| ८     | अब्लिङ्गैर्वारिमन्त्रकैः                | ४६.११                          | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा. सं. २१.१  |
| ९     | अब्लिङ्गैर्वारुणैर्मन्त्रै              | १८.१०४                         | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा. सं. २१.१  |
| १०    | अब्लिङ्गैर्वारुणैर्मन्त्रैः             | ४३.१७                          | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा. सं. २१.१  |
| ११    | अब्लिङ्गैर्वारुणैः सूक्ते�              | ३५.३७                          | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा. सं. २१.१  |
| १२    | अब्लिङ्गैर्वारुणैः सूक्तैः              | ३६.७                           | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा. सं. २१.१  |
| १३    | अब्लिङ्गैर्वारुणैः<br>सूक्तैर्मन्त्रितं | ४५.१९१                         | ऋग्वेदः १.२५.१९, वा. सं. २१.१  |
| १४    | अब्लिङ्गैर्वेदमन्त्रकैः                 | ३६.१०<br>(आपो हि ष्टा मयोभुवः) | ऋग्वेदः १०.९.१, शु. यजु. ११.५०,<br>३६.१४, साम. १८.३७, अथर्व. १.५.१,<br>तै. सं. ४.१.५.१, ५.६.१.४, ७.४.१९.४,<br>तै. आ. ४.४२.४, १०.१.११ |
| १५    | गजपतिर्गजसूक्तं                         | ३५.५<br>(गणानां त्वा गणपति)    | ऋग्वेदः २.२३.१, तै. सं. २.३, १४.३  |
| १६    | चमकं नमकं सूक्त-                        | ४५.२२<br>पुरुषोक्ताङ्गजापकैः   | वा. सं. १६, १८.१   |

| क्रमः | मन्त्रः   | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्   |
|-------|---|---------------------|---|
| १७    | त्र्यम्बकस्य<br>(त्र्यम्बकेन)   | ४६.२१               | ऋग्वेदः ७.५९.१२, शु. यजु. ३.६०,<br>अथर्व. १४.१.१७, तै.सं.१.८.६.२  |
| १८    | त्रैयम्बकेन<br>(त्र्यम्बकेन)  | ४५.१३९              | ऋग्वेदः ७.५९.१२, शु. यजु. ३.६०,<br>अथर्व. १४.१.१७, तै.सं.१.८.६.२  |
| १९    | पञ्चदुर्गा रुद्रं<br>पुरुषसूक्तकम् ।<br>पञ्चब्रह्मादिभिर्मन्त्रैः<br>गजशालासु मार्जयेत् | ३५.४३               | सदस्प्पतिं वा.सं. ३२.१३ तः १८,<br>वा.सं.१६.१, ३०.१, ऋग्वेदः १०.९०.१<br>शु.यजु. १३.३, अथर्व. ४१.१, ५.६.१ |
| २०    | पुरुषसूक्तम्  | १८.५६               | ऋग्वेदः १०.९०.१, वा.सं.३०.१   |
| २१    | पुरुषसूक्तम्  | ४३.१८               | ऋग्वेदः १०.९०.१, वा.सं.३०.१   |
| २२    | पुरुषसूक्तम्  | ४३.२२               | ऋग्वेदः १०.९०.१, वा.सं.३०.१   |
| २३    | प्राजापत्येन मन्त्रेण   | ४५.९६               | ऋग्वेदः १०.१२१.१०, वा.सं.१०.२०,<br>२३.६५  |
| २४    | भद्रभक्तं च भद्राणे:<br>आनो भद्रा   | ४३.१९               | ऋग्वेदः १.८९.१, वा.सं. २५.१४  |

| क्रमः | मन्त्रः  | वसिष्ठसंहितासंदर्भः | मूलम्   |
|-------|--|---------------------|---|
| २५    | मृत्युवारुणसूक्तैश्च<br>ग्रहमन्त्रैस्त्रिपञ्चकैः | ४५.१४९              | वा.सं. अ.३५, ऋग्वेदः१.२५.१९,<br>वा.सं. २१.१<br>१.ऋग्वेदः१.३५.२ (२) शु.यजु.९.४०,<br>(३) ऋग्वेदः८.४४.१६ (४) शु.यजु.<br>१५.५४ (५) ऋग्वेदः२.२३.१५ (६)<br>शु.यजु.१९.७५ (७) ऋग्वेदः१०.९.४<br>(८) ऋग्वेदः ४.३१.१ (९) ऋग्वेदः<br>१६.३ |
| २६    | रुद्रसूक्तम्                                     | ४३.१९               | वा.सं. १६.१   |
| २७    | रुद्राय स्वाहा                                   | ४५.६४               | श.ब्रा. ५.१.१, तै.ब्रा.३.१.४.४  |
| २८    | रुद्रेण पुरुषसूक्तेन                             | ३५.३१               | वा.सं. १६.१   |
| २९    | वास्तुमन्त्रेण<br>(वास्तोष्ट्वे ... ... ...)     | ३९.२१६              | ऋग्वेदः७.५४.१, ७.५४.२, ७.५४.३   |
| ३०    | सावित्रा   | ३३.२५               | ऋग्वेदः३.६२.१०  |
| ३१    | सावित्रसौम्य-<br>नैऋत्यमन्त्रैः                  | ४३.३४               | ऋग्वेदः३.६२.१०, ऋग्वेदमण्डल ९<br>वा.सं. १२.६२   |
| ३२    | सौम्यमन्त्रेण                                    | ४५.७१               | ऋग्वेदमण्डल ९   |

## चतुर्थं परिशिष्टम्

**३.४.० अन्यग्रन्थेषु वसिष्ठवचनानि**

**३.४.१ मुहूर्तचिन्तामणिग्रन्थे वसिष्ठोक्तश्लोकानां सूचिः -**  
**एते श्लोकाः वसिष्ठसंहितायां विवाहप्रकरणे, द्वात्रिंशदध्याये सन्ति।**

एकार्गलोपग्रहपातलताजामित्रकर्त्तर्युदयादिदोषाः ।  
 नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपत्रे लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥६८॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१२९ )  
 उपग्रहर्क्षकुरुबाह्लिकेषु कलिङ्गवङ्गेषु च पातितं भम् ।  
 सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भं देशेषु वर्ज्य शुभविद्धभं च ॥६९॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-२९ )

**मुहूर्तचिन्तामणिग्रन्थे पीयूषधाराटीकायामुद्भूतवसिष्ठोक्तश्लोकाः -**

अध्येतव्यं ब्राह्मणैरैव तस्माज्ज्योतिःशास्त्रं पुण्यमेतद्वस्यम्।  
 एतद्बुद्ध्वा सम्यगाप्नोति ३नूनं धर्मं चार्थैः मोक्षमग्र्यं यशश्च ॥२॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१ श्लो.-७)  
 त्रिस्कन्धपारङ्गम एव पूज्यः श्राद्धे सदा भूसुरवृन्दमध्ये४।  
 नक्षत्रसूची ‘खलु पापरूपो हेयः सदा सर्वसुधर्मकृत्ये ॥२॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१ श्लो.-१०)  
 वह्निर्विधाताद्रिसुता गणेशः सर्पः कुमारो दिनपो महेशः ।  
 दुर्गा यमो विश्वहरी च कामः शिवो निशीशश्च पुराणदृष्टः ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -३)

३ व.सं. यस्मादर्थधर्म

४ व.सं. वृन्दकाद्यैः

५ व.सं. किल

नोद्वाहयात्रोपनयनप्रतिष्ठासीमन्तचौलाखिलवास्तुकर्म ।  
 गृहप्रवेशाखिलमङ्गलाद्यं कार्यं हि मासादितिथौ कदाचित् ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -५)  
 सप्ताङ्गचिह्नानि नृपस्य वास्तुव्रतप्रतिष्ठाखिलमङ्गलानि ।  
 यात्राविवाहाखिलभूषणाद्य<sup>६</sup>-<sup>७</sup>कार्यं द्वितीयादितिथौ सदैव ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -६)  
 सङ्गीतविद्याखिलशिल्पकर्मसीमन्तचौलान्नगृहप्रवेशम् ।  
 कार्यं द्वितीये दिवसे यदुक्तं सदा तृतीये दिवसेऽपि कार्यम् ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -७)  
 रिक्तासु 'विद्युद्धबन्धशस्त्रविषाग्निधातादि च याति सिद्धिम् ।  
 'यन्मङ्गलं तासु कृतं च मूढैर्विनाशमायाति तदा तु नूनम् ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -८)  
 शुभानि कार्याणि चरस्थिराणि चोक्तान्यनुक्तान्यपि यानि तानि ।  
 सिद्धिं प्रयान्त्याशु ऋणप्रदानं विना नागतिथौ सदा प्रभूतम् ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -९)  
 अभ्यङ्गयात्रापितृकर्मदन्तकाष्ठं विना पौष्टिकमङ्गलानि ।  
 षष्ठ्यां विधेयानि रणोपयोग्यशिल्पानि वास्त्वम्बरभूषणानि ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -१०)  
 द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां कथितान्यपि ।  
 तानि सिद्ध्यन्ति कार्याणि सप्तम्यामखिलान्यपि ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -११)  
 संग्रामयोग्याखिलवास्तुशिल्पनृत्यप्रभेदाखिललेखनानि ।  
 स्त्रीरत्नचर्याखिलभूषणानि कार्याणि कर्माणि महेशतिथ्याम् ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -१२)  
 द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां सप्तमीतिथौ ।

- ६ भूषणं
- ७ यत्कार्यं
- ८ शत्रोर्वध
- ९ सन्मङ्गल

उक्तानि यानि सिद्ध्यन्ति दशम्यां तानि सर्वदा ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -१३)  
 ब्रतोपवासाखिलधर्मकार्यसुरोत्सवाद्याखिलवास्तुकर्म ।  
 संग्रामयोग्याखिलवास्तुकर्म विश्वे तिथौ सिद्ध्यति शिल्पकर्म ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -१४)  
 पृथिव्यां यानि १०कर्माणि ११धर्मपुष्टिशुभानि च ।  
 चरस्थिराणि द्वादश्यां १२यात्रां नवगृहं विना ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -१५)  
 विधातृगौरीभुजगभान्वन्तकदिनेषु च ।  
 उक्तानि तानि सिद्ध्यन्ति त्रयोदश्यां विशेषतः ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं.अ.-१२ श्लो. -१६)  
 यज्ञक्रिया पौष्टिकमङ्गलानि संग्रामयोग्याखिलवास्तुकर्म ।  
 उद्घाहशिल्पाखिलभूषणाद्यां कार्यं प्रतिष्ठा खलु पौर्णिमास्याम् ॥३॥ प्र.१  
 (व.सं.अ.-१२ श्लो. -१७)  
 सदैव दर्शे पितृकर्म चैव नान्यद्विधेयं शुभपौष्टिकाद्यम् ।  
 मूढैः कृतं तत्र शुभोत्सवाद्यं विनाशमायात्यचिराद्<sup>१३</sup> भृशं तत् ॥३, ३५॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१२ श्लो. -१८)  
 १४शुक्रज्ञगुरुमन्देज्यवारा नन्दादिषु क्रमात् ।  
 सिद्धा तिथिः सिद्धिदा स्यात्सर्वकार्येषु<sup>१५</sup> सर्वदा ॥४॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-४१ श्लो. -४४)  
 सिद्धा तिथिर्हन्ति समस्तदोषान्यान्मासशून्यानपि मासदर्घान्।  
 दिनप्रदर्घानपि चान्यदोषानेकादशी यद्वदशेषपापान् ॥४॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो. -१२८)

- १० कार्याणि
- ११ कर्म
- १२ यात्रान्नग्रहणं
- १३ चिराद्दुवं
- १४ शुक्रज्ञकुरुमन्देज्यवारा
- १५ कालेषु

नन्दाभौमार्कयोर्भद्रा शुक्रेन्द्रोश्च जया बुधे ।

शुभयोगा गुरौ रिक्ता पूर्णा मन्देऽमृताह्वया ॥५॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४१ श्लो. -४३)

स्त्रीसेवनं पर्वसु पक्षमध्ये <sup>१६</sup>पलं च षष्ठीसु <sup>१७</sup>सर्वतैलम् ।

नृणां विनाशाय चतुर्दशीषु क्षुरक्रिया स्यादसकृतदाशु ॥७॥ प्र.१

(व.सं. अ.-१२ श्लो. -२१)

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा त्वमावस्या च पूर्णिमा ।

पुण्यानि पञ्च पर्वाणि संक्रान्तिदिनपस्य च ॥७॥ प्र.१

(व.सं. अ.-१२ श्लो. -१९)

कामदुर्गान्तकविधिनष्टेन्द्रकदिनेषु च ।

सकृदामलकस्नानं सम्पत्पुत्रविनाशनम् ॥७॥ प्र.१

(व.सं. अ.-१२ श्लो. -२८)

द्वादश्येकादशीनागगौरीस्कन्दवसुष्वपि ।

नवम्यां दग्धयोगाख्या भानुवारादितः क्रमात् ॥९॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो. -८)

कुजाक्योः सप्तमी षष्ठी चन्द्रे भानौ चतुर्थिका ।

द्वितीया ज्ञेऽष्टमी जीवे नवमी शुक्रवासरे ॥

अचिकित्सागदा योगा मङ्गलेष्वपि निन्दिताः ॥९॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो. -११,१२ प्र.पा.)

सप्तष्ट्यादितिथयः सोमवारादिभिर्युताः ।

अग्निजिह्वाः सप्त योगा मङ्गले कुलनाशनाः <sup>१८</sup> ॥९॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो. -१४)

दिवामृत्युप्रदाः पापा दोषास्त्वेते न रात्रिषु ।

अष्टमी नवमी चैत्रे पक्षयोरुभयोरपि ।

माधवे द्वादशी त्याज्या पक्षयोरुभयोरपि ॥

ज्येष्ठे त्रयोदशी निन्द्या सिते कृष्णे चतुर्दशी ।

१६ मांस

१७ तैलवर्ज्यम्

१८ कुलनाशदाः

आषाढे कृष्णपक्षस्य<sup>१९</sup> षष्ठी सप्तम्यसत्रदा ॥  
 द्वितीया च तृतीया च श्रावणे सितकृष्णयोः ।  
 प्रथमा च द्वितीया च नभस्ये मासि निन्दिते<sup>२०</sup> ॥  
 दशम्येकादशी निन्द्या मासीषे शुक्लकृष्णयोः ।  
 ऊर्जे चतुर्दशी शुक्ले<sup>२१</sup> कृष्णपक्षे<sup>२२</sup> तु पञ्चमी ॥  
 सप्तमी चाष्टमी सौम्ये पक्षयोरुभयोरपि ।  
 पौषे पक्षद्वये चैव चतुर्थी पञ्चमी तथा ॥  
 माघे तु पञ्चमी षष्ठी कृष्णे शुक्ले यथाक्रमम्<sup>२३</sup> ।  
 तृतीया च चतुर्थी च फालुने सितकृष्णयोः ॥  
 तिथयो मासशून्याख्याः वंशवित्तविनाशदाः<sup>२४</sup> ।  
 आसु श्राद्धादि कुर्वीत नैव मङ्गलमाचरेत् ॥१०॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-४२ श्लो. -७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४)  
 अश्विनी रोहिणी चैत्रे शून्यभे परिकीर्तिते ।  
 चित्रास्वाती च वैशाखे ज्येष्ठे विश्वेज्यतारके<sup>२५</sup> ॥  
 भगवासवमाषाढे श्रावणे हरिविश्वभे<sup>२६</sup> ।  
 नभस्ये वारुणअन्त्यर्क्षमजपादश्युज्यपि ॥  
 कार्तिके पितृवह्न्यक्षे<sup>२७</sup> २८ मार्गे चित्रादिदैवते ।  
 पौषे दस्तकराद्र्षाः स्युर्मधे मूलं च विष्णुभम् ॥  
 तपस्ये शक्रभरणी शून्यभान्याहुरग्रजाः ।

- १९ पक्षे च
- २० निन्दिता
- २१ शुक्ल
- २२ च
- २३ यथाक्रमात्
- २४ शुभकर्मविनाशदाः
- २५ विश्वाख्यतारकाः
- २६ विश्वभं
- २७ वस्त्रक्षे
- २८ सौम्ये

एषु ३० यत्तु कृतं कर्म धनैः सह विनश्यति ॥१४-१५॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो. -७४,७५,७६,७७)

घटमत्स्यवृषा युग्ममेषकन्याः सवृश्चिकाः ।

तुलाचापकुलीराख्यमृगसिंहाश्च<sup>३०</sup> राशयः ॥

चैत्राद्यो<sup>३१</sup> मासशून्याख्या वंशवित्तविनाशदाः ।

तस्मात्तान्संपरित्यज्य शोभनं कारयेत्सुधीः ॥१६॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-८५,८६)

मृगसिंहै तृतीयायां प्रथमायां तुलामृगौ ।

पञ्चम्यां बुधराशौ द्वौ सप्तम्यां चापचन्द्रभे ॥

नवम्यां सिंहकीटाख्यावेकादश्यां गुरोर्गृहे ।

वृषमीनौ त्रयोदश्यां दग्धसंज्ञास्त्वमी गृहाः ॥

दग्धसद्वनि यत्कर्म कृतं सर्वं विनश्यति ।

तस्माद्वाधा गृहास्त्याज्याः शोभनेष्वखिलेष्वपि ॥१७॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-७०,७१,७२)

सूर्यभौमशनिराहुकेतवः ३२ पापसंज्ञखचराः ३३ क्षयिचन्द्रः ।

पूर्णचन्द्रगुरुशुक्रसोमजाः सर्वकर्मसु हि सौम्यखेचराः ॥३२॥ प्र.१

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-४८)

ग्रस्तोदये चोर्द्धमनिष्टमादौ ग्रस्तास्तमानेऽप्युदुमासषट्कम् ।३३ । प्र.१

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१८)

स्वजन्ममासक्षीतिथिक्षयेषु वैनाशिकाद्व्यूक्षगणेषु भेषु ।

नोद्वाहमात्माभ्युदयाभिलाषी नैवाद्यगर्भं द्वितयं कदाचित् ॥३४॥ प्र.१

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१५)

३५ स वैधृतो यो व्यतीपातयोगः सर्वोऽपि नेष्टः परिघार्द्धमाद्यम् ॥३५॥ प्र.१

---

२९ येनकृतं

३० सिहाख्यराशयः

३१ चैत्राद्या

३२ क्रूर

३३ क्षयेन्दुना

३४ सवैधृताख्यो

(व.सं.अ.-१५ श्लो.-४ द्वि.पा.)

न कुर्यान्मङ्गलं विष्ण्यां जीवितार्थी कदाचन ।  
कुर्वन्नजस्तदा क्षिप्रं तत्सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥३५/४४॥ प्र.१

(व.सं. अ.-१६ श्लो.-१२)

अवमाख्यातिथेर्दोषं केन्द्रगो देवपूजितः ।  
हन्ति यद्वत्पापचयम्<sup>३५</sup> शून्यशयनव्रतम् ॥३५॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४३ श्लो.-१५६)

निधनं तु प्रहराद्वेतु निःसत्त्वं यमघण्टके ।  
कुलिके सर्वनाशः स्याद्रात्रावेते न दोषदाः ॥३५॥ प्र.१ पृ. ४२

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-७७)

महापातौ वैधृतिश्च उपरागसमः सदा ।  
तस्माद्विनत्रयं त्याज्यं<sup>३६</sup> मध्यपूर्वापराभिधम् ॥३५॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-९४)

चतुर्दशो चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ।  
षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षच्छिद्राह्याः<sup>३७</sup> इमाः ॥

क्रमादेतासु तिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः ।

भूताष्टमनुतत्त्वाङ्कुदशशेषास्तु शोभनाः ॥

दोषनाडीषु यत्कर्मं शुभं सर्वं विनश्यति ।

विवाहे विधवा नारी व्रात्यः स्याच्चोपनायने ॥ प्र.१

सीमन्ते गर्भनाशः स्यात्प्राशने मरणं ध्रुवम् ।

अग्निना दह्यते क्षिप्रं गृहारम्भे विशेषतः ॥

राजराष्ट्रविनाशः स्यात्प्रतिष्ठायां<sup>३८</sup> विशेषतः ।

किंमत्र बहुनोक्तेन कृतं कर्म विनश्यति ॥३६॥ प्र.१

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-३५, ३६, ३७, ३८, ३९)

वधबन्धविषागन्यस्त्रछेदनोच्चाटनादि यत् ।

---

३५ द्वित्रिषड्वार्षिकं व्रतम्

३६ तच्च पूर्वापरदिनम्

३७ क्रमात्

३८ न संशयः

तुरङ्गमहिषोषादि कर्म विष्टयां <sup>३९</sup>तु सिद्ध्यति ॥४४॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१६ श्लो.-११)  
 अतीतकालान्यखिलानि<sup>४०</sup> तानि कार्याणि सौम्यायनगे दिनेशे ।  
 सिते गुरौ वाप्यथ दृश्यमाने तदुक्तपञ्चाङ्गदिनेऽप्यखण्डम् ॥४७/७॥ प्र.१/५  
 (व.सं.अ.-२६ श्लो.-३)  
 सिंहे सिंहाशके जीवे कलिङ्गे गौडगुज्जरि ।  
 कालमृत्युरयं योगो दम्पत्योर्निर्धनप्रदः ॥४९॥ प्र.१ पृ.  
 (व.सं. अ.-४२ श्लो.-२७)  
 मृगेन्द्रसंस्थिते जीवे मध्यदेशे करग्रहे ।  
 मृत्युयोगो मृत्युदः स्याद्मपत्योः पञ्चवर्षतः ॥४९॥ प्र.१  
 (व.सं.अ.-४२ श्लो.-२६)  
 वारप्रवृत्ते घटिका दिनेशालाख्यहोरापतयः क्रमेण ।  
 सार्द्धेन नाडीद्वितयेन <sup>४१</sup>तष्टः षष्ठश्च षष्ठश्च पुनः पुनश्च ॥५५॥ प्र.१  
 (व.सं. अ.-१३ श्लो.-१२)

## प्रकरण — २

स्थिरसंज्ञं भचतुष्टयमम्बुजयोन्युत्तरात्रितयम्<sup>४२</sup> ।  
 नरंपतिपत्तनसदनं प्रवेशबीजादि सिद्ध्यते तत्र ॥  
 मृदुवृन्दे कथितान्यपि स्थिरवृन्दे तानि कार्याणि ॥२॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-१४ श्लो.-२९, ३७प्र.पादः)  
 सूर्यः स्थिरः शीतकरश्चरात्मा धराज उग्रः शशिजो विमिश्रः ।  
 देवैन्द्रपूज्यो लघुरिन्द्रशत्रुः पूज्यो मृदुस्तीक्ष्णतनुश्च सौरिः ॥२॥ प्र.२  
 (व.सं.अ.-१३ श्लो.-८)

३९ च

४० कार्याण्यखिलानि

४१ षष्ठ

४२ मम्बुजयोन्युत्तरात्रितयम्

अदितिश्रुतिभात् त्रितयं चरसंज्ञं ४३ पञ्चकं च मरुद्दम् ।

वाहनकर्मविभूषणचरकार्योद्यानमन्त्रसिद्ध्यै तत् ॥

कथितान्यपि लघुवृन्दे चरसंज्ञे तानि कार्याणि ।

मणिमुक्ताहेमफलसद्रजतत्रपुसीसकर्माणि ॥३॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-३५,३६)

पूर्वात्रितयं ४४ पित्र्यभमुग्राख्यमिदं पञ्चकं याम्यम् ।

मारणभेदनबन्धनविषहननं ४५ पञ्चके कार्यम् ॥

यद्यद्वारुणभाक्तं तत्तत्कर्म त्वथोग्रभे कार्यम् ।४॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-३१,३८प्र.पादः)

भद्रितयं श्वसनसखं ४६ सेन्द्राग्निभकं हि मिश्रसंज्ञे ४७ स्यात् ।

निखिलानि च साधारणकार्याण्युग्राणि ४८ तत्र कार्याणि ॥५॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-३४)

सुरसचिवाश्चनिस्तताराः स्युः क्षिप्रसंज्ञकास्तासु ४९ ।

औषधपण्यविभूषणशिल्पकलाज्ञानं ५० कर्मसिद्धिः स्यात् ॥

चराधिष्ययेकथितान्यपि कार्याण्यखिलानि लघुणे नूनम् ॥६॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-३२,३७द्वि.पादः)

मृदुवृन्दं भचतुष्टयमन्त्यत्वाद्ग्राख्यसौम्यमित्रक्षम् ।

मङ्गलवनिताभूषणमन्दिरगीतादि ५१ सिद्ध्यन्ति ॥७॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-३३)

दारुणभानि पुरन्दरकोणपश्चिवसर्पदैवानि ५२ ।

---

४३ पञ्चमरुद्द

४४ पैतृभ

४५ दहनं

४६ चेन्द्राग्निभं

४७ तत्

४८ तत्र शब्दस्य लोपः

४९ संज्ञितास्ताश्च

५० शिल्पलता

५१ सिध्यते तत्र

दारुणबन्धनदहनप्रहरणकर्माणि ५३ सिद्धिमायान्ति ॥८॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-३०)

द्विदैववारीशशाङ्कमूलधूवेषु ५४ तिष्यार्कभौष्णभेषु ।

वनौषधीगुल्मलतादिकानामरोपणं ५५ तूतममत्र शस्तम् ॥१३॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-५६)

त्वाष्ट्रधूवश्रीपतिभेषु रिकतादशाष्टमीभौमादिने<sup>५६</sup> पशूनाम् ।

यात्राप्रवेशं न कदाचिदेव कुर्याच्च तेषामभिवृद्धिकांक्षी ॥१४॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६०)

हस्तत्रये पुष्पपुर्नवसौ च ५७ विष्णुत्रये चाश्विनीपौष्णभेषु ।

मित्रेन्दुमूलेषु च सूर्यवारेभैषज्यमुक्तं शुभवासरेऽपि ॥१५॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६४)

हस्तत्रये सौम्यहरित्रये च पौष्णद्वये पुष्पपुर्नवसौ च ।

५८ मैत्रेऽपि सर्वाण्यपि कुञ्जराणां कर्माणि ५९ शस्तान्यखिलानि यानि ॥१६॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-५८)

६० क्षिप्रचलाचलऋक्षे रिक्तामावर्जितेषु दिवसेषु ।

निखिलेषु च वारेषु त्रिपुष्करे न भूषणं ६१ कार्यम् ॥१९॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-११०)

स्थिरसाधारणचरभे ६२ लघुमैत्रेष्वर्ककुजवारे ।

---

५२ देवतानि स्युः

५३ सिद्ध्यतां यान्ति

५४ तिष्यार्यम्

५५ नूनमुपैति

५६ पापदिने

५७ शशाङ्कविष्णुत्रितयेऽश्विनीषु । पौष्णोन्द्रधिष्ये क्षुरकर्म शस्तं व्यर्कारशन्यंशकवारलग्ने ॥६४॥

५८ मैत्रे च सर्वाणि हि

५९ शस्तान्यपि यानि तानि

६० क्षिप्राचलाचलमृदुभे

६१ धार्यम्

६२ लघुमैत्रे व्यर्कजेषु वारेषु

तेषामेव विलग्ने मणिकनकमयं विभूषणं <sup>६३</sup>कार्यम् ॥१९॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-१११)

क्षिप्रमृदुध्रुवचरभे शशिसितयोर्वासरेषु तल्लग्ने ।

मुक्ताफलरजतमयं भूषणमखिलं सव्रजकं <sup>६४</sup>कार्यम् ॥१९॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-११२)

लघुमैत्रध्रुवमृदुभे सितेन्दुबुधजीववारेषु ।

हेमरजतादिभाजनभोजनमारोग्यममृतयोगेषु ॥१९॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-१०७)

अन्धकमथ <sup>६५</sup>मन्दाक्षं मध्यमसंज्ञं सुलोचनं पश्चात् ।

पर्यायेण च गणयेच्चतुर्विधं ब्रह्मधिष्यतः ॥२२॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-९०)

ध्रुवोग्रसाधारणदारुणर्क्षे निक्षिप्तमर्थं त्वथवा प्रनष्टम् ।

चौरैर्हतं दत्तमुपप्लवे वा विष्णां च पाते तु न लभ्यते तत् ॥२४॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-४८)

मित्रेन्दुपौष्णोत्तररोहिणीषु देवेज्यवारीश्वरवारिभेषु ।

प्रारम्भणं सर्वजलाशयानां कार्यं सितेन्दुंशकवारलग्ने ॥२५॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-४५)

शशाङ्कोयेशकरार्य <sup>६६</sup> मित्रध्रुवाम्बुपित्रे वसुरेवतीषु <sup>६७</sup> ।

उद्यानवाप्यादितडागकूपकार्याणि सिद्ध्यन्ति जलोद्धृतं तत् ॥२५॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-५७)

तिस्रोत्तरामित्रगुरुश्रविष्टाहस्तेन्द्र <sup>६८</sup> वारीश्वरपौष्णभेषु ।

सङ्गीतनृत्यादिसमस्तकर्म कार्यं विभौमार्कजवासरेषु ॥२५॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६१)

---

६३ धार्यम्

६४ धार्यम्

६५ मन्दाख्यं

६६ करान्त्य

६७ वसुदैवते च

६८ हस्तेन्दु

बधूरगं श्वैणमिभेन्द्रसिंहमोत्वाखुसंजं त्वजवानरं च ।  
 गोव्याग्रमश्वोत्तममाहिषं च वैरं नृनायोर्नृपभृत्ययोश्च ॥२६॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१८३)  
 धातृद्वये कोणपित्र्यपुष्टे<sup>६९</sup> हस्तत्रये त्र्युत्तरमैत्रभेषु ।  
 पौष्णे धनिष्ठास्वथ वाश्विनीषु बीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रदा स्यात् ॥२७॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-१४ श्लो.-४२)  
 भवरिपुसहजैः पापैस्त्रिकोणकेन्द्रस्थितैश्च शुभैः ।  
 कथितेषु च धिष्येष्वपि शुभलग्ने बीजवापनं कार्यम् ॥२८॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-२३ श्लो.-४२)  
 अर्कगतागतसंस्थं भत्रितयं नेष्टमुभयतस्त्विष्टम् ।  
 षोडशधिष्यं नवकं शिष्टमनिष्टं च लाङ्गले चक्रे ॥२९॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-१४ श्लो.-१००)  
 शशिनैर्घृतयमपितृभेष्वष्टमशुद्धौ<sup>७०</sup> भगौ च पाताले ।  
 घटलग्नगते शशिजे निखिलवेतालकर्मसिद्धिः स्यात् ॥३०॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-२३ श्लो.-३८)  
 शशितनये जीवे वा चन्द्रे वा लग्नगे<sup>७१</sup> बलिनि धर्मे वा ।  
 तद्वर्गे लग्नगते शिल्पारम्भः प्रशस्यते सततम् ॥४१॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-२३ श्लो.-३३)  
 सुरगुरुमैत्रभभाग्ये द्वादश्यां वा पक्षमध्यतिथौ ।  
 सितयुतवीक्षितलग्ने तैतिलकरणे च सन्धिः स्यात् ॥४२॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-२३ श्लो.-३७)  
 उपचयभे लग्नगते व्ययनैधनशुद्धिसंयुते लग्ने ।  
 उपचयगे शीतकरे मङ्गलकर्माणि कार्याणि ॥४४॥ प्र.२  
 (व.सं. अ.-२३ श्लो.-४०)  
 पूर्वात्रियं स्वातिभुजङ्गरौद्रसुरेश्वरक्षेषु च यस्य रोगः ।  
 स्याद्रक्षितुं देवचिकित्सकोऽपि शितावशक्तः किल रोगिणं <sup>७२</sup>तम् ॥४५॥

६९ पितृ

७० शुद्धे

७१ लग्न

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-५०)

कृच्छ्रात्स्फुटं प्राणिनि ७३मित्रपौष्णधिष्ये च मासाच्छशिविश्वधिष्ये।  
रोगस्य मुक्तिः पितृदैवधिष्ये वारैर्भवेद्बिंशतिभिश्च नूनम् ॥४५-४६॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-५१)

मघाविशाखानलसार्पयाम्यनैऋत्यरौद्रेषु च सर्पदंष्टः।  
सुरक्षितो विष्णुरथेन सोऽपि प्राप्नोति कालस्य मुखं मनुष्यः ॥४५-४६॥

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-४९)

आश्लेषाद्रात्रिपूर्वायमवरुणमरुच्छक्रतारानलाः  
स्युद्धादश्यांस्कन्दारिक्तातिथिषु च रविजार्कारवारेषु येषाम्।  
रोगः सञ्चायते यमपुरमचिरात्प्राप्नुवन्त्येव चन्द्रे  
जन्मन्यष्टाख्यबन्धुव्ययभवनगते मृत्युलग्ने च राजौ ॥४७॥ प्र.२ पृ. १२१

(व.सं. अ.-४६ श्लो.-११४)

वस्वपराद्वात्पञ्चकधिष्ये ७४कार्यं ७५गृहस्य गोपनं नैव।  
दक्षिणदिङ्मुखगमनं दाहं प्रेतस्य काष्ठसंग्रहणम् ॥४८॥ प्र.२ पृ. १२२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-७७)

रविरविजभौमवारे भद्रायां विषमपादमृक्षं चेत् ।  
त्रैपुष्कराख्ययोगस्त्रिगुणफलो यमलभौद्धिगुणम् ॥५०॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-९१)

त्रितयं गवां च दद्याद्दोषस्यापनित्तये विद्वान् ।  
द्वितयं द्विपुष्करेऽपि च तिलपिष्टैर्विप्रमुख्येभ्यः ॥५०॥ प्र.२

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-९२)

ज्येष्ठान्त्यपादघटिकामिमेव केचिन्मूलं ह्यभुक्तमपरे पुनरामनन्ति ।  
मूलाद्यपादघटिकाद्वितयेन सार्द्धमष्टौ समा परिहरेदिह जन्मभाजम् ॥५३॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१२६)

भौजङ्गपौरन्दरपौष्णभानां तदग्रभानां च यदन्तरालम् ।

७२ च

७३ मित्रपौष्णे मासाद्बिमुक्तिः शशिविश्वधिष्ये ।

७४ कार्यं शब्दस्य लोपः ।

७५ गेहस्य

अभुक्तसंज्ञं प्रहरप्रमाणं त्यजेत्सुतं तत्रभवां सुतां च ॥ ५४ ॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१२०)

मूलाद्यपादो दिवसे यदि स्यात्तज्जः पितुर्नाशनकारणं स्यात् ।

द्वितीयपादो यदि रात्रिभागे तदुद्घवो मातृविनाशकः स्यात् ॥

मूलाद्यपादो यदि रात्रिभागे तदात्मनो नास्ति पितुर्विनाशः ।

द्वितीयपादो दिनगो यदि स्यान्न मातुरल्पोऽपि तदास्ति दोषः ॥ ५५ ॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१२९-१३०)

नैऋत्यभौजङ्गमगण्डदोषनिवारणायाभ्युदयाय नूनम् ।

पितामहोक्तां रुचिरां च शान्ति प्रवच्मि <sup>७६</sup>लोकस्य हिताय सम्यक् ॥ ५५ ॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१२२)

मूलाद्यपादजनितः पितरं निहन्ति द्वितीयतः स्वजननीं त्रिपदोऽर्थवृन्दम् ॥<sup>७७</sup>

तौरीयजः शुभकरः फलमेतदेव वैलोमते भुजगधिष्यभवस्य सर्वम् ॥ ५५ ॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१२१)

चित्राध्यर्द्देष्टु पुष्टमध्ये द्विपादे पूर्वाषाढाधिष्यपादे तृतीये ।

जातः पुत्रश्चोत्तराद्ये विधत्ते मातापित्रोभ्रातरं चात्मनाशम् ॥

द्विमासस्योत्तरादोषः पुष्टे चैव त्रिमासकः ।

पूर्वाषाढाष्टमे मासि चित्राषाण्मासिकं फलम् ॥ ५५ ॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१२३-१२४)

ईशान्यमथवा प्राच्यामुदीच्यां दिशि कल्पयेत् ।

मण्डपं चाष्टभिर्हस्तैश्चतुभिर्वासमन्ततः ॥

कदलीस्तम्भसंयुक्तमाम्रपल्लवराजितम् ।

पुष्टमालायुतं सम्यक् तूर्यघोषनिनादितम् ॥

चतुर्द्वारसमायुक्तं तोरणाद्यैरलङ्घतम् ।

पिष्ठेन कल्पयेत्सर्वं तथा गोमयमण्डले ॥

कुण्डं च तद्विहः कार्यं ग्रहयज्ञोक्तमार्गतः ।

पञ्चामृतं पञ्चगव्यं पञ्चत्वक्पल्लवानि ॥ ५५ ॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४२ श्लो.-१३१तः१३४)

मासे तपस्ये तपसि प्रतिष्ठा धनायुरारोग्यकरी च कर्तुः।  
चैत्रे महारुग्भयदा च शुक्रे समाधवे पुत्रधनापतये स्यात्॥६३॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४० श्लो.-२)

आषाढमासादि चतुष्टयेऽपि<sup>७८</sup> कलत्रसन्तानविनाशदा <sup>७९</sup>स्यात्।  
ऊर्जे च कर्तुर्निर्धनप्रदा च सौम्ये सपौषेऽखिलदुखदा <sup>८०</sup>स्यात्।।  
वलक्षपक्ष शुभदः समस्तः सदैव तत्राद्यदिनं विहाय।

अन्त्यत्रिभागे परिहृत्य कृष्णपक्षोऽपि शस्तः खलु पक्षयोश्च।।  
रिक्तावमत्यक्तदिनेष्वनिन्द्ययोगेषु वैनाशिकवर्जितेषु।

दिने महादोषविवर्जिते च शशाङ्कताराबलसंयुते <sup>८१</sup>च।॥६३॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४० श्लो.-२,३,४)

कीर्तिप्रदं क्षेमकरं कृशानुभयप्रदं वृद्धिकरं <sup>८२</sup>दृढं च।  
लक्ष्मीकरं सुस्थिरदं त्विनादिवारेषु संस्थापनमामनन्ति॥६३॥ प्र.२

(व.सं. अ.-४० श्लो.-८)

सूर्येन्दुभौमाकर्यहिकेतवश्च लग्नस्थिता नैधनदाश्च भर्तुः।  
सौम्यग्रहा <sup>८३</sup>लग्नगतास्तदैव <sup>८४</sup>ह्यायुर्बलारोग्यकराश्च नूनम्॥६१-६२-६३

(व.सं. अ.-४० श्लो.-१२)

पञ्चेष्टके जीवशशाङ्कसूर्यमुख्यग्रहैः सौम्यनवांशयुक्तैः।  
लग्ने स्थिरे चोभयराशियुक्ते <sup>८५</sup>नवांशके चोभयगे स्थिरे वा।।  
चरोदये लग्नगते न कार्यं संस्थापनं नैव चरांशकेऽपि।  
चरोऽपि मुख्यः <sup>८६</sup>सकलांशकश्च सदा मृदुत्वात्सुरसन्निवेशः॥६१-६२-६३॥ प्र.२

---

७८ च

७९ च

८० सा

८१ ऽपि

८२ नृपाणाम्

८३ लग्नगताः सदा ते

८४ त्वायुर्धनारोग्यकराश्च

८५ राशिलग्ने

(व.सं. अ.-४० श्लो.-१०-११)

एकोऽपि जीवो बलवांस्तनुस्थः सितोऽपि सौम्योऽप्यथवा बली चेत्।  
दोषानशेषान्विनिहन्ति सद्यः स्कन्दो यथा तारकदैत्यवर्गम्॥६१-६२-६३॥ प्र.२  
(व.सं. अ.-४० श्लो.-२०)

प्रकरण - ३

घोरोग्रक्षे ध्वांक्षी लघुभे चरभे महोदरी मृदुभे ।  
मन्दाकिन्यचरक्षे मन्दामिश्रा च राक्षसी तीक्ष्णे ॥१॥ प्र.३

(व.सं. अ.-१९ श्लो.-३)

“अजकन्यावृषकर्किणि संक्रान्तौ यदि भवेद्वर्षम्।  
अतुलं क्षेमसुभिक्षं नृपसज्जनगोकुले क्षेमम् ॥  
झषचापसिंहमिथुनसंक्रान्तौ यदि भवेद्वर्षम्।  
आमयडामरभूभुजयुद्धभयं” त्ववृष्टिश्च ॥  
“घटतुलवृश्चिकमकरे वृष्टिः स्यात्संक्रमणसमये ।  
विस्फोटामयतस्करपीडावृष्टिः कृशानुभयम् ॥३॥ प्र.३

(व.सं. अ.-१९ श्लो.-२०-२१-२२)

दिनपतिसंक्रमणात्प्राक् षोडशनाड्यः स पुण्यकालस्तु ।  
परतः षोडशनाड्यः सर्वत्र स्नानदानकार्येषु१० ॥५॥ प्र.३

(व.सं. अ.-१९ श्लो.-११)

सुतजनने संक्रान्तौ उपरागे चन्द्रसूर्ययोर्नियतम्११ ।  
रात्रावपि कर्तव्यं स्नानं दानं विशेषतो नृणाम् ॥७॥ प्र.३

(व.सं. अ.-१९ श्लो.-१९)

---

८६ स तुलांशकश्च

८७ घट

८८ भूभुजयुद्धभय

८९ वृषवृश्चिकतुलमकरे

९० स्नानदानयोः पुण्याः

९१ नित्यम्

इति सञ्चिन्त्य विनिर्णयमादेष्टव्यं सदैव दैवज्ञः ॥  
 विषुवत्ययने ग्रहणे संक्रान्तौ पुण्यदिवसेऽपि<sup>१२</sup> ।  
 पितृतृप्तिं<sup>१३</sup> ने न करोति<sup>१४</sup> हि दत्त्वा शापं व्रजन्ति तस्य सदा ॥  
 आगतगतसमयेऽपि च करोति<sup>१५</sup> यद्वानजपहोमाद्यम् ।  
 ऊषरवापितबीजं यद्वत्तद्वच्च निष्कलं भवति ॥८॥ प्र.३  
 (व.सं. अ.-१९ श्लो.-१६तृ, पा.-१७, १८)  
 षट्पौष्णभाद् द्वादश रौद्रधिष्यासुराधिसद्वानि<sup>१६</sup> नव क्रमेण ।  
 पूर्वार्धमध्यापरमात्तदूर्ध्वं<sup>१७</sup> भुड्कते खिलव्योमचरास्तथैव ॥९॥  
 (व.सं. अ.-३ श्लो.-१६)  
 जघन्यधिष्यानि जलेशसार्परौद्रेन्द्रयाम्यानिलदैवतानि ।  
 अध्यर्द्धधिष्यान्यदितिद्विदैवस्थिराणि शेषक्षसमाह्यानि ॥१०॥ प्र.३  
 (व.सं. अ.-३ श्लो.-१८)  
 ज्ञात्वैवमेव मणिजीवधातुमूलोर्णकर्पूररसादिकानाम् ।  
 अर्धवदेज्यौतिषिकः प्रजानां समर्धवस्तूतमसङ्ग्रहार्थम् ॥११॥ प्र.३  
 (व.सं. अ.-३ श्लो.-२०)  
 राजालोकनसमये रविकार्यः करग्रहेषु बली ।  
 रणसमये धरणिसुतः प्रयाणसमये सितोऽतिबली ॥  
 दीक्षणसमये ऽर्कसुतः<sup>१८</sup> शशितनयो ज्ञानशिल्पविधौ ।  
 १९निखिलेष्वपि कार्येषु च चन्द्रबलमुख्यमखिलनृणाम् ॥१९॥ प्र.३  
 (व.सं. अ.-१८ श्लो.-१६-१७)  
 बलप्रदस्य ग्रहवासरे यच्चोद्दिष्टकार्यं समुपैति सिद्धिम् ।

- १२ वा
- १३ यो
- १४ हि शब्दस्य लोपः
- १५ दानं जपं च होमाद्यम् ।
- १६ सुराधिपाद्वानि
- १७ परभागगेन्दुर्भक्ते
- १८ त्वसितः
- १९ निखिलेषु च कार्येषु

सुदुर्बलस्य ग्रहवासरे तत्प्रयत्नपूर्वं त्वपि नैव साध्यम् ॥१९॥ प्र.३  
(व.सं. अ.-१३ श्लो.-१५)

प्रकरण - ४

त्रिषडेकादशसहितो धरासुतः १००रिःफधर्मसुतसंस्थैः ।  
दिनकरतनयोऽपि शुभो न विद्ध्यते खेचरैर्विनोष्णकरम् १०१ ॥१...४॥ प्र.४  
(व.सं. अ.-१८ श्लो.-४)

भवनान्त्यगताश्च यदा धिष्यान्त्यगताश्च गगनचरा : ।  
दद्युः परभवनफलं प्रागभवनफलं च वक्रिता ये च ॥१..४॥ प्र.४  
(व.सं. अ.-१८ श्लो.-१३)

दशदिवसपञ्चदिना त्रिपक्षमतिचारवक्रयोर्दद्युः ।  
भौमाद्याः पञ्चमदिनप्राग्राशिफलं पञ्चमासाश्च ॥१..४॥ प्र.४  
(व.सं. अ.-१८ श्लो.-१४)

वेधसमन्वितखचराणां १०२ प्रदिशन्त्यस्तफलं किञ्चित् ।  
व्यत्ययवेधविधानादिशन्त्यशुभाः शुभफलं सततम् ॥१..४॥ प्र.४  
(व.सं. अ.-१८ श्लो.-८)

ग्रहेषु विषमस्थेषु यः शान्तिं न करोति सः ।  
अर्थहानिश्च १०३ मरणं चाशनुते सर्वसंकटान् ॥५॥ प्र.४  
(व.सं. अ.-१८ श्लो.-१७९)

मासि मास्ययने चन्द्रसूर्ययोग्रहणेऽपि वा ।  
विषुवत्यर्कसंक्रान्तौ व्यतीपाते दिनक्षये ॥५॥ प्र.४  
(व.सं. अ.-१८ श्लो.-२१)  
यस्य वै जन्मनक्षत्रे ग्रस्येते शशिभास्करौ ।  
तस्य व्याधिभयं घोरं जन्मराशौ धनक्षयः ॥६॥ प्र.४

---

१०० काम

१०१ करैः

१०२ खचरानृणां न दिशन्ति

१०३ हानिं मनस्तापं

(व.सं. अ.-३६ श्लो.-१)

द्रव्यमन्त्रविधानेन तस्य दोषापनुत्तये ।  
उपरागस्नानविधिं सम्यग्वक्ष्ये समाप्तः ॥  
मण्डलं चतुरस्त्रं तु गोमयेन विलेपयेत् ।  
गृहस्येशानभागे तु वर्णकैः समलंकृतम् ॥  
स्थापयेच्चतुरः कुम्भांस्तत्र तान्सागरात्मकान् ।  
सर्वदेवात्मकान्स्मृत्वा सर्वतीर्थात्मकाज्ञुभान् ॥  
पञ्चत्वक्पल्लवोशीरशतौषधिसमन्वितान् ।  
मृत्तिकारत्लहेमरत्लेन<sup>१०४</sup> दन्तगुग्गुलुचन्दनैः ॥  
पञ्चगव्यामृतभ्राजत्स्फटिकैः सर्षपां वरैः ।  
शङ्खकुंकुमतीर्थाम्बुरोचनैः पद्मकैर्युतान् ॥  
चत्वारः प्राढमुखा विप्राः प्राथर्येयुः पृथक्पृथक् ।  
अब्लिङ्गैर्वारुणैः सूकैः स्वस्तिवाचनपूर्वकैः<sup>१०५</sup> ॥  
तिलहोमं व्याहतिभिः सहस्रं चाष्टसंयुतम् ।  
एवं कृत्वा प्रयत्नेन स्नानकर्म समाचरेत् ॥  
आमन्त्र नवभिर्मन्त्रैः कुम्भान्संकल्पपूर्वकान् ।  
एतानेव ततो मन्त्रान्स्वर्णपट्टे<sup>१०६</sup> च संलिखेत् ॥  
कर्तुः शिरसि तान्बदध्वा वाब्लिङ्गैर्वेदमन्त्रकैः ।  
सुमन्त्रितैः कुम्भजलैः स्नाप्य नीराजयेत्ततः ॥  
<sup>१०७</sup>दध्याज्यं प्रददेदेभ्यः शुक्लमाल्याम्बरः शुचिः ।  
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्याच्छिष्टेभ्यश्च स्वशक्तितः ॥  
योऽसौ वज्रधरो देव आदित्यानां प्रभुर्मतः ।  
सहस्रनयनश्चन्द्रो<sup>१०८</sup> ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥  
मुखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः ।

१०४ हेमेभदन्त

१०५ पूर्वकम्

१०६ ततो लिखेत

१०७ दद्यात्पट्टुं ग्रहज्ञेभ्यः

१०८ शक्रो

चन्द्रोपरागसम्भूतामग्निः पीडां व्यपोहतु ॥  
 यः कर्मसाक्षी लोकानां धर्मे महिषवाहनः ।  
 यमश्चन्द्रोपरागस्य<sup>१०९</sup> ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥  
 रक्षोगणाधिपः साक्षात्प्रलयानलसन्निभः ।  
 खद्गव्यग्रोऽतिकायश्च रक्षः पीडां व्यपोहतु ॥  
 नागपाशधरो देवः सदा मकरवाहनः ।  
 वरुणोऽम्बुपतिः साक्षाद् ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥  
 प्राणरूपो हि<sup>१०</sup> लोकानां वायुः कृष्णमृगप्रियः ।  
 वायुश्चन्द्रोपरागस्य<sup>११</sup> पीडामत्र व्यपोहतु ॥  
 योऽसौ निधिपतिर्देवः खद्गशूलगदाधरः ।  
 चन्द्रोपरागकलुषान्पीडां<sup>१२</sup> चापि व्यपोहतु ॥  
 योऽसाविन्दुधरो रुद्रः पिनाकी वृषवाहनः ।  
 चन्द्रोपरागपापानि स नाशयत्वथ<sup>१३</sup> शङ्करः ॥  
 त्रैलोक्ये यानि भूतानि चराणि स्थावराणि च ।  
 १४ ब्रह्मविष्वर्कयुक्तानि तानि पापं<sup>१५</sup> दहन्तु मे ॥  
 आमन्त्रणे<sup>१६</sup> लेखने चाप्येते पूजनमन्त्रकाः ।  
 अर्चयित्वा पितृन्देवान्गोभूस्वर्णम्बरादिभिः ॥  
 अनेन विधिना यत्नाद् ग्रहस्नानं समाचरेत् ।  
 न तस्य ग्रहपीडां वा न च बन्धुधनक्षयः ॥  
 परमां सिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम् ।  
 सूर्यग्रहेऽप्येवमेव सूर्यनाम्ना विधीयते ॥६॥ प्र.४

१०९ परागोत्थां

११० लोकान्याति

१११ परागोत्थां ग्रहपीडां

११२ कलुषं पीडा

११३ नाशयतु

११४ ब्रह्मार्कविष्णुयुक्तानि

११५ दहतु

११६ लेखकोक्तास्त्वेते वै नवमन्त्रकाः

(व.सं. अ.-३६ श्लो.-२ तः १२, १४ तः २४)

धेनुं शङ्खं रक्तवृषं हेमं पीताम्बरं ११७द्वयम् ।  
श्वेताश्च कृष्णधेनुं<sup>११८</sup> च कृष्णलोहमजं क्रमात् ॥  
स्वर्णेन वाससीकृत्य<sup>११९</sup> दातव्या दक्षिणा ततः ।  
आचार्यार्थं जापकेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽथ शक्तिः ॥१६॥ प्र.४

(व.सं. अ.-३६ श्लो.-१५५-१५६)

भवनादिगतौ फलदौ रविभौमौ मध्यगौ च गुरुशुक्रौ ।  
अन्त्यगतौ शनिशशिनौ सदैव फलदः शशाङ्कसुतः ॥१९॥ प्र.४

(व.सं. अ.-१८ श्लो.-१५)

प्रकरण - ५

प्रथमरजोदर्शनतः शुभाशुभं भवति सर्ववनितानाम् ।१॥ प्र.५

(व.सं. पेज-२०५ अ.-२४ श्लो.-४ प्र.पा.)

सदा गदार्ता सुपतिव्रता सा वन्ध्या प्रजावत्यतुलार्थयुक्ता ।  
आनन्दकर्त्री त्वसती च पुष्पवती क्रमाद्वास्करवासरेषु ॥१॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२४ श्लो.-३३)

अशुभमपि समस्तं चार्तवं संप्रभूतं सुरगुरुसितयुक्ते वीक्षिते वाथ लग्ने ।  
प्रभूतदोषं यदि दृश्यते तत्पुष्पं तदा शान्तिकर्कर्म कार्यम् ।  
विवर्जयेदेव तदेकशश्यां यावद्रजोदर्शनमिष्टमग्रे ॥  
ऐशान्यतो गोमयमण्डले च परिस्तृतेऽग्नौ जुहुयाच्च १२०दुर्वाम् ।  
युग्मां घृताक्तां च समित्प्रमाणां<sup>१२१</sup> गायत्रीकांसाष्टसहस्रसंख्याम् ॥  
शतप्रमाणामथवाद्यहन्त्री<sup>१२२</sup> शुभैर्यवैव्याहृतिभिस्तिलैश्च ।

---

११७ हयम्

११८ वर्णा गा

११९ समीकृत्य

१२० दुर्गाम्

१२१ संज्ञाष्ट

१२२ ऽसहस्री

तातः सुरान्भूमिसुरान्मितृंश सन्तर्पयेदन्नसुवर्णवस्त्रैः ॥५॥ प्र.५

(व.सं.अ.-२४ श्लो.-३६,३८,३९)

आधानलग्ने विषमांशराशौ जीवेन्दुजाभ्यां युतवीक्षिते वा ।

नान्यैः सुपुत्रस्त्वथ पापखेटैः पापी च मिश्रैर्बलिभिर्विमिश्रः ॥

ओजक्षर्णशे लग्नगे वीर्ययुक्ते जीवेन्दुकैरोजराशयंशकस्थैः ।

पुंजन्म स्याद्युत्यये कन्यका स्यान्मिश्रैः षण्ठो द्वयङ्गैर्द्वित्रिजन्म ॥

ओजांशकक्षाद्विषमर्क्षसंस्थः पुंजन्मकारी रविसूनुरेकः ।

विचार्य वीर्यं पुरुषग्रहाणां वाच्योऽथ पुत्रस्त्वथ पुत्रिका वा ॥७॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२४ श्लो.-४३,४५,४६)

<sup>१२३</sup> केन्द्रत्रिकोणोपगतैश्च सौम्यैर्दुश्चिक्यलाभारिगतैश्च पापैः ।

<sup>१२४</sup> षडष्टलग्नान्त्यविवर्जितेन्दौ सीमन्तकार्यं शुभं <sup>१२५</sup>तथैव ॥८॥

(व.सं. पेज-२१८ अ.-२५ श्लो.-८)

<sup>१२६</sup> बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धने च राजाभिषेके खलु जन्मधिष्यम् ।

शुभं त्वनिष्टं सततं विवाहसीमन्तयात्रादिषु मङ्गलेषु ॥८॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२७ श्लो.-५)

<sup>१२७</sup> सितावनेयामरपूज्यसूर्यचन्द्रार्किसूर्योदयपेन्दुसूर्याः ।

मासाधिपाः स्युः क्रमशो दशैते निपीडितो नाशयति स्वमासि ॥९॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२५ श्लो.-१०)

कुर्यात्पुंसवनं प्रसिद्धविषये गर्भे तृतीयेऽथवा ।

मासि स्फीततनौ तुषारकिरणे पुष्येऽथ वा वैष्णवे ।

हित्वा कर्कटकं नृयुग्ममबलामन्ये ऽप्यरिक्ते तिथौ ।

शुद्धे नैधनधाम्नि शुक्रशशभृद्विन्मन्त्रिणां वासरे ॥१०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२५ श्लो.-१)

पुंनाम्ना श्रवणं तिष्यः स्वाती हस्तः पुनर्वसुः ।

१२३ केन्द्रत्रिकोणत्रिधनाय

१२४ षडलग्ना

१२५ सदैव

१२६ चौलान्न

१२७ सिताऽऽवने

मूलं प्रोष्टपदं चानुराधा मृगशिरोऽश्विनी ॥१०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२५ श्लो.-२)

रोहिण्यां वा वैष्णवे पूर्वपक्षे द्वादश्यां वा सप्तमे वा तिथौ वा ।

मध्याहे वा पूर्वभागेऽनुकूले विष्णोः पूजां कारयेद्भर्पुष्ट्यै ॥१०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२५ श्लो.-११)

यस्मिन्मुहूर्ते जनितः कुमारस्तस्मिन्विधेयं खलु जातकर्म ।

सन्तर्प्य देवान्सपितृन्द्विजांश्च सुवर्णगोभूतिलकांस्यवस्त्रैः<sup>१२८</sup> ॥११॥

(व.सं. अ.-२६ श्लो.-१प्र.पा., २प्र.पा.)

मैत्रध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु चारिक्तपर्वाख्यदिनेषु कार्यम् ।

शुभग्रहाणां दिनलग्नवर्गे तज्जातकर्म त्वथ नामधेयम् ॥११॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२६ श्लो.-४)

तद्व्यक्षरं वा चतुरक्षरं वा <sup>१२९</sup>यथेप्सितं चान्तलकारयुक्तम् ।

<sup>१३०</sup>नामादिकमेव कार्यं स्फुटं वदेदक्षिणकर्णरन्धे ॥११॥

(व.सं. अ.-२५ श्लो.-१७)

चैत्रादिमासनामानि वैकुण्ठोऽथ जनार्दनः ।

उपेन्द्रो यज्ञपुरुषो वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥

योगीशः पुण्डरीकाक्षः कृष्णोऽनन्तसुतस्तथा ।

चक्रधारीति चैतानि क्रमादहर्यनीषिणः ॥११॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२५ श्लो.-१५, १६)

युग्मेषु मासेषु च षष्ठमासात्संवत्सरे वा नियतं शिशूनाम् ।

अयुग्ममासेषु च कन्यकानां नवान्नसंप्राशनमिष्टमेतत् ॥१७॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२७ श्लो.-१)

कुष्ठी लग्नगते सूर्ये क्षीणे चन्द्रे च भिक्षुकः ।

सदन्नदः पूर्णचन्द्रे च कुञ्जे पित्तरुजादितः ॥

बुधे ज्ञानी गुरौ भोगी दीर्घायुर्भागवान् सिते ।

१२८ धान्य

१२९ विवर्जयेच्चान्त्यलकाररेफम

१३० तन्मासनामादिकमेव चिन्त्यं

वातरोगी शनौ राहौ केतौ चान्नविवर्जितः ॥१९-२०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२७ श्लो.-७,८)

सम्पूर्णे न्दूभयाष्टम्योर्मध्येन्दुः पूर्णसंज्ञकः ।

विनष्टेन्दुभयाष्टम्योर्मध्येऽसौ क्षीणसंज्ञकः ॥१९-२०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२७ श्लो.-९)

वृद्धत्वमिन्दोस्त्रिदिनं दिनार्द्धं बालत्वमस्तत्वमहर्द्यं च ।

अस्ते विधौ मृत्युमुपैति कन्या बालेऽन्यसक्ता विधवा च वृद्धे ॥२८॥

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१३)

तृतीये पञ्चमेऽब्दे वा स्वकुलाचारतो हितम् ।

चौलं शिशूनां यत्नेन स्वगृह्योक्तविधानतः ॥२९॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२८ श्लो.-१)

पञ्चमी सप्तमी चैव दशम्यैकादशी तथा ।

त्रयोदशी तृतीया च <sup>१३१</sup>क्षुरकर्म शुभावहाः ॥

(व.सं. अ.-२८ श्लो.-१०)

अदितिद्वितये पौष्णद्वितये श्रवणत्रये ।

हस्ताच्च त्रितये शाके सैन्दवे चौलमीरितम् ॥२९॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२८ श्लो.-११ ३-४पादः)

पुत्रचूडाकृतौ माता गर्भिणी यदि वा भवेत् ।

विपद्यते गुरुश्चैव दम्पती शिशुरब्दतः ॥

गर्भे मातुः कुमारस्य न कुर्याच्चौलकर्म च ।

पञ्चमासादधः कुर्यात्तदूदर्ध्वं न च कारयेत् ॥३१॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२८ श्लो.-६,४)

हस्तत्रये पुष्पपुनर्वसौ च शशाङ्कविष्णुत्रितयाश्विनेषु ।

पौष्णेन्द्रधिष्ये क्षुरकर्म शस्तं व्यक्तारशन्यंशकवारलग्ने ॥३४॥ प्र.५

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६४)

आदित्यभौमार्किदिने <sup>१३२</sup>धीमात्र दन्तकाष्ठं क्षुरकर्म कार्यम् ।

१३१ चौलकर्मणि शोभना

१३२ दिनेषु

कुर्वन्नवाप्नोति फलं समग्रं शस्त्रेण सम्यक् स्वशरीरघातम् ॥३४॥ प्र.५

(व.सं. अ.-१३ श्लो.-१९)

गृहनिर्माणमुदधिस्नानं चौलं सुतस्य १३३ तु ।

तीर्थयात्रा १३४ नखशमश्रु न कुर्याद् गर्भिणीपतिः ॥३५॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२८ श्लो.-५)

महीभूर्ता पञ्चमपञ्चमेऽहि क्षौरं च कार्यं हितभुक्तभेषु ।

न लभ्यते चेतु तदुक्तधिष्यं तद्बोदये वा निखिलं विधेयम् ॥३६॥ प्र.५

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६६)

१३५ अष्टाब्जऋक्षः पितृपञ्चकश्च षड्वह्निधिष्यश्चतुर्यमर्क्षः ।

त्रिमैत्रभः पद्मजसन्निभोऽपि क्षौरी नरोऽब्दान्निधनं गतः सः ॥३६॥ प्र.५

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६५)

पूर्वात्रये मूलमृगादिपञ्चस्वथाश्चिनीषु त्रितयेषु हस्तात् ।

सविष्णुधिष्येष्वपि सर्वविद्याप्रारम्भ इष्टः शुभवासरेषु ॥३८॥ प्र.५

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-४३)

विप्राणामुपनयनं वसन्तसमये धराधिनाथानाम् ।

ग्रीष्मतोँ शरदि विशां मासाः साधारणा १३६ श्राव्य मासाद्याः ॥४०॥

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-३)

आद्रादिकस्वातीविरामकाले नक्षत्रवृन्दे दशके तथैव ।

विवाहचौलव्रतबन्धनाद्यं सुरप्रतिष्ठा न च कार्यमेव ॥४०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-११)

हस्तत्रये च श्रवणत्रये च धातुद्वये त्र्युत्तरमैत्रभेषु ।

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च शस्तं द्विजानां खलु मौजिकर्म ॥४०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-३७)

पञ्चशलाकाचक्रे पाणिग्रहणे भवति १३७ च विधिरुक्तः ।

---

१३३ च

१३४ नस्व

१३५ अष्टाब्जजर्क्षः

१३६ साधारणाः पञ्च मासाद्या

१३७ भवेधविधिरुक्तः

शस्तः शुभमित्रकृतः सप्तशलाकाद् १३८ इतरत्र ॥४०/५६ ॥ प्र.५/६

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-१०३)

या चैत्रवैशाखसिता तृतीया माघस्य सप्तम्यपि फाल्गुनस्य ।

कृष्णद्वितीयोपनये प्रशस्ताः प्रोक्ता भरद्वाजमुनीन्द्रमुख्यैः ॥४० ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-३९)

त्यक्त्वा चतुर्थीमपि कृष्णपक्षे त्वाद्यं त्रिभागं शुभदं व्रते च ॥४० ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-३६ प्र.पादः)

लग्नाय सौम्यग्रहराशयो ये ग्राह्या न पापग्रहराशयो ये।

ग्राह्याश्च तेऽपि प्रबलैश्च सौम्यैरधिष्ठिताश्चापि निरीक्षिता वा ॥४१ ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-४० प्र.पादः)

द्वादशस्थं रविं भौमः पश्यन्नाचार्यनेत्रहा ।

बलिनं बलवान्नूनमचिरात्तु न संशयः ॥४२ ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-६४)

१३९ शाखेशसूर्यवर्णेशगुरुणां बलपूर्वकम् ।

ततोऽप्येषां गुरुबलं मुख्यमाचार्यशिष्ययोः ॥४४ ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-६)

शाखेशगुरुशुक्राणां १४० मौढ्ये बाल्ये च वार्ढके ।

नैवोपनयनं कार्यं वर्णेशे दुर्बले १४१ सति ॥४४ ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-८)

शाखेशगुरुशुक्राणामेकस्मिञ्छत्रुनिजिते ।

विद्यावित्तार्थिभिस्तत्र न कार्यं चोपनायनम् ॥४४ ॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-८)

शत्रुनीचाधिशत्रुस्थे १४२ स्वांशे वा स्वोच्चभागगे ।

शाखेशे वा गुरौ शुक्रे न नीचफलमश्नुते ॥४४ ॥ प्र.५

---

१३८ जमितरत्र

१३९ शाखेश्वरस्ववर्णेश

१४० मौढ्ये

१४१ दुर्बलेऽपि च

१४२ शत्रृक्ष

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-१८)

नीचक्षनीचांशकसंस्थिते<sup>१४३</sup> वा शाखेश्वरे वा स्फुजितीन्द्रपूज्ये।  
व्रती शिशुहीनकुलप्रसूतः<sup>१४४</sup> शास्त्रोपजीवी<sup>१४५</sup>स्वगृहं विसृज्य ॥४४॥

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-११)

उक्तेऽपि वर्षे न बली गुरुश्चेच्छान्त्या प्रशस्तं व्रतबन्धकर्म ।  
अनुकृतवर्षेऽपि बलप्रदोऽपि<sup>१४६</sup>नैव तयोरब्दबलं<sup>१४७</sup> बलीयः ॥४६॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-७)

व्रतेऽहि पूर्वसन्ध्यायां वारिदो यदि गर्जति ।  
तद्दिने स्यादनध्यायो व्रतं तत्र विवर्जयेत् ॥४८॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-७)

सूर्यांशकगते चन्द्रे महापातककृत्वर्ती ।  
पण्योपजीवी स्वांशस्थे नीचो निःस्वः खलो भवेत् ॥  
कुजांशकगते चन्द्रे शस्त्रजीवी खलो व्रती ।  
बुधांशकगते चन्द्रे वेदवादी भवेद्वटुः ॥  
जीवांशकगते यज्वा साङ्गवेदविशारदः ।  
शुक्रांशगे धनी दाता विद्यावित्तविशारदः ॥  
क्षिप्रोद्धाही यज्ञकृत्स्यात्सत्रदो भोगवान्भवेत् ।

सौरांशकगते चन्द्रे सदा चाण्डालसेवकः ॥५०॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-२५, २७, २८, २९)

न नैधनं नैधनशुद्धलग्नं न नैधनक्षं न च तत्रवांशम् ।  
न नैधनेशं न तदंशको<sup>१४८</sup> वा लग्ने प्रशस्तं न च रात्रिनाथः ॥५३॥ प्र.५

(व.सं. अ.-२९ श्लो.-४४)

पापांशकगते चन्द्रे स्वाधिनीचस्थितेऽपि च ।

---

१४३ ऽपि

१४४ प्रस्तुः

१४५ स्वकुलं

१४६ न वै

१४७ बलो बलीयान्

१४८ तदंशकेश



अनध्याये<sup>१४९</sup> चोपनीतः पुनः संस्कारमर्हति ॥५४॥ प्र.५  
(व.सं. अ.-२९ श्लो.-३०)

प्रकरण - ६

शुभे दिने दैवविदं त्वभिज्ञं ताम्बूलपुष्पाक्षतपूर्णपाणिः ।

<sup>१५०</sup>प्रष्टा च गत्वा प्रणिपत्य पृच्छेन्निवेद्य तस्मै वरकन्ययार्भे<sup>१५१</sup> ॥२॥ प्र.६  
(व.सं. अ.-३१ श्लो.-१)

लग्नात् त्रिपञ्चास्तदशायगस्तु हिमद्युतिर्जीवनिरीक्षितश्च ।

तयोस्तु सम्बन्धकरस्तदानीं नार्काशुलुप्तो न च नीचगश्चेत् ॥२॥ प्र.६  
(व.सं. अ.-३१ श्लो.-५)

विलग्नगा गोघटकर्कटाश्च हिमांशुदैत्येज्यसमन्वितास्ते ।

संवीक्षिता वा यदि कन्यकाया लाभो<sup>१५२</sup> भवेत्तत्र च पृच्छकस्य ॥२॥ प्र.६  
(व.सं. अ.-३१ श्लो.-६)

एकोऽपि लग्नोपगतश्च पापः पापैस्ततोऽन्यः खलु सप्तमस्थः ।

आसप्तमाब्दान्निधनं वरस्य बलान्वितौ तौ कुरुतस्त्ववश्यम् ॥४॥ प्र.६  
(व.सं. अ.-३१ श्लो.-२)

दिनाधिपे मेषवृषालिकुम्भनृयुड्नक्राख्यघटकर्षसंस्थे<sup>१५३</sup> ।

माघद्वये माधवशुक्लयोश्च<sup>१५४</sup> मुख्योऽथवा कार्तिकसौम्ययोश्च ॥१३॥  
(व.सं. अ.-३२ श्लो.-३)

स्वजन्ममासक्षतिथिक्षयेषु वैनाशिकाद्वृक्षगणेषु<sup>१५५</sup> चैवम् ।

नोद्वाहमात्माभ्युदयाभिकाङ्क्षी<sup>१५६</sup> नैवाद्यगर्भं द्वितयं कदाचित् ॥१४॥ प्र.६

१४९ अनध्यायोपनीतश्च

१५० कर्ता

१५१ श्च

१५२ लाभं भवेदत्र

१५३ मृगाख्येषु गृहेषु संस्थे

१५४ शुक्रयोस्तु

१५५ भेषु

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१५)

पुत्रोद्वाहात्रैव पुत्राः कदाचिदाषण्मासात्कार्यमुद्वाहकर्म ।१६। प्र.६

(व.सं. श्लो.-२३१प्र.पादः)

पुत्रीविवाहात्परतः सदैव शुभप्रदं पुत्रविवाहकर्म ।१६। प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-२३३प्र.पादः)

एकजन्ये तु कन्ये द्वे पुत्रयोर्नैकजन्ययोः ।

न १५७पुत्रीद्वयमेकस्मै न दद्यात् कदाचन ॥१६॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-२३८)

नैऋत्यभोद्भूतसुतः सुता वा क्षिप्रादवश्यं श्वशुरं निहन्ति ।

तदन्त्यपादाज्जनितो निहन्ति नैवोत्क्रमेणाहिभवः कलत्रम् ॥१९-२०॥ प्र.६

(व.सं. पेज-२९७ अ.-३२ श्लो.-२३९)

जनकं जननी हन्ति भर्तुमूलाहिधिष्यना ।२४२। प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-२४२प्र.पादः)

सुरेशताराजनिता धवाग्रजं द्विदैवताराजनिता च देवरम् ।२४०। प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-२४०प्र.पादः)

वश्यास्त्यक्त्वा राशयोऽन्ये नृभाणां

सिंहं तस्याप्येकमन्ये विधेयाः ।

कीटं त्यक्त्वा लोकतोऽन्यत्प्रसिद्धं

वश्यावश्यं नैव तोयालयाश्च ॥२३॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-२०१)

अश्वभमेषभुजगद्वयकुक्कुरौ तु मूषकमहान्दुरुगोलुलायाः ।

शार्दूलमाहिषगवारिमृगद्वयं<sup>१५८</sup> श्वा कीशोऽथ बभ्रुयुगकीशगवाश्चसिंहाः ॥ ॥

गोकुञ्जराविति यथाक्रममाश्चिनादिभानां भवन्ति खलु कल्पितयोनिरूपाः ।२५-२६ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१८१,१८२प्र.पा)

आवृत्तिभिर्भैस्त्रिभिरश्चिभाद्यं क्रमोत्क्रमात्सङ्घणयेदुदूनि<sup>१५९</sup> ।

१५६ भिलाषी

१५७ पुत्रिका

१५८ द्वयाश्वशाखामृगोक्षकपि पञ्चमुखाश्च सिंहा

१५९ च्च भानि

यद्येकपर्वण्युभयोश्च धिष्ये नेष्टा नृनार्योर्भृशमेकनाडी ॥  
 सा मध्यनाडी पुरुषं निहन्ति तत्पार्श्वनाडी खलु कन्यकां तु<sup>१६०</sup> ।  
 आसन्नपर्यायसमागता चेद्वर्षेण साप्यन्तरिता त्रिवर्षेः ॥३४॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-२०२, २०३)  
 दम्पत्योर्जन्मभे चैक्ये राशौ च निधनं तयोः ।  
 एकस्य च तथोद्घाहे किञ्चिद्देदेऽपि वा न च ॥३५॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१६)  
 अज्ञातजन्मनां नृणां नामभे<sup>१६१</sup> परिकल्पना<sup>१६२</sup> ।  
 तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि पूर्ववत् ॥  
 जन्मभं जन्मधिष्ययेन नामधिष्ययेन नामभम् ।  
 व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥१९५॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१९५, १०६)  
 एकविंशन्महादोषास्त्वन्ते ब्रह्ममुखोदिताः ॥  
 कदाचिन्नैव सीदन्ति गुणानां कोटि कोटिभिः ।  
 तस्मादेतेषु दोषेषु कदाचिन्नाचरेच्छुभम् ॥  
 विवाहे विधवा नारी मरणं ब्रतबन्धने ।  
 ग्रामनाशः प्रतिष्ठायां सीमन्ते गर्भनाशनम् ॥  
 नवान्नभोजने मृत्युः कृष्णै तत्फलनाशनम् ।  
 कर्तृनाशो गृहारम्भे प्रवेशे पतिनाशनम् ॥  
 यात्रायां कर्तृनाशः स्याद्युद्धयाने विशेषतः ।  
 लभ्यते सुमहापुण्यमेषु श्राद्धादिकर्मभिः ॥३८॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-४२ श्लो.-१०७द्वि.पादः, श्लो.१०८, १०९, ११०, १११)  
 लग्नं तद्वच्च च ततस्त्रिभागो नवांशकश्च द्विदशांशकश्च<sup>१६३</sup> ।  
 त्रिंशांशकश्चेति हि वर्गषट्कं शुभं<sup>१६४</sup> व्योमचराधिपत्यम् ॥४२॥ प्र.६

१६० च

१६१ येत्

१६२ नामभ

१६३ द्विसांशकश्च

१६४ शुभाशुभं

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१३५)

यदन्तरालं पितृसार्पयोश्च<sup>१६५</sup> मूलेन्द्रयोरश्विनपौष्णयोश्च ।

भसन्धिगण्डान्तमिति<sup>१६६</sup> त्रयं तद्यामप्रमाणं शुभकर्म हन्ति ॥४३॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-६४)

लग्नान्तरालं घटिकाद्विमेतत्कुलीरहर्योरलिचापयोश्च ।

मीनाजयोः सर्वगुणान्त्रिहन्ति लोभो यथा सर्वगुणान्तरस्य ॥४३॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-६७)

पक्षोऽब्दसन्धिस्त्रिदिनं च माससन्धिस्त्रिनाडयः<sup>१६७</sup> खलु सन्धययोश्च ।

नाड्यश्वतस्त्रस्तिथित्रक्षयोगं<sup>१६८</sup> सन्धिस्तद्वै करणस्य सन्धिः ॥४३॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१९प्र.पादः, १८द्वि.पादः)

क्रूरग्रहमध्यगते लग्ने चन्द्रेऽथवा करग्रहणम् ।

ते यमसदनाभिमुखं गमनं चेच्छन्ति कन्यायाः ॥४४॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-४५)

दारिद्र्यं रविणा कुजेन मरणं सौम्येन न स्युः प्रजाः ।

दौर्भाग्यं गुरुणा सितेन सहिते चन्द्रे ससापत्न्यकम् ।

प्रव्रज्याकर्सुतेन सेन्दुजगुरौ वाच्छन्ति केच्छुभम् ।

व्याध्यैर्मृत्युरसदग्रहैः शशियुतैदीर्घः प्रयासः शुभैः ॥४५॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-४२)

कुर्वत्युद्गाहितां कन्यां विधवां वत्सरत्रयात् ।

अन्यस्मिन्मङ्गले ताश्च निधनं वाऽथ निर्द्धनम् ॥४८..५१॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-८२)

शुक्ले द्वितीयादित एव कृष्णपक्षे दशम्यन्तगताः<sup>१६९</sup> प्रशस्ताः ।

तास्वष्टमीस्कन्दगणेशदुर्गाश्तुर्दशी चापि तिथिर्विकर्ज्या ॥

वाराः प्रशस्ताः शुभखेचराणां सूर्यार्किवारौ खलु मध्यमौ तौ ।

---

१६५ धिष्ये

१६६ द्वयं तत्राडयः

१६७ नाडयोभय

१६८ योगे सन्धिद्विपादं

१६९ गताः शुभाः स्युः

त्याज्यः सदा भूमिसुतस्य वारः कामार्क्तिथ्योरपि तौ प्रदोषौ ॥५४ ॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-४,६)

स्वात्या<sup>१७०</sup> मघायां निर्ऋतौ<sup>१७१</sup> ध्रुवान्त्यमित्रेन्दुहस्तेषु च कन्यकानाम् ।

पाणिग्रहस्त्वष्टफलप्रदः स्यादविद्धभेष्वेव गुणान्वितानाम् ॥५५ ॥ प्र.६

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-६९)

अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयगस्तृतीयगम् ।

तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् ॥

भिनत्ति वेधकृद् ग्रहो न चान्यपादमादरात् ।

असम्भवाच्छशीनयोर्दृशोः समत्वमत्र वै ॥

विषप्रदग्धेन हतस्य पत्रिणा मृगस्य मांसं शुभदं क्षतादृते ।

तथैव पादो न शुभोऽवशिष्टाः पादाः शुभाश्वेति पितामहेन ॥५६ ॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-७३,७४,७२)

उत्पातभं ग्रहणभं क्रूरविद्धं स्थितं च यत्<sup>१७२</sup> ।

दहतीव शुभं कर्म राघवाग्निशरोम्बुधिम् ॥५८ ॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-९९)

गन्तव्यधिष्यं खलु मुक्तभं यत्क्रूरैर्महोत्पातविदूषितं<sup>१७३</sup> च ।

चन्द्रोपभोगादमलं तदानीं शुभेषु कार्येषु शुभप्रदं च ॥५८ ॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१०९)

रविभादहिपितृमित्रत्वाष्ट्रभहरिपौष्णभेषु गणितेषु ।

अश्विनभादिन्दुयुतौ तावति वै पतति गणनया पातः ॥

अयमपि पातो दोषचण्डीशचण्डायुधाह्वयो ज्ञेयः ।

अखिलेषु मङ्गलेष्वपि वज्र्यो यस्माद्विनाशदः कर्तुः ॥६० ॥ प्र.६

(व.सं. अ.-२१ श्लो.-५,६)

दोषो महापात इति प्रसिद्धः स वैधृतो हन्ति वधुं वरं च ।

तं रक्षितुं लग्नगुणास्त्वशक्ता<sup>१७४</sup> स्वबान्धवास्तेऽशनिनोपघातम् ॥६१ ॥ प्र.६

१७० स्वातौ

१७१ ध्रुवेषु मित्रेन्दु

१७२ भम्

१७३ तत्

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-९३)

शास्त्रात्समानीतमहातिपातः स्वैधृतो हन्ति वधूं वरं च ।  
त्रिसप्तवाराणि च जामदङ्ग्यो क्रोधोऽचिरात्क्षत्रकुलं समस्तम् ॥६१॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-९४)

एकान्तरा दिनपतौ <sup>१७५</sup>दिवसे द्वितीया पूर्वान्त्यचापघटयोर्घटमोक्षयोश्च ।  
कर्कजियोर्मिथुनकन्यकयोश्च कीटहर्योस्तुलामकरयोः खलु मासदग्धाः ॥  
मासदग्धासु तिथिषु कृतं यन्मङ्गलादिकम् ।  
तत्सर्वं नाशमायाति ग्रीष्मे कुसरितो यथा ॥६६॥ प्र.६

(व.सं. अ.-१२ श्लो.-२५,२६)

इष्टेदयांशे निजपत्यदृष्टे वरस्य मृत्युस्तदसंयुते वा ।  
अस्तांशकेऽप्येवमदृष्ट्युक्ते स्वस्वामिना नाशमुपैति कन्या ॥७६॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-९६)

उदयांशः स्वनाथेन मित्रसौम्येन संयुतः ।  
प्रेक्षितो वा तथास्तांशो दम्पत्योः पुत्रपौत्रदः ॥७७॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-९७)

<sup>१७६</sup>विषुवतोरयनयोर्दिनत्रयं हरिपदे षडशीतिमुखेषु च ।  
पूर्वतोऽपि परतोऽपि संक्रमान्नाडिकाश्च खलु षोडश <sup>१७७</sup>त्यजेत् ॥  
संक्रान्तिदोषे त्वचिरात्कृतं यदुद्वाहपूर्वाखिलमङ्गलाद्यम्<sup>१७८</sup> ।  
लाक्षासमूहं ज्वलिताग्निमध्ये विलीयते यद्वदशेषमेतत्<sup>१७९</sup> ॥७९॥ प्र.६

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-३७,३८)

लग्ने<sup>१८०</sup> हि सर्वे खलु राशयश्च शुभेक्षिताश्चाथ युताः शुभाः स्युः ।  
नवांशकास्तौलिनृयुग्मवत्यश्चापार्द्धभागः शुभदो न चान्ये ॥

---

१७४ अशक्ताः

१७५ दिवसाद्वितीयाच्चापान्त्ययोर्वृषभकुम्भभयोश्च तद्वत

१७६ उयनतोऽपि दिनत्रयं

१७७ षोडश

१७८ मङ्गलौधम्

१७९ कोटिः

१८० लग्नादि

द्विभर्तृका मेषनवांशके स्याद्वृषांशके सा<sup>१८१</sup> पशुशीलयुक्ता ।  
 धनान्विता पुत्रवती तृतीये कुलीरकांशे कुलटाप्यजस्तम् ॥  
 सिंहांशके सा पितृमन्दिरस्था कन्यांशके वित्तयुता सुशीला ।  
 तुलांशके सर्वगुणास्पदा सा कीटांशके निःस्वतरा विशीला ॥  
 चापांशकाद्ये धनिनी द्वितीये भागेऽन्यसक्ता मलिनी गदाढ्या ।  
 निःस्वा मृगांशे विगुणा घटांशे विभर्तृका योगरता विशीर्णा ॥  
 मीनांशके <sup>१८२</sup>भर्तृयुतार्थहीना शुभग्रहैर्युक्तनिरीक्षितेऽपि ।  
 तस्मात्सदैवोक्तनवांशकेषु कुर्याद्विवाहं गुणसंप्रवृद्धयै ॥  
 नवांशदोषः सकलं गुणौधं लग्नोत्थसौम्यग्रहसम्भवं च ।  
<sup>१८३</sup>धूवं निहन्तीव वृकोऽजसंधं षट्वर्गजं सौम्यवियच्चराणाम् ॥८४॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-४७,४८,४९,५०,५१,५४)  
 प्रीतिबुद्धिः सुगुणनिरतिर्बन्धुपूजा सुताप्ति-  
<sup>१८४</sup>सदैवपक्ष्यं तनयरहितं त्वन्यथा भर्तृनाशः ।  
 धर्मे बुद्धिर्भवति धरणीलब्धिरत्येव <sup>१८५</sup>बुद्धि-  
 हर्निः स्त्रीणां हिमकरसुते लग्नभावादिसंस्थे ॥८७॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१४८)  
 लक्ष्मीप्राप्तिर्भवति सुयशः प्रीतिरन्योन्यवृद्धि-  
<sup>१८६</sup>रिष्टप्राप्तिर्बहुविधभयं चाश्रमाणां विरक्तिः ।  
 पापासक्तिः सुकृतनिरतिर्भूरिलाभः सुरेज्ये ।  
 स्त्रीणां सौख्यं रिपुकृतभयं लग्नभावादिसंस्थे ॥  
 भोगप्राप्तिर्विविधविभवः स्वैरवृत्तिर्महत्त्वम् ।  
 धूम्राधिक्यं भवति निधनं सर्वनाशो वसुत्वम्<sup>१८७</sup> ।

१८१ स्यात्

१८२ भर्तृसुताथ

१८३ दत्त

१८४ र्मिवैपक्ष्यं तनयरहितत्वं तनुत्यागचिन्ता ।

१८५ लाभमत्यन्तवृद्धि-

१८६ वाप्ति

१८७ व्यसुत्वम्

तथ्ये प्रीतिर्बहुविधगुणः सर्वसंपत्समृद्धि-  
 रस्वं स्त्रीणामुशनसि <sup>१८८</sup> तथा लग्नभावादिसंस्थे ॥८७॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१४९, १५०)  
 मृत्युर्नैः स्वं बहुविधधनं भ्रातृहानिः प्रजानाम् ।  
 व्याधिः सौख्यं बहुविधमतो भर्तृहानिश्चिरायुः <sup>१८९</sup> ।  
 श्रेयो हानिर्भवति हृदये व्याधिरथागमश्च ।  
 भानौ स्त्रीणामतिशयरुजा लग्नभावादिसंस्थे ॥  
 नाशः संपद्बहुविधयशोबन्धुवृद्धिः प्रजाप्तिः <sup>१९०</sup> ।  
 शस्त्रान्मृत्युर्भवति न चिराद्वीर्घसापत्न्यबाधा ।  
 प्रव्रज्यात्वं दुहितृजननं <sup>१९१</sup> वर्धनं भोगभाक्त्वम् ।  
 दास्यं स्त्रीणां तुहिनकिरणे लग्नभावादिसंस्थे ॥  
 मृत्युः शोको बहुविधधनं भ्रातृवैरं कुबुद्धि-  
 लक्ष्मीप्राप्तिर्भवति मरणं चोभयोर्वित्तनाशः ।  
 स्त्रीणां <sup>१९२</sup> द्वेषो व्यसननिरतिः पुत्रपौत्रार्थसिद्धि-  
 भीतिर्भूमेर्बलिनि तनये लग्नभावादिसंस्थे ॥  
 स्वछन्दत्वं कदशनरतिर्वल्लभत्वं विशील्यम् ।  
 व्याधिः सुश्रीमृतिरथ सुखं गर्भपातप्रवृत्तिः ।  
 द्यूतासक्तिर्भवति रविजे वैभवं वक्त्ररोगः ।  
 स्वर्भानौ वा <sup>१९३</sup> शिखिनि च तथा लग्नभावादिसंस्थे ॥८७॥ प्र.६  
 (व.सं. अ.-३२ श्लो.-१४५, १४६, १४७, १५१)  
 ये लग्नदोषाः कुनवांशदोषाः पापैः <sup>१९४</sup> कृता दृष्टिनिपातदोषाः ।  
 लग्ने गुरुस्तान्विमलीकरोति फलं यथाम्भः कतकद्वुमस्य ॥९०॥ प्र.६

१८८ तदा

१८९ हानिक्रिरायुः

१९० प्रजातिः

१९१ जनितात्वं धनं

१९२ द्वेष्य

१९३ वाप्यथ शिखिनि वा

१९४ पापगृहै

(व.सं. अ.-३२ श्लो.-१३०)

प्रकरण - १०

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चमित्रगृहस्थितैर्वापि तदंशसंस्थैः ।  
शुभे विलग्ने सततं ग्रहेन्द्रा दिशन्ति लक्ष्मीं विपुलां च कीर्तिम् ॥१॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-२)

स्वनीचगैः १९५ शत्रुगृहस्थितैश्च तदंशसंस्थैः स्वगृहोपगैर्वा ।  
पापोदये शोकभयं १९६ स्वकीर्ति दिशन्ति राज्ञां भृशमम्बराटाः १९७ ॥२॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-३)

आधानजन्मेशदशाधिनाथरवीन्दुभौमेज्यसितैर्बलिष्ठैः १९८ ।  
उत्पातदोषादिविवर्जितेषु पदं स्थिरं स्याच्च नराधिपानाम् १९९ ॥३॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-४)

रिक्तास्वमायां बुधभौमवारविवर्जिते वारदिनेषु चैव ।  
खले दिने ऋक्षनिशेः २०० तथैव न नैधने भे त्वभिषेक इष्टः ॥४॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-५)

शीर्षोदये चोपचये गृहे वा स्वजन्मलग्नादथ लग्नगोऽपि ।  
शुभग्रहैर्युक्तनिरीक्षिते वा पदं स्थिरं स्यात्सततं २०१ हि राज्ञाम् ॥५॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-६)

२०२ त्रिकोणकेन्द्रत्रिधनेषु सौम्यैस्त्रिषष्ठलाभारिगतैश्च पापैः ।

१९५ वैरिगृहोदिगैर्वा हास्तङ्गतैर्वक्रमुपागतैर्वा

१९६ त्वकीर्ति

१९७ भृशमन्तरायम्

१९८ बर्लस्थैः

१९९ धराधिपानामभिषेक इष्टः

२०० निशीशयोश्च

२०१ च

२०२ केन्द्रेत्रिकोण त्रिधनाय

षष्ठाष्टलग्नव्ययवर्जितेन चन्द्रेण राज्ञां शुभदोऽभिषेकः ॥२॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-८)

पापग्रहैः स्वान्त्यगतैश्च निःस्वो रोगी विलग्नोपगतैर्भवेत्सः ।

पदच्युतः सप्तचतुर्थसंस्थैः पुत्रस्थितैः सर्वसुखैर्विहीनः ॥३॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-६)

यस्याभिषेके पुरुहूतमन्त्री लग्ने त्रिकोणे यदि वा भवेत्सः ।

षष्ठे कुञ्जः कर्मगतश्च शुक्रः स मोदते विक्रमराज्यलक्ष्म्या ॥४॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-९)

दुश्चिक्यलाभारिगता विनार्कीं स्वस्थेऽमरेज्ये यदि बन्धुगोहे<sup>२०३</sup> ।

यस्यात्र योगे क्रियतेऽभिषेकश्चिरायुषस्त्वस्य पदं स्थिरं स्यात् ॥४॥ प्र.१०

(व.सं. अ.-३३ श्लो.-१०)

प्रकरण – ११

परविषये विजयार्थं गन्तुर्यात्रा तु समरविजयाख्या ॥०४

निखिलापरयात्रा या सामान्या सा भवेद् द्विविधा ॥०५

कथिततिथिवासरक्षेच्चभिमतफलदा भवेच्च सामान्या ।

समराह्वया च यात्रा योगविलग्नक्षितीशयोगेषु ॥११ पूर्व ॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-३,४)

निखिलगुणयुतानां<sup>२०६</sup> राज्ञां कथयामि विधानमत्र यात्रायाः ।

जातकमवलोक्य वदेत्पलसिद्धिस्त्वन्यथा मृषा भवति ॥१॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-१) प्र.११

जन्मराशौ लग्नगते तदीशे वापि<sup>२०७</sup> लग्नगे ।

<sup>२०६</sup>अथ लाभप्रदा यात्रा राशीशश्चेच्छुभग्रहः ॥

२०३ बन्धुजे ज्ञे

२०४ परविषयविजयार्थं गन्तुर्वा समरयात्राख्या ।

२०५ निखिला परयात्रा या सामान्यां भुवि भवेद्विविधा

२०६ युतस्य

२०७ वा विलग्नगे

जन्मलग्ने लग्नगते २०९ तदीशे वापि लग्नगे ।  
 अत्यन्तफलदा यात्रा तदीशश्चेच्छुभग्रहः ॥  
 जन्मराशिविलग्नाभ्यां लग्ने २१० चोपचये गृहे ।  
 सम्पूर्णफलदा यात्रा २११ तथैव विजयप्रदा ॥२॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-६५,६८,७१)  
 वलक्षपक्षे प्रतिपत्यप्रयाणे भङ्गप्रदा वा निधनप्रदा वा ।  
 यातुर्मनोभीष्टकरा द्वितीया सम्पूर्णयात्राफलदा तृतीया ॥  
 तिस्रोऽपि रिक्तास्तिथयः प्रयातुर्मृत्युप्रदाश्चार्थविनाशदा वा ।  
 यशस्करी भूरिधनप्रदा च या पञ्चमी मृत्युकरी च षष्ठी ॥१॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१७प्र.पादः, १८द्वि.पादः)  
 सप्तमी विजयदा २१२ ह्याष्टमी शोकदुःखभयदामयप्रदा ।  
 सर्वदुःखशमनी यशस्करी लाभदा च दशमी निरन्तरम् ॥  
 पशुप्रदा मानकरी सुगन्धरक्ताम्बरानेकशुभप्रदा स्यात् ।  
 एकादशी चित्रमृगप्रभूतधान्याकराद्युतमवस्तुदा स्यात् ॥  
 भूरिभूतिनाशिनी भूरिधर्महारिणी  
 भूरिभीतिदायिनी द्वादशी प्रभङ्गदा ।  
 त्रयोदशी सुभोगदा विपक्षपक्षनाशिनी  
 विनाशदाथ पूर्णिमा यशःक्षयं करोत्यमा<sup>२१३</sup> ॥१॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१९,२०,२१,२२)  
 पौष्णद्वयादित्यकरेज्यमित्रमिन्दुर्हरीवासवभानि<sup>२१४</sup> यानि।  
 श्रेष्ठानि यात्रासु नवैव तानि मुक्त्वा त्रिपञ्चादिमसप्तभानि ॥१॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-२५)

- २०८ अभीष्टफलदा
- २०९ तद्वर्गे वा विलग्नगे
- २१० चोपचये
- २११ त्वथवा
- २१२ तथाष्टमी
- २१३ करोति वा
- २१४ विष्णिवन्दुवस्वाह्वयभानि

पुरुहूतदिशं पुरन्दरक्षे नेयाद्याम्यदिशं त्वजाङ्गिधिष्ये ।  
 जलनाथदिशं पितामहक्षे शूलाख्यानथ सौम्ययमक्षे ॥१०॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-२७)  
 शूलसंज्ञानि<sup>१५</sup> धिष्यानि शूलसंज्ञाश्च वासरा: ।  
 यायिनां मृत्युदाः शीघ्रमथवा चार्थहानिदाः<sup>१६</sup> ॥१०॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-३०)  
 राहुस्थितक्षे तस्यास्यं पुच्छं पञ्चदशं ततः ।  
 तदेव<sup>१७</sup> केतुर्बिञ्जेयः सदा राहुः प्रतीपगः ॥  
 त्रयोदश च देयानि धिष्यान्युभयपार्श्वयोः ।  
 मुखभागो मृते: पक्षे<sup>१८</sup> जीवपक्षस्तु पृष्ठगः ॥१४॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-५४,५५)  
 जीवपक्षगयोः सूर्यचन्द्रयोः सन्धिमादिशेत् ॥  
 उभौ पराजितौ ज्ञेयौ मृतपक्षगयोस्तयोः ॥१५॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-५८द्वि.पादः,५९प्र.पादः)  
 रविः स्थायी शशी यायी तद्वशाच्च जयाजयौ ।  
<sup>१९</sup> मृतपक्षगते भानौ जीवपक्षगते विधौ ॥  
 जीवपक्षे गते सूर्ये मृतपक्षे गते विधौ ।  
 यायिनां विजयस्तत्र स्थायिनां च पराजयः ॥१५॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-५६,५७)  
 चन्द्रे पुच्छे मुखे सूर्ये जयः स्वल्पोऽपि यायिनाम् ॥  
 व्यत्यये व्यत्ययफलं<sup>२०</sup> युद्धेऽप्येवं विचिन्तयेत् ।  
 यात्रायामपि सर्वत्र चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥१५॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-५९द्वि.पादः,६०)

२१५ शूलाख्यानि च

२१६ ऽश्चादिहानिदाः

२१७ केतुभंजेयं

२१८ मृतपक्षो

२१९ जीवपक्षस्थिते सूर्ये मृतपक्षगते विधौ

२२० युद्धेऽप्येव

कुलभेषु च ये<sup>२२१</sup> जातास्ते मनुजा भवन्ति कुलमुख्याः ।

उपकुलभे परविभवाद्वोक्तारस्त्वन्यभेषु सामान्याः ॥१७॥ प्र.११

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-८८)

यद्विग्नारं मन्दिरं तद्विगृक्षैरुक्तक्षीः स्यात्सन्निवेशो न सर्वैः ।३६/१ । प्र.११/१३

(व.सं. अ.-३८ श्लो.-१७)

पुष्ट्यार्कांश्विनमैत्राणि सर्वदिग्द्वारकाणि<sup>२२२</sup> च ।

सर्वदिक्षवपि<sup>२२३</sup> यात्रायां सर्वकामार्थदानि च ॥३८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-३२द्वि.पादः, ३३प्र.पादः)

वसुभस्योत्तराद्वच्च पञ्चधिष्येषु सर्वदा ।

याम्यदिग्यायिनां नरणां<sup>२२४</sup> न मुहूर्ते जयप्रदः ॥३८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-७६)

मृगगणमध्ये सिंह उडुगणमध्ये तथैव पुष्यश्च ।

निजबलसहितोऽप्येवं त्रिविधोत्पातैर्न शक्तिमान्निहितः ॥३८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-८०)

एकार्गलहतं धिष्यं कूरक्रान्तं च विद्धभम् ।

उत्पातदूषितं<sup>२२५</sup> यत्तद्यात्रायां भङ्गदं सदा ॥३८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-८१)

सर्वस्मिन्नपि समये सर्वासु च दिग्विदिक्षवेव ।

सर्वद्वारिकधिष्यान्यभिशुभदान्यतुलमखिलनृणाम् ॥३८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-१४ श्लो.-७६)

एकोऽपि<sup>२२६</sup> वक्रगः खेटो<sup>२२७</sup> लग्नस्थो वारराशिगः ।

नीचस्थो वा तदंशस्थो<sup>२२८</sup> यात्राफलविनाशनः ॥३८॥ प्र.११

---

२२१ यातास्ते

२२२ भानि

२२३ यात्रायां

२२४ दुःखदा भङ्गदाऽपि वा

२२५ यत्र यात्रा भङ्गप्रदा

२२६ चक्रगः

२२७ लग्नस्थश्चारिराशिगः

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-३६)

बलप्रदास्य खेटस्य वारवर्गः शुभप्रदः ।

इतरग्रहवारादिर्यात्रायामशुभप्रदः ॥३८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-८०)

यात्रेष्टसिद्धिदार्केन्दोरेकायनगयोस्तयोः ।

भिन्नायनगयोरहि निशि चेदन्यथा वधः ॥३९॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-६१)

पश्चादभ्युदिते शुक्रे <sup>२२९</sup>यायात्प्राचीं तथोत्तराम् ।

प्राच्यामभ्युदिते शुक्रे प्रतीचीं दक्षिणां दिशम् ॥४०॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-९३)

तद्वेषशमनार्थाय शान्तिं वक्ष्ये समासतः ।

कृत्वा शान्तिं प्रयत्नेन पश्चात्कार्यं समाचरेत् ॥

भृगोर्लग्ने भृगोर्वर्गे भृगोवरि भृगूदये ।

उपोष्य भृगुवारेऽपि यावच्छुक्रोदयं व्रती ॥

रजतेन <sup>२३०</sup>च शुद्धेन प्रतिमां कारयेद्वृगोः ।

लिखेदष्टदलं पद्मं कांस्यपात्रे च तण्डुलैः ॥

शुक्लसूक्ष्माम्बरैर्वेष्य प्रतिमां तत्र पूजयेत् ।

शुक्लपुष्पाक्षतैर्गन्धैर्मुक्ताहारैर्विचित्रितैः ॥

उपचाराणि कार्याणि शुक्रं ते अन्यदित्यृचा ।

तन्मन्त्रेण जपं कुर्यात्सम्यगष्टोत्तरं शतम् ॥

कर्मान्ते तेन मन्त्रेण भक्त्या चार्घ्यं प्रदापयेत् ।

श्वेतगन्धाक्षतैः पुष्टैः <sup>२३१</sup>क्षीरमिश्रेण वारिणा ॥

दैत्यमन्त्री दिवादर्शी चोशना भार्गवः कविः ।

श्वेतोऽथ मण्डली काव्यो विधिस्थो भृगवे नमः ॥

<sup>२३२</sup>दत्त्वेत्यर्थं प्रयत्नेन प्रार्थयेच्चैव भक्तिः ।

---

२२८ काले विनाशदः

२२९ तस्मिन्प्रतीचीं

२३० सशुद्धेन

२३१ क्षीरमिश्रितवारिभिः

अनेनैव च मन्त्रेण प्राञ्जलिः प्रणतः स्थितः ॥  
 त्वपूजयाऽनया २३३ शुक्रसमुखत्वसमुद्भवम्।  
 दोषं विनाशाय क्षिप्रं रक्ष मां तेजसां निधे ॥  
 इति प्रार्थ्य प्रयत्नेन प्रतिमा भूषणान्विता ।  
 दैवज्ञायैव दातव्या श्वेताश्वसहितेन च ॥  
 शिष्टेभ्यो दक्षिणां दद्याद्यथावित्तानुसारतः ।  
 ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वयं भुजीत बन्धुभिः ॥  
 एवं यः कुरुते सम्यक्प्रतिशुक्रपूजनम् ।  
 न तस्य सम्मुखो दोषो विजयी चार्थवान्भवेत् ॥  
 इतरेषां ग्रहाणां च पूजां कुर्यात्प्रयत्नतः ।  
 तत्तत्सन्मुखजं दोषं तत्क्षणादेव नश्यति ॥  
 सूर्याय कपिलां दद्याच्छङ्खं चन्द्रमसे २३४ तथा ।  
 कुजाय वृषभं दद्यात्स्वर्णं दद्याद्गुधाय च ॥  
 गुरवे पीतवस्त्रं २३५ चाश्वं सितायासिताय गाम्।  
 एवं प्रयत्नतः कृत्वा सर्वान्कामानवाप्नुयात् २३६ ॥४०॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-९९ तः ११३)  
 प्रतिशुक्रं प्रतिबुधं प्रतिभौमं गतो २३७ नृपः ।  
 बलेन २३८ शुक्रतुल्योऽपि हतसैन्यो निवर्तते ॥४१॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-९५)  
 सम्मुखे चन्द्रजे यत्र मार्गमध्योदिते यदि ।  
 यावदस्तमिते तस्मिंस्तावत्तत्रैव संवसेत् ॥४२॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-९)

२३२ दत्त्वा हृथि

२३३ शुक्र मे सन्मुखसमुद्भवम् ।

२३४ ऽपि च

२३५ च सिताय सितलोहकम्

२३६ वाप्स्यति

२३७ नरः

२३८ शक्र

जन्मराशौ लग्नगते तदीशे वा विलग्नगे ।  
 अभीष्टफलदा यात्रा राशीश्चेच्छुभग्रहः ॥४३॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-६५)  
 २३९ स्वाष्टलग्ने लग्नगते राशौ वा लग्नगे सति ।  
 यातुर्भङ्गो भवेत्तत्र द्वादशे वान्यलग्नगे ॥४५॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-६२)  
 वर्गोत्तमांशगे लग्ने त्वथवापि सुधाकरे ।  
 यात्रा कामदुघा यातुर्माता पुत्रस्य वै यथा ॥४६॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-७२)  
 पूर्वादि दिक्षु मेषाद्या क्रमाद्विद्वारराशयः ।  
 दिग्द्वारराशयः सर्वे तद्विग्रातुर्जयप्रदाः ॥४७॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो. ३३ द्वि.पा.३५प्र.पा.)  
 २४० दिग्द्वारभे लग्नगते यात्रार्थविजयप्रदा ।  
 २४१ लग्ने दिक्प्रतिलोमे सा हानिदा शत्रुभीतिदा ॥४७॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-७३)  
 शत्रोरष्टमलग्ने वा राशौ वापि विलग्ने२४२ ।  
 तदीशस्थितलग्ने वा यातुः शत्रुक्षयस्तदा ॥४८॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-२१८)  
 दिगीश्वरा भास्करशुक्रभौमराहृकिंचन्द्रज्ञसुरार्चिताः स्युः ॥४९॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-३८प्र.पादः)  
 राशीनेके द्वाविनाक्रान्तराशेरप्रादक्षिण्याद्विन्यसेद्विग्विदिक्षु ।  
 यददिग्राशौ लग्नगे सम्मुखत्वं तद्विग्रातुर्मृत्युदस्तद्विग्रीशः ॥५१॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-३९)  
 घन्ति क्रूरस्त्रिषष्ठायभावान्हित्वा परान्सदा ।  
 पुष्णन्ति सौम्यखचराः षष्ठान्त्यविना परान् ॥

२३९ स्वेष्ट

२४० दिग्द्वारभे लग्नगते तदंशे वा तदीश्वरे ।

२४१ अर्थलाभप्रदा यातुरथवा विजयप्रदा ॥

२४२ वा यदि लग्नगे

लग्ने षष्ठाष्टमं हन्ति चन्द्रः शुक्रोऽस्तगस्तथा<sup>२४३</sup> ।  
 मृत्युलग्नस्थितश्चन्द्रो यातुर्मृत्युप्रदः सदा ॥५६॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१४६,१४७)  
 उक्त्वा साधारणां यात्रां युद्धयात्रां<sup>२४४</sup> ब्रवीम्यहम्।  
 व्रजन्ति ये नृपाः सूक्ष्मलग्ने ते यायिनः सदा ॥  
 योगलग्नेर्युता राजा यात्रा च विजयप्रदा।  
 विचित्रान्योगलग्नांस्तान्सम्यग्वक्ष्ये समासतः ॥५७॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१४९,१५३)  
 फलसिद्धिर्धिष्यगुणैरग्रजानां भवेत्सदा ।  
 योगलग्ने क्षितीशानां चौराणां शकुनैर्भृशम् ॥५७॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१५०)  
 प्रयाणसमये यस्य विद्युनीहारवृष्टयः ।  
 अकालजा भवन्त्येते सदा<sup>२४५</sup> भङ्गकरा नृणाम् ॥७९॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-४०)  
 नवमी ज्ञेया त्रिविधा प्रवेशनवमी प्रथाणनवमदिनम्।  
 निर्गमनतः प्रवेशात् प्रयाणनवमी नवमदिनं च ॥  
 सततं नवमीत्रितयं यात्रायां प्राणहानिदं यातुः ॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-४०)  
 दिगीश्वराकृतिं कृत्वा सुवर्णेन स्वमन्त्रकैः ॥  
 स्वस्ववर्णेः सुगन्धाद्यैर्दीपैर्धूपैर्मनोरमैः ।  
 तद्वर्णवस्त्रैर्नैवैर्भवत्या सम्यक् प्रपूजयेत् ॥  
 तद्विगीशं सुसम्पूज्य तिलहोमं च कारयेत् ।  
 दैवज्ञाय ततो दद्यात्प्रतिमं दक्षिणान्विताम् ॥  
 देवानुरूपन्वितृन्विप्रान्स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।  
 नत्वा तुष्टः प्रीतिमना व्रजेन्मङ्गलनिःस्वनैः ॥८३॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१२४ द्वि.पादः,१२५,१३४,१३५)

२४३ स्तगःसदा

२४४ ब्रवीमि ताम् ।

२४५ भङ्गकरामृशम्

तस्मिन्मुहूर्ते स्वयमप्रमाणे प्रयोजनापेक्षतया च दैवात् ।  
 तत्रैव तन्निर्गमनं च २४६ कार्यं स्वीयासनाश्चापि तदुप्यमानम् ॥१२ ॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१३६)  
 प्रस्थानं धनुषां पञ्चशतान्युत शतद्वयम् ।  
 स्वदेवसदनाद्यद्वा दशभिः प्रस्थितो २४७ गतः ॥ १४ ॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१४०)  
 आरभ्य २४८ निर्गमाद्यावद् दशाहं न वसेन्नपः ।  
 मण्डलीकः सप्तरात्रात्प्राकृतः पञ्चरात्रतः ॥  
 अत ऊर्ध्वं व्रजेद्द्वयो भद्रे वा दिवसे नृपः ॥१५ ॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३७ श्लो.-१४१,१४२ प्र.पादः)  
 २४९ यात्राहवे तूल्कटभूषिते च भुक्तोल्कटे रात्रिषु सन्ध्ययोर्वा ।  
 २५० क्षौरं प्रकुर्यात्खलु चात्मनो हि श्रेयोऽभिलाषी न कदाचिदेव ॥१६ ॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-१४ श्लो.-६७)  
 अकाले सततं वृष्टिः सप्ताहं नृपतेर्वधः ॥१७४ ॥ प्र.११  
 रक्तवृष्टौ रणोद्योगो मांसवृष्टौ महद्रणम् ।  
 २५१ मकरश्चास्थिवर्षे स्याद्वावर्षेऽपि तत्फलम् ।  
 क्षौद्रवर्षे राष्ट्रनाशस्त्वङ्गारैः २५२ पांशुभिर्गदः ।  
 धान्याकफलपुष्पाद्यैर्लोहैश्चापि २५३ महद्वयम् ।  
 पर्णस्तृणैः काष्ठवर्षेस्तदेव फलमादिशेत् ।  
 पाषाणवृष्टिरभ्रेषु प्राणिवृष्टिरथापि वा ॥१७७ ॥ प्र.११  
 चित्रवृष्टिर्यदि २५४ भवेत्सा हि स्यादीतिकारणम् ॥१७८ ॥

२४६ कार्यं स्वात्मासमानं च यदुक्तभानम्

२४७ मतः

२४८ निर्गमाद्यायामातत्क्षितिपो दशवासरान्

२४९ यात्राहवेऽप्युल्कटभूषिते वामुकतेरे रात्रिषु सन्ध्ययोश्च ।

२५० क्षौरं न कुर्यात्खलु चात्मनस्च श्रियाभिलाषी न कदाचिदेव ॥

२५१ मरणं स्यादस्थिवृष्टौ वसावृष्टौ हि तत्फलम् ।

२५२ पांशुभिः सदा

२५३ स्तेयैर्महद्वयम्

(व.सं. अ.-४५ श्लो.-७४द्वि.पा., ७५, ७६, ७७, ७८)

शाखामृगाख्यभल्लूकदर्शनं<sup>२५५</sup> शब्दिते तथा।

शशसूकरगोपानां यातुः कार्यविनाशनम् ॥१०४॥<sup>२५६</sup> प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-५२)

विगजतुरगभीतान्पुण्यलोकभिलाषी

विरथशिथिलवस्त्रान्मुक्तशस्त्रास्त्रकेशान् ।

<sup>२५७</sup> तृणमुखगतसत्त्वान्प्राज्ञलीन्युद्घ्यमानः<sup>२५८</sup> ।

क्षितिपतिरिति<sup>२५९</sup> वीरान्युद्घभूमौ न हन्यात् ॥

सपत्नदेशान्नगरं प्रविश्य महीपतिर्देवगुरुद्विजार्थे ।

कुर्यात्र वाञ्छा न कुलाङ्गनासु प्राणाभिलाषी न कदाचिदेव ॥१०८॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३७ श्लो.-२३०, २३१)

नवप्रवेशेऽप्यथ कालशुद्धिर्न द्वन्द्वसौपूर्वकयोः कदाचित् ।

प्रवेशपञ्चाङ्गदिने सुलग्ने वास्त्वर्चनं पूर्ववदत्र कार्यम् ॥१२॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३८ श्लो.-२)

चन्द्रजर्यसितवासरेषु तु श्रीकरं<sup>२६०</sup> सुतमहार्थलाभदम् ।

सूर्यसूनुदिवसे स्थिरप्रदं किन्तु चौरभयमत्र विद्यते ॥१०९॥ प्र.११

(व.सं. अ.-३८ श्लो.-६)

<sup>२६१</sup> त्रिकोणकेन्द्रत्रिधनायसंस्थैः शुभैस्त्रिषष्ठायगतैः खलैश्च ।

लग्नान्त्यषष्ठाष्टमवर्जितेन चन्द्रेण लक्ष्मीनिलयः प्रवेशः ॥ ४प्र.११/१३

(व.सं. अ.-३८ श्लो.-१६)

न नैधनेभेऽपि न<sup>२६२</sup> चाष्टलग्ने पञ्चेष्टिकेऽप्यष्टमशुद्धियुक्ते ।

---

२५४ भवेत्सस्यानामीतिकारणम्

२५५ स्वमरिष्टदम्

२५६ एतयोः कीर्तनं यत्र यातुः कार्यविनाशनम्

२५७ नृप

२५८ नुहयमानान्

२५९ तनयादीन्

२६० सुख

२६१ केन्द्रत्रिकोण

कार्यः प्रवेशो न चरांशलग्ने शुभेक्षिते वाप्यऽथ संयुते वा ॥  
 प्रवेशलग्नान्निधनस्थितो यः क्रूरग्रहः क्रूरगृहे यदि स्यात् ।  
 प्रवेशकर्त्तरमथ त्रिवर्षाद्बन्त्यष्टवर्षैः शुभराशिगच्छेत् ॥१०९॥ प्र.११  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-१६, १३.१९)

प्रकरण — १२

वास्तुज्ञानं प्रवक्ष्यामि २६३ तदुक्तं ब्रह्मणा पुरा ।  
 ग्रामसप्तपुरादीनां निर्माणं २६४ वक्ष्यते ७धुना ॥१ पूर्व ॥ प्र.१२  
 (व.सं. अ.-३९ श्लो.-१)  
 विषमाय शुभायैव समायः शोकदुःखदः ।  
 गृहस्य तत्पतेस्त्वेकधिष्यं च निधनप्रदम् ॥  
 ध्वजः सिंहे तौ च गजे २६५ ह्येते गवि शुभप्रदाः ।  
 वृषो न पूजितोऽन्यत्र ध्वजः सर्वत्र पूजितः ॥५ ॥ प्र.१२  
 (व.सं. अ.-३९ श्लो.-५१, १७१ द्वि.पा.)  
 गजाये वा ध्वजाये वा गजानां २६६ सदनं शुभम् ।  
 अश्वालयं ध्वजाये वा खराये वा वृषेऽपि वा ॥  
 उष्णाणां मन्दिरं कार्यं गजाये वा वृषे ध्वजे ।  
 पशुसङ्घ वृषाये वा ध्वजाये वा शुभप्रदम् ॥  
 शश्यासु वृषभः शस्तः पीठे सिंहः शुभप्रदः ।  
 २६७ अमत्रच्छत्रवस्त्राणां २६८ वृषाये ध्वजेऽपि वा ॥  
 पादुकौपानहौ कार्यौ सिंहायेऽप्यथवा ध्वजे ।

२६२ वाष्ट

२६३ यदुक्तं

२६४ सूक्ष्मतोऽधुना

२६५ त्वेते

२६६ मन्दिरं

२६७ अन्यत्र

२६८ वृषभाये

उक्तानामप्यनुक्तानां मन्दिराणां ध्वजः शुभः ॥५॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-१८०.१८१.१८२.१८३)

नीचशत्रुगते जीवे शुक्रे वा २६९यदि वा बुधे।

२७० शशाङ्के वा कृतं गेहमतिनिःस्वत्वमाप्नुयात् ॥६॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-३१)

ध्रुवसंज्ञं गृहं त्वायं धनधान्यसुखप्रदम् ।

२७१ धान्यं धनप्रदं नराणां जयं २७२स्याद्विजयप्रदम् ॥

नन्दं स्त्रीहानिदं नूनं खरं संपद्विनाशनम् ।

पुत्रपौत्रप्रदं २७३कान्तं श्रीप्रदं २७४स्यान्मनोरमम् ॥

सुवक्रं भोगदं नूनं दुर्मुखं विसुखप्रदम् ।

सर्वदुःखप्रदं क्रूरं विपक्षं शत्रुभीतिदम् ॥

धनदं धनदं गेहं क्षयं सर्वक्षयप्रदम् ।

आक्रन्दं शोकजननं विपुलं श्रीयशःप्रदम् ।

२७५विपुलं नामसदृशं धनदं विजयाभिधम् ॥१०॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-१००,१०१,१०२,१०३)

त्रिषु त्रिषु च मासेषु नभस्यादिषु च क्रमात् ॥

यद्विडंमुखो २७६वास्तुनरस्तन्मुखं सदनं शुभम् ।

२७७ अन्यदिडमुखगेहं तद् दुःखशोकभयावहम् ॥११॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-५९द्वि.पा.,६०)

ऐश्वर्यं पुत्रहानिश्च २७८स्त्रीनाशो निधनं भवेत् ।

---

२६९ ज्ञेऽथवा रवौ ।

२७० निर्मितं सदनं शश्वदतिनिस्वत्वतां गतम्

२७१ धनधान्यप्रदं

२७२ तद्विजय

२७३ कान्तं

२७४ यन्मनोरमम्

२७५ विजयं नामसदनं धनदं विजयप्रदम्

२७६ वास्तुपुरुषः सदनं

२७७ अन्यदिग्वक्त्रगेहं तु

संपच्छत्रुभयं सौख्यं पुष्टिः २७९ प्रागादितः क्रमात् ॥२०॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-१८९)

ऐन्द्र्यां दिशि स्नानगेहमाग्नेव्यां पचनालयम् ।

याम्यायां शयनं वेशम् नैऋत्यां शस्त्रमन्दिरम् ॥

वारुण्यां भोजनगृहं वायव्यां २८० धान्यमन्दिरम् ।

उदीच्यां हाटकं सद्य ऐशान्यां देवमन्दिरम् ॥२१॥ प्र.१२

(व.सं. पेज-४१२ अ.-३९ श्लो.-१६४,१६५)

२८१ इन्द्रागन्योर्मथनं मध्ये याम्यागन्यो २८२ धूर्तमन्दिरम् ।

२८३ यमराक्षसयोर्मध्ये पुरीशत्यागमन्दिरम् ॥

राक्षसाम्बुपयोर्मध्ये २८४ विद्याभ्यासस्य मन्दिरम् ।

तोयेशानिलयोर्मध्ये सदनं २८५ रौदनं स्मृतम् ॥

२८६ वायव्योत्तरयोर्मध्ये सम्भोगस्यैव मन्दिरम् ।

२८७ उत्तरेशानयोर्मध्ये त्वौषधागारमुच्यते ॥

पुरन्दरेशानयोर्मध्ये सर्ववस्तुसंग्रहम् ।

सदनं कारयेदेवं क्रमादुक्तानि षोडश ॥२१॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-१६७,१६८,१६९,१७०)

एको २८८ ग्रहश्चेत्परभागवर्ती जायागतः २८९ कर्मगतोऽथ वा स्यात् ।

२९० करोति गेहं परहस्तयातं करोति वर्षाद्विबलः स खेटः ॥२५॥ प्र.१२

---

२७८ स्त्रीहानिर्निधन

२७९ प्राच्यादितः

२८० पशुमन्दिरम्

२८१ ऐन्द्र

२८२ रतिमन्दिरम्

२८३ याम्य

२८४ विद्याभवनभ्यासस्य

२८५ रोदनं ततः

२८६ कामोपभोगसदनं वायुकौबेरमध्ययोः ।

२८७ कौबेरशानयोर्मध्ये चिकित्सासदनं सदा ॥

२८८ ग्रहेन्द्रः

२८९ स्थितः

(व.सं. अ.-३८ श्लो.-२१)

इज्योत्तरात्रयाहीन्दुविष्णुधातृजलोद्गुषु ।  
गुरुणा सहितेष्वेषु कृतं गेहं श्रिया युतम् ॥२५॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-३२)

२९१ द्विदैवत्वाष्ट्रवारेऽशरुद्रादितिवसूद्गुषु ।  
शुक्रेण सहितेष्वेषु कृतं धान्यप्रदं गृहम् ॥२६॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-३३)

पितृमूलेज्यभाग्यार्कपौष्णभेषु च यत्कृतम् ।  
कुजेन सहितेष्वेव गृहं २९२ सन्द्व्यातेऽग्निना ॥२७॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-२७)

अग्निनक्षत्रगे सूर्ये चन्द्रे वा संस्थिते यदि ।  
निर्मितं मन्दिरं नूनमग्निना दद्याते ऽचिरात् ॥२७॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-२८)

अजपादद्वितीये याम्यमित्रेन्द्रानिलभेषु च ।  
यत्कृतं शनिसंयुक्ते २९३ दद्याते यक्षराक्षसैः ॥२८॥ प्र.१२

(व.सं. अ.-३९ श्लो.-२९)

प्रकरण - १३

अथ प्रवेशो नवसद्वनश्च सौम्यायने जीवसिते बलाढ्ये ।  
सिते च पक्षे शुभवासरे च वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कृत्वा ॥१॥ प्र.१३

(व.सं. अ.-३८ श्लो.-१)

माघेऽर्थलाभः प्रथमप्रवेशे पुत्रार्थलाभः खलु फालुने च ।  
चैत्रेऽर्थहानिर्धनधान्यलाभो वैशाखमासे पशुपुत्रलाभः ॥

---

२९० प्रविष्टगेहं

२९१ वारीश

२९२ तद्व्याते

२९३ संयुक्तं गृह्यते

२९४ ज्येष्ठे च मासेषु परेषु नूनं हानिप्रदः शत्रुभयप्रदश्च ।  
 शुक्ले च पक्षे सुंतरां २९५ विवृद्धयै कृष्णे च यावद्दशमी च तावत् ॥१॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-८, ९)  
 मृगादिषड्गाशिषु संस्थितेऽर्के नवप्रवेशः शुभदः सदैव ।  
 कुम्भं विनान्येष्वपि केचिदूचुर्नं सौरमिष्टं खलु सन्निवेशे ॥२॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-१८)  
 अर्कानिलार्यादितिदस्विष्णुऋक्षे प्रविष्टं नवमन्दिरं यत् ।  
 अब्दत्रयात्तप्तरहस्तयातं शेषेषु धिष्येषु च मृत्युं स्यात् ॥३॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-११)  
 कर्तुर्विलग्नादथ २९६ जन्मराशेलानस्थितो राशिरिति प्रदिष्टः ।  
 निव्याधिदारिद्रियशस्करश्च सुहत्सुतघो रिपुनाशदः सः ॥४॥ प्र.१३  
 कलत्रहन्ता निधनप्रदश्च रोगप्रदः सिद्धिकरोऽर्थदश्च ।  
 क्रमाच्च २९७ वैरामयदः क्रमेण सदैव नूनं त्रिविधः २९८ प्रवेशः ॥५॥  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-१४, १५)  
 अपूर्वसंज्ञः प्रथमप्रवेशो यात्रावसाने च सुपूर्वसंज्ञः ।  
 २९९ द्वन्द्वाभयस्त्वग्निभयादिजातस्त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः ॥६॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-३)  
 क्रूरग्रहाधिष्ठितविद्धभं च विवर्जनीयं त्रिविधप्रवेशे ॥७॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-७द्वि.पादः)  
 निर्मणे मन्दिराणां च प्रवेशे त्रिविधेऽपि ३०० च ॥  
 वास्तुपूजा ३०१ तु कर्तव्या यस्मात्तां कथयाम्यथ ॥

२९४ ज्येष्ठेषु

२९५ प्रवृद्धये

२९६ लग्नाच्च हि

२९७ वैरीभयद प्रवेशः

२९८ विचन्त्यम

२९९ द्वन्द्वाहय

३०० च

३०१ च कर्तव्या तस्मात्तां कथयाम्यथ

गृहमध्ये हस्तमात्रं समन्तात्पुलोपरि ॥  
 एकाशीतिपदं कार्यं तिलैस्तुल्यं सुशोभनम् ।  
 एकद्वित्रिपदाः पञ्चत्वारिंशत्सुरार्चिताः ॥  
 द्वात्रिंशद्वाह्यतो वक्ष्यमाणाश्चान्तस्त्रयोदश ।  
 तेषां स्थानानि नामानि वक्ष्यामीश्वरकोणतः ॥  
 तत्राग्निशम्भुकोणस्थस्त्वसौ <sup>३०२</sup>चैकपदेश्वरः ।  
 तस्माद्वितीयः पर्जन्यश्चासावेकपदेश्वरः ॥  
 जयन्त्येन्द्रार्कसत्याख्या भृशाश्च द्विपदेश्वराः ।  
 आकाशवायुपरतः क्रमादेकपदेश्वराः ॥  
 एवं प्राच्यां नव ज्ञात्वा <sup>३०३</sup>त्वेवमेवान्यदिक्षु च ।  
 आद्यश्चान्तावेकपदाद्विपादाः पञ्च मध्यमाः ।  
 पूषाद्यष्टौ यमान्ताः स्युरमरा याम्यभागगाः ॥  
 आद्यश्चान्तावेकपदाद्विपादाः पञ्च मध्यमाः ।  
 अष्टौ पितृगणाधीशा <sup>३०४</sup>पापान्ताः <sup>३०५</sup>पश्चिमेश्वराः ।  
 आद्यन्तौ द्वौ चैकपदौ द्विपदाः पञ्च मध्यगाः ॥  
 रोगादिरित्यन्तसुराः सप्त सौम्यदिशि क्रमात् ।  
<sup>३०६</sup>तत्राथःस्थश्चतुष्कोणेष्वीशानादिषु च क्रमात् ॥  
 आपः सावित्रविजयरुद्राश्चैकपदेश्वराः ।  
 मध्ये नवपदो ब्रह्मा तस्येशानादिकोणगाः ॥  
 आपवत्सोऽथ सविता विबुधाधिपसंज्ञकाः ।  
 राजयक्षमा च चत्वारः सुराश्चैकपदेश्वराः ॥  
 ब्रह्मणः पूर्वतो दिक्षु त्रिपदाश्चामरा अमी ।  
 अर्यमा च विवस्वांश्च मित्रः पृथ्वीधरः क्रमात् ॥  
 स्वस्वस्थलेषु <sup>३०७</sup>देवेषु स्थापितेष्वीदृशं भवेत् ।

<sup>३०२</sup> चैव

<sup>३०३</sup> नवमे वान्यदिक्षु

<sup>३०४</sup> यमान्ताः

<sup>३०५</sup> पश्चिमे सुराः

<sup>३०६</sup> तदधस्थ

कोणेषु पञ्चमे चैव चतुर्थेकपदाः सुराः ॥  
 प्रागादिदिक्षु द्विपदाः पञ्च पञ्च यथाक्रमम्<sup>३०८</sup> ।  
 ब्रह्मणः पूर्वतो दिक्षु<sup>३०९</sup> त्रिपदाः स्युः समीपगाः ॥  
 हिरण्यरेताः पर्जन्यो जयन्तः पाकशासनः ।  
 सूर्यसत्यौ भृशाकाशौ वायुः पूषा च वैतथा ॥  
 गृहक्षतः पितृपतिर्गन्धर्वो<sup>३१०</sup> भृंगराजकः ।  
 मृगः पितृगणाधीशस्तथा<sup>३११</sup> दौवारिवाह्यः ॥  
 सुग्रीवः पुष्पदन्तश्च जलाधीशो निशाचरः ।  
 शोषः पापश्च रोगो हि मुखो भल्लाट एव च ॥  
 सोमसर्पौ दित्यदिती द्वात्रिंशदमराः स्मृताः ।  
 आपश्चैवापवत्सश्च जयो रन्धस्तथैव च ॥  
 मध्ये नवपदो ब्रह्मा तस्थौ तस्य समीपगः ।  
<sup>३१२</sup> प्राच्यां ह्यन्तरिता देवाः परितो ब्रह्मणः स्मृताः ॥  
 अर्यमा सविता चैव विवस्वान्विबुधाधिपः ।  
 मित्रोऽथ राजयक्षमा च तथा भृथ्वीधरः क्रमात् ॥  
 आपवत्सोऽष्टमः पञ्चचत्वारिंशत्सुरोत्तमाः ।  
 ज्ञात्वैवं स्थाननामानि ब्रह्मणा सहितान् न्यसेत् ॥  
 वास्तुज्ञो वास्तुमन्त्रेण गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।  
 प्रणवेनार्चयेद्वापि अथवा स्वस्वनामभिः ॥  
 शुक्लवस्त्रयुगं दद्याद्दूपदीपफलौः सह ।  
 अपूर्णैर्भूरिनैवेद्यैर्वाद्यैः सह समर्पयेत् ॥  
 ताम्बूलं च ततो दद्याद्वेभ्यश्च पृथक्पृथक् ।  
 दत्त्वा पुष्पाङ्गलिं कर्ता प्रार्थयेद्वास्तुपूरुषम् ॥

३०७ स्थानेषु

३०८ क्रमात्

३०९ द्विपदा

३१० मृगराजकः :

३११ स्थाप्यो

३१२ प्रागाद्यन्तरिता

नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्यानिरत प्रभो ॥  
 मद्दहे धनधान्यादिसमृद्धिं कुरु सर्वदा ।  
 इति प्रार्थ्यं ततो दद्याद्विषिणामर्चकाय च ॥  
 विप्रेभ्यो भोजनं दत्त्वा स्वयं भुजीत बन्धुभिः ।  
 एवं यः कुरुते सम्यग्वास्तुपूजां प्रयत्नतः ।  
 आरोग्यं पुत्रपौत्रादो धनधान्यं लभेत्वः ॥  
 वास्तुपूजामकृत्वा यः प्रविशेन्नवमन्दिरे ।  
 रोगान्नानाविधान्क्लेशानश्रुते सर्वसंकटान् ॥२॥  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-१९५ तः २२२)  
 पञ्चाङ्गसंशुद्धिदिने निशीशताराबले चाष्टकवर्गयुक्ते ।  
 सौम्ये स्थिरे भे शुभदृष्टियुक्ते लग्नेऽथवा द्व्यञ्जगृहे विलग्ने ॥४॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-१२)  
 यः क्षीणचन्द्रोन्त्यष्टडष्टसंस्थः पापेक्षितः पापयुतोऽथवा स्यात् ।  
 कर्तुः स्त्रियं हन्ति स वत्सरेण त्रिवर्षतः सौम्यनिरीक्षितश्चेत् ॥४॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-२०)  
 कृत्वा शुक्रं पृष्ठतो वामतोऽकं विप्रान्पूज्यानग्रतः पूर्णकुम्भम् ।  
 हर्म्यं रम्यं तोरणैः स्त्रिवितानैः स्त्रीभिः<sup>३१३</sup> स्त्रावी गीतमाल्यैविशेत् तत् ॥४/७॥ प्र.१३  
 (व.सं. अ.-३८ श्लो.-२०)

मुहूर्तीचिन्तामणिग्रन्थं उद्घृतवसिष्ठश्लोकानां सूचिः-  
 (किन्तु वसिष्ठसंहिताग्रन्थं एते श्लोका नोपलभ्यन्ते।)

शुभकार्यप्रसूते च सर्वदा परिवर्जयेत् ॥९॥ प्र.१  
 सूर्याच्चतुर्थं दशमे च षष्ठे

विश्वक्षके विंशतिमे नवक्षेँ।

भवन्ति षड्भानुमहर्क्षयोगा:

कुयोगविध्वंसकरा: शुभेषु॥ २७॥ प्र.१

सर्वग्रासे दिनान्यष्टौ सर्वकार्येषु वर्जयेत्।

षट् दिनानि त्रिभागोने अर्धग्रासे चतुर्दिनम्॥

चतुर्थांशे त्रिरात्रं स्याद् ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः॥ ३२॥ प्र.१

नक्षत्रे यस्य दर्शन्तौ विषनाड्यां भवेद्यदि।

कुहूयोग इति ख्यातो व्याधिमृत्युभयादिकृत्॥ ५७॥ प्र.२

भागीरथ्युत्तरे कूले गौतम्या दक्षिणे तटे।

विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थे ज्ये न दुष्प्रति॥ ४९॥ प्र.१

नीचराशिगतः स्वस्य शत्रुक्षेत्रगतोऽपि वा।

शुभाशुभफलनैव दद्यादस्तङ्गतोऽपि वा॥ ५॥ प्र.४

तिमिरमिव कठोरज्योतिरुत्पत्तिकाले

क्षयमथ समुपैति प्राप्तुयादीप्सितानि॥ १॥ प्र.५

वृषमिथुनकर्कसिंहकन्या

तुलाधरचापञ्जाषाः शुभा भवन्ति।

यदि शुभफलशालिनोऽनुकूला

निधनविशुद्धियुता निषेककाले॥ ७॥ प्र.५

केन्द्राणि त्रिकोणेषु शुभस्थितेषु

लग्ने शशाङ्के च शुभैः समेते।

पापैस्त्रिलाभारिगतैश्च याया-

त्पुञ्जन्मयोगेषु च सम्प्रयोगम्॥ ७॥ प्र.५

अष्टमस्था ग्रहाः सर्वे नेष्टाः स्युस्ते शुभावहाः।

एवं सम्यक्परीक्षयैव कुर्यात्पुंसवानक्रियाम्॥ १०॥ प्र.५

उदगगते भास्वति पञ्चमेऽब्दे

प्राप्तेऽक्षरस्वीकरणं शिशूनाम्।

सरस्वती विघ्नविनायकं च

गुडौदनाद्यैरभिपूज्य कुर्यात्॥ ३७॥ प्र.५

निहितं त्रिविधोत्पातैः क्रूराक्रान्तं च विद्धभं त्वखिलम्।

त्याज्यं तच्छुभकर्मणि न पादतः पातधिष्यं च ॥४०॥ प्र.५  
 सर्वे ग्रहाश्चाष्टमगा निधनाः धनशोकदाः ।  
 विना स्वतुङ्गस्वक्षर्धिमित्रगाः शुभवर्गगाः ॥  
 आचार्यमशुभा घन्ति शिष्यं घन्त्यशुभेतराः ॥ प्र.५  
 बन्धौ तृतीये रिपुराशिसंस्थे वाञ्छन्ति पूजां दशमे सुरेज्ये ।  
 नेच्छन्ति पूजा जनिगे व्ययस्थे पुरातना अष्टमगेऽपि राशौ ॥४६॥ प्र.५  
 ग्रहे रवीन्द्रोरवनिप्रकम्पे केतूद्वमोल्कापतनादिदोषे ।  
 व्रते दशाहानि वदन्ति तज्जास्त्रयोदशाहानि वदन्ति केचित् ॥५३॥ प्र.५  
 प्रष्टुर्विलग्नात्प्रबलः शशाङ्कः शत्रुस्थितो मृत्युग्रहस्थितो वा ।  
 यद्यष्टमाब्दात्परतो विवाहं करोति मृत्युं वरकन्ययोश्च ॥४॥ प्र.६  
 रजो हि द्रष्टं यदि कन्यकायाः कुलद्वयं दुर्गतिमेति तस्याः ।  
 तस्मान्तितान्तं च तदुक्तकालं नोल्लङ्घ्य पाणिग्रहणं विधेयम् ॥११॥ प्र.६  
 एकोदरप्रसूतानां नात्र कार्यत्रयं भवेत् ।  
 भिन्नोदरप्रसूतानां नेति शातातपोऽब्रवीत् ॥१६॥ प्र.६  
 द्विशोभनं त्वेकगृहेऽपि नेष्टं शुभं तु पश्चान्नवभिर्दिनैश्च ।  
 आवश्यकं शोभनमुत्सुको वा द्वारेऽथ वाचार्यविभेदतोऽपि ॥१६॥ प्र.६  
 द्विर्द्वादशे वा नवपञ्चमे वा षष्ठाष्टके राक्षसयोषितो वा ।  
 एकाधिपत्ये भवनेशमैत्रे शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम् ॥३२॥ प्र.६  
 एकगृहसम्भवानां भवति विवाहसुतार्थसम्पत्यै ।  
 यद्युभयोरेकक्षं भवति तदा चांशको भिन्नः ॥३५॥  
 यः पापषड्वर्गभवो हि दोषः

पञ्चाङ्गसौम्यग्रहलग्नजातम् ।

गुणौघमम्भोधिममोघबाणः

शुष्ट्यत्पदोषं खलु राघवस्य ॥ प्र.६  
 मेषादिरन्धकं षट्कं चत्वारो बधिराः स्मृताः ।  
 द्वौ पञ्चवेति विज्ञेयावित्येतद्राशिलक्षणम् ॥  
 मेषो वृषो मृगेन्द्रश्च दिवसेऽन्धाः प्रकीर्तिताः ।  
 नृयुकर्कटकन्याश्च रात्रावन्धाः प्रकीर्तिताः ।  
 तुला च वृश्चिकश्चैव दिवसे बधिरौ तथा ।

धनुश मकरश्वैव बधिरौ निशि कीर्तितौ ॥  
 कुम्भमीनौ च पङ्गुद्धौ दिवारात्रौ यथाक्रमम् । ८१ । प्र.६  
 वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः ।  
 वर्गोत्तमश्वेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥८५ ॥ प्र.६  
 क्रूरैविद्धो युतो वापि पुष्पो यदि बलान्वितः ।  
 विना पाणिग्रहं सर्वं मङ्गलेष्विष्टदः सदा ॥३८ ॥ प्र.११  
 श्रवणक्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा ।  
 विजयादशमी तत्र सर्वकार्येष्वनिन्दिता ।  
 यात्रायां जयदा राज्ञां सन्धिं वापि प्रयच्छति ॥७७ ॥ प्र.११  
 अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सूतिकागरवेशनम् ।  
 मासे तु नवमे प्राप्ते पूर्वपक्षे शुभे दिने ॥  
 प्रसूतिसम्भवे काले सद्य एव प्रवेशयेत् ॥१५ ॥ प्र.१२  
 सौम्ये स्थिरे भे शुभदृष्टियुक्ते लग्नेऽथवा द्व्यङ्गगृहे विलग्ने ॥१ ॥ प्र.१३  
 यस्मिन्दर्शस्यान्तादवर्गेका परा परं दर्शम् ।  
 उल्लङ्घ्य भवति भानोः संक्रान्तिः सोऽधिभासः स्यात् ॥  
 आद्यन्तदर्शयोर्मध्ये तयोराद्यन्तयोर्यदा ।  
 'संक्रान्तिद्वितयं स्याच्चेन्द्र्यनमासः स उच्यते ॥  
 मासप्रधानाखिलमेव कर्म मुक्त्वाखिलं कर्म न कार्यमत्र ।  
 यज्ञोपवासव्रततीर्थयात्राविवाहकर्मादि विनाशमेति ॥३५/२० ॥ प्र.१/३  
 सौम्येक्षितेऽनिष्टफलः शुभदः पापवीक्षितः ।  
 निष्टलौ तौ ग्रहे स्वेन शत्रुणा चावलोकितः ।

**पीयूषधाराटीकायां प्रयोगपारिजाततः उद्धृता वसिष्ठश्लोकाः**

मास्यष्टमे च गर्भस्य कुर्याद्विष्णुबलिक्रियाम् ।  
 श्रवणे चैव रोहिण्यां पुष्ये चैव प्रशस्यते ॥  
 द्वितीया सप्तमी चैव द्वादशी च शुभा तिथिः ।  
 शुभग्रहोदयाः शस्तास्तेषां च दिवसा अपि ।  
 पापास्त्र्यायारिगाः श्रेष्ठा नेष्ठाः सर्वेऽष्टमे स्थिताः ॥१० ॥ (मु.चि. प्र.५ श्लो. १० टीका)

३.४.२ बृहत्संहिताग्रन्थ उद्धुतवसिष्ठश्लोकानां सूचिः -  
( किन्तु वसिष्ठसंहिताग्रन्थे एते श्लोका नोपलभ्यन्ते । )

भषट्कान्तरितौ राहुः सूर्याचन्द्रमसावुभौ ।  
छायात्युरगाकारो वरदानात्स्वयंभुवः ॥ अ.५ श्लो.३ टीका  
चतुरङ्गुलं वसिष्ठः कथयति नेत्रान्तकर्णयोर्विवरम् ।  
अधराङ्गुलप्रमाणस्तस्यार्थेनोत्तराष्ट्रश्च ॥ ८ ॥ अ.५८ श्लो.८  
सविद्युतः सपृष्टः सपांशूत्करमासुताः ।  
सार्कचन्द्रपरिच्छन्ना धारणाः शुभधारणाः ॥ ४ ॥ अ.२२ श्लो.४  
यदा तु विद्युतः श्रेष्ठाः शुभांशाः प्रत्युपस्थिताः ।  
तदापि सर्वसस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ५ ॥ अ.२२ श्लो.५  
सपांशुवर्षा सापश्च शुभा बालक्रिया अपि ।  
पक्षिणां सुस्वरा वाचः क्रीडा पांशुजलादिषु ॥ ६ ॥ अ.२२ श्लो.६  
रविचन्द्रपरिवेषाः स्निग्धा नात्यन्तदूषिताः ।  
वृष्टिस्तदापि विज्ञेया सर्वसस्यार्थसाधिका ॥ ७ ॥ अ.२२ श्लो.७  
मेघाः स्निग्धाः संहताश्च प्रदक्षिणगतिक्रियाः ।  
तदा स्यान्महती वृष्टिः सर्वसस्याभिवृद्धये ॥ ८ ॥ अ.२२ श्लो.८  
यदा तु बलवान्वायुरन्तरिक्षानिलाहतः ।  
पतत्याशु स निर्धातो भवेदनिलसम्भवः ॥  
तस्य योगान्निपततश्वलत्यन्याहता क्षितिः ।  
सोऽभिघातसमुथः स्यात्सनिर्धातमहीचलः ॥ अ.३२ श्लो.२

३.४.३ वृहत्संहिताग्रन्थस्य भद्रोत्पलविवृत्तिसमन्वितविमला  
हिन्दीव्याख्यायुत (पूर्वार्द्ध)ग्रन्थ उद्घृतवसिष्ठश्लोकानां सूचि: -  
(किन्तु वसिष्ठसंहिताग्रन्थे एते श्लोका नोपलभ्यन्ते ।)

जगदण्डखमध्यस्था महाभूतमयी क्षितिः ।  
भावायुसर्वसत्त्वानां वृत्तगोल इव स्थिता ॥१२ टीका ॥ अ.२  
मुखपुच्छविभक्ताङ्गभुजङ्गाकार-  
भषट्कान्तरितौ राहुः सूर्याचन्द्रमसावुभौ ।  
छादयत्युरगाकारो वरदानात्स्वयम्भुवः ॥५ टीका ॥ अ.५  
केचिद्बदन्ति कार्तिकशुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः ।  
न च तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ॥५ टीका ॥ अ. २१  
यदि ताः स्युरेकरूपाः शुभास्ततः सान्तरास्तु न शिवाय ।  
तस्करभयदाश्वोक्ताः श्लोकाश्वाप्यत्र वासिष्ठाः ॥३ ॥ अ.२२  
सविद्युतः सपृष्टतः सपांशूत्करमारुताः ।  
सार्कचन्द्रपरिच्छन्ना धारणाः शुभधारणाः ॥४ ॥ अ.२२ श्लो.४  
यदा तु विद्युतः श्रेष्ठाः शुभांशाः प्रत्युपस्थिताः ।  
तदापि सर्वसस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥५ ॥ अ.२२ श्लो.५  
सपांशुवर्षा सापश्च शुभा बालक्रिया अपि ।  
पक्षिणां सुस्वरा वाचः क्रीडा पांशुजलादिषु ॥६ ॥ अ.२२ श्लो.६  
रविचन्द्रपरिवेषाः स्निग्धा नात्यन्तदूषिताः ।  
वृष्टिस्तदापि विज्ञेया सर्वसस्यार्धसाधिका ॥७ ॥ अ.२२ श्लो.७  
मेघाः स्निग्धाः संहताश्च प्रदक्षिणगतिक्रियाः ।  
तदा स्यान्महती वृष्टिः सर्वसस्याभिवृद्धये ॥८ ॥ अ.२२ श्लो.८  
यदा तु बलवान्वायुरन्तरिक्षानिलाहतः ।  
पतत्याशु स निर्धातो भवेदनिलसम्भवः ॥  
तस्य योगान्निपततश्चलत्यन्याहता क्षितिः ।  
सोऽभिघातसमुत्थः स्यात्सनिर्धातमहीचलः ॥२ टीका ॥ अ.३२

उत्तराद्देश-

(किन्तु वसिष्ठसंहिताग्रन्थे नोपलभ्यन्ते ।)

वसिष्ठमुनिर्नेत्रान्तकर्णयोर्विवरमन्तरं चतुरङ्गुलं कथयति ॥८ टीका ॥ अ. ५८  
तथा च वसिष्ठः ।  
कर्णनेत्रान्तरं यच्च तद्विद्यात् चतुरङ्गुलम् ।

### ३.४.४ वास्तुरत्नाकरग्रन्थ उद्घृतवसिष्ठश्लोकानां सूचिः-

अकारादिषु वर्गेषु <sup>३१४</sup> दिक्षु पूर्वादितः क्रमात् ।  
गृथमार्जारसिंहाश्वसर्पाखुमृगशाशकाः ॥२४ ॥ वास्तुरत्नाकरः अ. १  
(व.सं. अ. ३९ श्लो. ४३)  
दिग्वर्गाणामिव्यं <sup>३१५</sup> योनिः स्ववर्गात्पञ्चमो रिपुः ।  
रिपुवर्गं परित्यज्य शेषवर्गाः शुभप्रदाः ॥२५ ॥ वास्तुरत्नाकरः अ. १  
(व.सं. अ. ३९ श्लो. ४४)  
साध्यवर्गं पुरः स्थाप्यं पृष्ठतः साधकं <sup>३१६</sup> न्यसेत् ।  
विभजेदष्टभिः शेषं साधकस्य घनं <sup>३१७</sup> भवेत् ॥२६ ॥ वास्तुरत्नाकरः अ. १  
(व.सं. अ. ३९ श्लो. ४५)  
व्यत्ययेनागतं शेषं साधकस्य ऋणं <sup>३१८</sup> भवेत् ।  
घनाधिकं स्वल्पमृणं सर्वसम्पत्प्रदं <sup>३१९</sup> नृणाम् ॥२७ ॥ वास्तुरत्नाकरः अ. १

- 
- ३१४ दिक्षवृष्टम् यथाक्रमम्  
३१५ मियं  
३१६ साधकस्य च ।  
३१७ स्मृतम् ।  
३१८ स्मृतम् ।  
३१९ स्मृतम् ।

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ४६)

मासे तपस्ये तपसि माधवे नभसि त्विषे।

ऊर्जे च गृहनिर्माणं पुत्रपौत्र-<sup>३२०</sup>धनप्रदम्॥१४॥ वास्तुरत्नाकरः अ.९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ४१)

नवप्रवेशे <sup>३२१</sup>त्वथ कालशुद्धिर्न द्वन्द्वसौपूर्वकयोः कदाचित्।

प्रवेशपञ्चाङ्गदिनेषु लग्ने वास्त्वर्चनं पूर्ववदेव कार्यम्<sup>३२२</sup>॥११॥ वास्तुरत्नाकरः अ. १०

(व.सं. अ. ३८ श्लो. २)

### ३.४.५ वास्तुरत्नावलीग्रन्थ उद्घृतवसिष्ठश्लोकानां सूचिः -

नीचे शत्रुगते जीवे शुक्रे <sup>३२३</sup>चन्द्रेऽथवा रवौ।

<sup>३२४</sup>निर्मितं सदनं शश्वदतिनि<sup>३२५</sup>:स्वत्वमाप्नुयात्॥अ. ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ३१)

ऐश्वर्यं पुत्रहानिश्च स्त्रीनाशो<sup>३२६</sup> निधनं भवेत्।

सम्पच्छत्रुभयं सौख्यं पुष्टिः <sup>३२७</sup>प्राच्यादितः क्रमात्॥अ.९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १८९)

ऐन्द्रज्यां <sup>३२८</sup>स्नानगृहं कार्यमाग्नेय्यां पचनालयः।

याम्यायां शयनं वेशम नैऋत्यां शस्त्रमन्दिरम्॥अ.९

---

३२० प्रवर्द्धनम्

३२१ उप्यथ

३२२ प्रवेशपञ्चाङ्गदिने सुलग्ने वास्त्वर्चनं पूर्ववदत्र कार्यम्॥

३२३ ज्ञेऽथवा रवौ

३२४ निर्मितं

३२५ निस्वत्वतां गतम्॥

३२६ हानि

३२७ प्राच्यादितः

३२८ स्नानगेह

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १६४)

वारुण्यां भोजनगृहं वायव्यां <sup>३२९</sup>धान्यमन्दिरम्।  
उदीच्यां हाटकं सद्य ऐशान्यां देवमन्दिरम्॥अ.९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १६५)

<sup>३३०</sup>इद्रागन्योर्मथनं गेहं याम्यागन्योर्धृतमन्दिरम् <sup>३३१</sup>  
यमराक्षसयोर्मध्ये पुरीषत्यागमन्दिरम्।

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १६७)

तोयेशानिलयोर्मध्ये <sup>३३२</sup>रोदनं मन्दिरं स्मृतम्॥अ.९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १६८ द्वि.पादः)

वायव्योत्तरयोर्मध्ये सम्भोगस्यैव मन्दिरम् <sup>३३३</sup>  
उत्तरेशानयोर्मध्ये त्वौषधागारमुच्यते॥<sup>३३४</sup>

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १६७)

सदनं कारयेदेवं क्रमादुक्तानि षोडशा। इति॥अ.९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १७० द्वि.पादः)

<sup>३३५</sup>इज्योत्तरात्रयाहीन्दुविष्णुभातृजलोद्घुषु।  
गुरुणा सहिते <sup>३३६</sup>धिष्णये कृतं गेहं <sup>३३७</sup>श्रियान्वितम्॥अ.९

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ३२)

हस्तार्यमात्वाष्ट्रदस्त्रचतुरास्योदुभेषु <sup>३३८</sup> च।  
सबुधे बुधवारे तु धनपुत्रसुखप्रदम्॥<sup>३३९</sup> अ.९

---

३२९ पशुमन्दिरम्

३३० एंद्रा

३३१ वतिमन्दिरम्।

३३२ शदनं रोदनं ततः।

३३३ कामोपभोगसदनं वायुकौबरमध्ययोः।

३३४ कौबेरशानयोर्मध्ये चिकित्सासदनं सदा॥

३३५ इज्यो

३३६ सहितेष्वेषु

३३७ श्रियायुम्

३३८ हस्तार्यमभत्वाष्ट्रदस्त्रचतुरास्येन्दुभेषु

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ३४)

अजपाद<sup>३४०</sup>द्वितये याम्यमित्रेन्द्रानिलभेषु च।  
समन्दे मन्दवारे च गृह्णते यक्षराक्षसैः ॥<sup>३४१</sup>

(व.सं. अ. ३९ श्लो. २९)

अपूर्वसंज्ञः प्रथमः प्रवेशो यात्रावसाने च <sup>३४२</sup>स्वपूर्वसंज्ञः ।  
<sup>३४३</sup>द्वन्द्वामयश्चाग्निभयादिजातस्त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः ॥ अ. १०

(व.सं. अ. ३८ श्लो. ३)

कृत्वा शुक्रं पृष्ठतो वामतोऽकं विप्रान्पूज्यानग्रतः पूर्णकुम्भम्।  
रम्यं हर्म्यं तोरणस्त्रिवितानैः सम्यक् स्त्रीभिर्गतवादैविशेत्तत् ॥<sup>३४४</sup>अ. १०

(व.सं. अ. ३८ श्लो. २४)

राशिकूटादिकं सर्वं दम्पत्योरिव चिन्तयेदिति ॥ अ. १०

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ५४)

वास्तुरत्नावलीग्रन्थं उद्घृतवसिष्ठश्लोकानां सूचिः -

(किन्तु वसिष्ठसंहिताग्रन्थ एते श्लोका नोपलभ्यन्ते।)

श्वेता शस्ता द्विजेन्द्राणां रक्ता भूमिर्महीभुजाम्।  
विशां पीता च शूद्राणां कृष्णान्येषां विमिश्रिता ॥ अ. १  
विस्तीर्णं समभागश्च संस्थितं परिकीर्तितम्।  
चतुरसं चतुष्कोणं समभागं विभागतः ॥  
वृत्तमेतत् समाख्यातं वास्तुलक्षणकोविदैः ।

३३९ बुधेन सहितेष्वेषु धनपुत्रसुखप्रदम् ॥

३४० द शब्दस्य लोपः

३४१ यत्कृतं शनिसंयुक्तं गृह्णते यक्षराक्षसैः ॥

३४२ सुपूर्व

३४३ द्वन्द्वाह्यस्त्वग्निभयादिजातस्त्वेवं

३४४ हर्म्यं रम्यं तोरणैः स्त्रिवितानैः स्त्रीभिः सम्यक् गीतवादैविशेत्तत् ॥

चतुभिर्विभजेत् कोणैस्तद्वास्तुवृत्तमुच्यते ॥  
 आयतं चतुरस्त्रं च मध्यकोष्ठे भवेत् फलम् ।  
 यदि वर्तुलपीताभं स्थानं भद्रासनं विदुः ॥  
 चक्रवक्रसमाकारे विजयं निम्नतोन्नतम् ।  
 निम्नता चापकृष्टा च शक्रचापस्य कीर्तिं ॥  
 त्रिकोणं शकटाकारं तद्वास्तुकृदिहोच्यते ।  
 दीर्घदण्डमिति ख्यातं पवनं पवनात्मकम् ॥  
 मुरजं मुरजाकारं बृहन्मध्यं प्रकीर्तिम् ।  
 अश्वत्थपर्णवत् कुम्भो धनुः कोणाकृतिर्धनुः ॥  
 शूर्पं शूर्पनिभं ज्येयं गृहं गणितकोविदैः । अ. १

### ३.४.६ वास्तुसौख्यग्रन्थ उद्धुतवसिष्ठश्लोकानां सूचिः -

३४५ केशास्थिकीटशुद्ध्यर्थं पुरुषत्रयमानतः ।  
 खनित्वा पूरयेत्तत्र पाषाणैः ३४६ सिकताम्बुधिः ॥८३॥ अ. ४  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ८)  
 एवं परीक्षितं क्षेत्रं ३४७ चादौ दिक्साधनं ततः ॥८४ अ.४  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ९ प्र.पादः)  
 वास्तुज्ञानं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मणा पुरा ।  
 ग्रामसद्वृक्षानां पुरादीनां निर्माणं सूक्ष्मतोऽधुना ॥६॥ भागः १  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. १)  
 षड्वर्गशुद्धिसूत्रेण सूत्रिते धरणीतले ।  
 सूत्रिते समये तस्मिन्सूत्रं केनापि लङ्घितम् ॥५६॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७३ द्वि.पादः, श्लो. ७४ प्र.पादः)

३४५ कीलकेशास्थि

३४६ पाषाण

३४७ कृत्वा

३४८ सप्त

तदास्थि ३४९ तद्विजानीयात्पुरुषस्य प्रमाणतः ।  
 अभ्यक्तो दृश्यते यस्यां दिशि शल्यं समादिशेत् ॥५७ ॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७४ द्वि.पादः, श्लो. ७५ चतुर्थपादः)  
 तस्यामेव तदास्थीनि सप्तत्यंगुलमानतः ।  
 सूत्रिते समये यत्र श्वा ३५० सद्बोपरि संस्थितः ॥५८ ॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७५ पञ्चमपादः, श्लो. ७६ प्र.पादः)  
 तदास्थि ३५१ तद्विजानीत्पृष्ठयंगुलमिते क्षितौ ।  
 ३५२ उन्मादे चागते तस्मिन्समये यत्र ३५३ संक्रिते ॥५९ ॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७६ द्वि.पादः, श्लो. ७७ प्र.पादः)  
 तदास्थि तत्र जानीयाद्वस्तद्वयमिते क्षितौ ।  
 चाण्डाले जटिले चापि यदा तस्यां दिशि ३५४ क्षितौ ॥६० ॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७७ द्वि.पादः, श्लो. ७८ प्र.पादः)  
 तदास्थि तत्र जानीयादशीत्यंगुलमानतः ।  
 नृगजाश्वपशूनां हि त्वेकस्मिन् यत्र संस्थितिः ॥६१ ॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७८ द्वि.पादः, श्लो. ७९ प्र.पादः)  
 ३५५ तदास्थि तत्र जानीत्पृष्ठयंगुलमिते क्षितौ ।  
 तस्मिन्नवसरे यत्र गृहदाहो भवेद्यदि ॥६२ ॥ भागः ३  
 (व.सं. अ. ३९ श्लो. ७९ द्वि.पादः, श्लो. ८० प्र.पादः)  
 मेषास्थि तत्र जानीयात्पुरुषा ३५६ ष्टप्रमाणतः ।  
 सूत्रे विसूत्रिते तस्मिन् भिन्ने कुम्भेऽथवा यदि ॥  
 आदिशेन्निधनं तत्र दम्पत्योः क्रमशस्तदा ॥६३ ॥ भागः ३

३४९ तत्र

३५० सूत्रो

३५१ थत्र

३५२ उच्चदेवागते

३५३ संस्थिते

३५४ स्थिते

३५५ तदास्थि

३५६ पुरुषस्य

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ८० द्वि.पादः, श्लो. ८१ प्र.पादः)

पूर्वादिदिक्षिरा<sup>३५७</sup> वामपार्श्वशायी प्रदक्षिणम्।

<sup>३५८</sup>नरवास्तुश्वरत्येष पूजनीयो गृहाधिपैः ॥८९॥भाग ४

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ५८ द्वि.पादः, श्लो. ५९ प्र. पादः )

त्रिषु त्रिषु च मासेषु नभस्यादिषु च क्रमात्।

यदिङ्ग्मुखो वास्तुनरस्तन्मुखं सदनं शुभम् ॥<sup>३५९</sup>९२॥भागः ४

(व.सं. अ. ३९ श्लो. ५९ द्वि.पादः, श्लो. ६० प्र. पादः )

गजाये वा ध्वजाये वा गजानां<sup>३६०</sup> सदनं शुभम्।

अश्वालयं ध्वजाये च खराये<sup>३६१</sup> वृषभेऽपि वा ॥१२७॥भागः ५

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १८०)

उष्ट्राणां मन्दिरं कार्यं गजाये वा वृषे ध्वजे।

पशुसद्य वृषाये वा ध्वजाये वा शुभप्रदम् ॥१२८॥भागः ५

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १८१)

शय्यासु वृषभः शस्तः पीठे सिंहः शुभप्रदम्<sup>३६२</sup> ।

अन्यत्रछत्रवस्त्राणां वृषाये<sup>३६३</sup> वा ध्वजेऽपि वा ॥१२९॥भागः ५

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १८२)

पादुकौपानहौ कार्यौ सिंहाख्येऽप्यथवा ध्वजे।

उक्तानामप्यनुक्तानां मन्दिराणां ध्वजः शुभः ॥१३०॥ भागः ५

(व.सं. अ. ३९ श्लो. १८३)

विस्तारायामगुणितं गृहस्य पदमुच्यते।

<sup>३६४</sup>तस्माद्गनाधनायर्क्षवासराख्या नवांशकाः ॥१५९॥ भागः ५

३५७ दिक्षिरो

३५८ चर

३५९ यदिङ्ग्मुखो वास्तुपुरुषः सदनं तन्मुखं शुभम्।

३६० मन्दिरं

३६१ वृषेऽपि

३६२ प्रदः

३६३ वृषभाये

(व.सं. अ. ३९ श्लो.४७ )

गृहस्यागतभं यतु<sup>३६५</sup> तद्धि राश्यात्मकं भवेत्।  
तत्रवांशवशात्तत्र ज्ञातव्यं सर्वथा<sup>३६६</sup> गृहे॥१६०॥ भागः ५

(व.सं. अ. ३९ श्लो.४८ )

गजरामांकवस्वंक-ऋतुभिरुणितात्पदात्।  
सूर्योऽष्टक्षैलांकविभक्तासवशेषकाः<sup>३६७</sup>॥१६१॥ भागः ५

(व.सं. अ. ३९ श्लो.४९ )

पश्चिमे दक्षिणे चैव गवाक्षो मन्दिरस्य च।<sup>३६८</sup>

(व.सं. अ. ३९ श्लो.२१द्वि.पादः)

स्वगृहात्पश्चिमे याम्ये पितृस्वाग्रजमन्दिरम्॥२८१॥ भागः ७

(व.सं. अ. ३९ श्लो.१८६ द्वि.पादः)

३६९ इज्योत्तरात्रयाहीन्दुविष्णुधातृजलोङ्घुषु।  
गुरुणा सहितष्वेषु कृतं गेहं श्रिया युतम्॥४३१॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३२ )

द्विदैवत्वाष्ट्रवारीश- रुद्रादितिवसूङ्घुषु।  
शुक्रयुक्तेषु तद्वारे कृतं गेहं धनप्रदम्<sup>३७०</sup>॥४३२॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३३ )

गुरौ सिते वा सौम्ये वा गृहनिर्माणलग्नगे।  
तद्वर्गे वा कृतं गेहं धनधान्यसुखप्रदम्॥४४१॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३५ )

स्वतुङ्गे गुरौ शुक्रे बुधे वा यदि लग्नगे।  
तद्वर्गे वा कृतं गेहं सर्वसम्पत्यदं सदा॥४४२॥ भागः ९

---

३६४ तस्माद्वनऋणान्यक्षी

३६५ यत्र

३६६ सर्वदा

३६७ दवशिष्टकाः

३६८ पश्चिमे दक्षिणे चापि कपाटं च शुभप्रदम्॥२१॥

३६९ इज्यो

३७० शुक्रेण सहितेष्वेषु कृतं धान्यप्रदं गृहम्॥।।

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३६ )

यत्रैकादशगे सौम्ये खेटे चन्द्रेऽथवा गुराई।

अशत्रुनीचराशौ वा <sup>३७१</sup>तदगृहं भूरिधामदम्<sup>३७२</sup> ॥४४३॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३७ )

शुभे केन्द्रे त्रिकोणस्थे शत्रुनीचांशवजिते।

सदा लाभप्रदं गेहमुच्चगे<sup>३७३</sup> भूरिलाभदम्<sup>३७४</sup> ॥४४४॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३८ )

शुभद्वये त्रयो वापि यस्मिन्निर्माणलग्नगे।

बहुकालस्थितं गेहं <sup>३७५</sup>दारपुत्रधनप्रदम् ॥४४५॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.३९ )

स्थिरराशौ<sup>३७६</sup> गते सूर्ये चरराशिगतेऽपि वा।

गृहरम्भः सदा कार्यो<sup>३७७</sup> द्विस्वभावे कदापि न ॥४४६॥ भागः ९

(व.सं. अ. ३९ श्लो.४० )

---

३७१ चेत्तदगृहं

३७२ धान्यदम्

३७३ मुच्चस्थं

३७४ भूरिधान्यदम्

३७५ पुत्रपौत्रधनप्रदम्

३७६ राशि

३७७ न कार्यो द्विस्वभावगे